दिया कहानी का सारांश यह है कि भूखे को घर से कभी भूखा मत जाने दो- मेरी दुर्गति देखो कि जन्म लेता हूं और मरता रहता हूं जन्म और मृत्यु से दूसरा बड़ा दुःख कोई नहीं है उसने उस साधु को रोटी खिलाने के पुण्य से राजा के घर में जन्म लिया उस पुण्य में से कुछ मुझे देकर ईश्वर से प्रार्थना करो कि मैं इस जन्म मरण से बच जाऊँ। कभी ऐसा न करूँगा कि जो भूखे को खाने को न दूँ राजा ने ईश्वर से प्रार्थना की और लड़के को दुख से छुड़ाया। संसार में सुख दुखों के भेद से पता चलता है कि जो जैसा करता है उसको वैसा ही फल मिलता है। इसलिये कम से कम यह व्रत लेना चाहिये कि अपने घर आये भूखे को भोजन जरूर खिलाया करो।

—o—

(कहानी नं० ११)

भाव ही कर्म का मापदण्ड है।

राजा युधिष्ठिर ने अश्व मेध यज्ञ खतम किया था राज सभा भरी हुई थी अश्वमेध यज्ञ की सब प्रशंसा कर रहे थे। और वास्तव में बहुत बड़ा यज्ञ हुआ था जैसा महाभारत के पढ़ने से पता चलता है कि यज्ञ की सफलता की यह कसौटी रक्खी गई थी कि शंख जब अपने आप बज जावे तब यज्ञ समाप्ति पर आया जानो और शंख नहीं बजा तो यज्ञ असफल समझो इसकी तलाश हुई कि यज्ञ में क्या कमी रह गई जो शंख नहीं बजता। भगवान् कृष्ण से पूछा गया कि महाराज हम तो यह जान नहीं सकते कि यज्ञ में क्या कमी रह गई। खूब विचार कर लिया हमें कोई कमी नजर नहीं आती आप योगी है योग बल से मालूम कर के बतलाइये कि यज्ञ में क्या कमी है ताकि उसको पूरा किया जाय भगवान ने योग बल से मालूम किया कि एक हरिजन को न्योता देना रह गया और उसने आकर भोजन नहीं किया यही कमी है तुरन्त अर्जुन आदि को भेजा गया और हरिजन (भंगी) को बुलाया उसने वक्त पर न्योता न देने से आने से इन्कार कर दिया तब भगवान व युधिष्ठिर दोनो हरिजन (भंगी) के पास गये और यज्ञ में चलने की प्रार्थना की मगर हरिजन ने जाने से इन्कार कर दिया राजा ने भूल स्वीकार करके क्षमा चाही भगवान कृष्ण के समझाने पर हरिजन यज्ञ में आया और भोजन किया तब शंख बजा। विचारिये राजा तक प्रजा का कैसा आदर करते थे और यज्ञ तबही सफल माना जाता था जब सब प्रजा उसमें शरीक होती थी।

राज सभा में हरिजन को न्योता न देने की चर्चा हो रही थी यज्ञ की समाप्ति की खुशी मनाई जा रही थी कि इतने में एक नेवला राज सभा में आया जिसका आधा शरीर सोने का था। नेवले ने सभा में कहा कि जगत में यज्ञ की धूम मची हुई है

ओ३म्

प्रस्तावना

बचपन से मुझे कहानी सुनने का शौक था जैसा कि प्रायः बालकों का होता है। साथ ही मैं कहानी सुनकर उसको याद भी रखता था। अपने गृहस्थ में मैंने यही सिद्धान्त रखा कि बच्चों को कहानी सुना कर शिक्षा दी जावे जिससे कि बालक मनोरंजन के साथ २ कुछ उपदेश ग्रहण कर सके।

समय समय पर इष्ट मित्रों को भी ये कथायें सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। उनका आग्रह था कि इन कथाओं का संकलन करके प्रकाशित कराया जावे जिससे कि जन साधारण को भी लाभ हो सके।

कई वर्षों से कथा संग्रह का प्रयत्न करता रहा। कोटा राज्य सेवा के समय कार्य व्यस्त रहने से इस काम को न कर सका। अचानक अस्वस्थ हो जाने व राज्य सेवा से अवसर ग्रहण करने के बाद भी बीमारी के कारण इस कार्य को यूहीं पड़ा रहने दिया।

शाहपुरा नरेश ने मुझे अपने यहाँ सेवा का अवसर प्रदान किया उस समय नियम से कहानी संग्रह का काम चला। और यह संग्रह कर सका हूं। प्रयत्न तो यह किया गया है कि बोलचाल की भाषा अर्थात् हिन्दुस्तानी मे ही यह ग्रन्थ लिखा जावे परन्तु सम्भव है कहीं कठिन शब्द आ गये हों। पाठक इस सम्बन्ध मे जो अपने सुझाव पेश करेंगे भविष्य मे यदि पुनः प्रकाशन का अवसर मिला तो उसके अनुसार अमल करने का प्रयत्न करूँगा।

यदि इस संग्रह को पढ़कर किसी भी सज्जन को लाभ पहुँचा तो मैं अपने प्रयत्न को धन्य समझूंगा। इस किताब के छपाने में मैं बाबू श्याम स्वरूप ना॰ रिटा॰ असि॰ माल का मैं ऋणि हूं जो उन्होंने इसकी छपाई में तकलीफ उठाई है।

महाराजसिंह शर्मा

लेखक –

महाराजसिंह शर्मा

रिटायर्ड असिस्टेन्ट रेवेन्यू कमिश्नर कोटा.

हाल चीफ रेवेन्यू आफिसर शाहपुरा

(राजस्थान)

स्वर्गीय पं० गोविन्दप्रसाद सा० भूतपूर्व रेवेन्यू कमिश्नर
कोटा राज्य, रईस इमलिया ज़िला बिजनौर यू पी
के सादर समर्पित जिनकी कृपा से मैं
इस योग्य हो सका हूँ ।

महाराजसिंह शर्मा

विषय सूची

॥ ओ३म् ॥

१

ईश्वर क्या करते हैं

एक राजा ने अपने मंत्री से प्रश्न किया कि ईश्वर कब हँसते है? क्या करते है और क्या खाते है? यदि तुम इन प्रश्नों का उत्तर एक माह में न दे सकोगे तो तुम को देश निकाला दे दिया जावेगा साथ ही कुल जायदाद भी जप्त करली जावेगी। जो मंत्री ईश्वर के सम्बन्ध मे कुछ नहीं जानता वह मन्त्री पद के योग्य नहीं यदि मुझे इनका उत्तर दे दिया तो यह राज पाट तुम्हारे सुपुर्द करके मै तप करने चला जाऊँगा।

जिस ईश्वर की लीलाको जीवन पर्यंत समाधि लगाने वाले व तप करने वाले ऋषि मुनि न जान सके उस प्रभु की लीला को ससार मे फँसा हुआ मंत्री क्या जान सकता था? मंत्री बड़ी चिन्ता मे पड़ गया। योगी महात्माओं की तलाश में निकल पड़ा. पहाड़व जंगल की खाक छान डाली परन्तु इन प्रश्नों का उत्तर न पासका।

अवधि समाप्त होने मे एक दिन शेष रह गया। वह एक बड़ के पेड़ के नीचे चिन्ता मे डूबा हुआ पड़ा था गर्मी का मौसम था। दोपहर के बारह बजे थे, एक किसान की स्त्री अपने पति के लिये भोजन लेजाती हुई वहां से निकली उस किसान का यह व्रत था कि जहां तक दृष्टि पहुँचे वहां तक यदि कोई व्यक्ति भूखा हो तो उसको भोजन कराकर स्वयं भोजन करे। कृषक ने अपनी पत्नी से कहा कि कोई व्यक्ति नजर तो नहीं आता? स्त्री ने जवाब दिया कि वड़ के नीचे एक मनुष्य लेटा हुआ है किसान ने कहा कि उस व्यक्ति से पूछो कि भोजन किया या नहीं? स्त्री के पूछने पर उस व्यक्ति ने उत्तर दिया कि भोजन नहीं किया और न मैं भोजन करूँगा। स्त्री ने अपने पति से जाकर जो उत्तर मिला था, वह कह दिया। तब किसान स्वयं आया और कहने लगा कि मेरी यह प्रतिज्ञा है कि भूखे मनुष्य के सामने मैं भोजन नहीं करता इसलिए आपको भोजन अवश्य करना पड़ेगा नहीं तो मैं भी भूखा रहूंगा। मन्त्री को चिन्तित देखकर किसान ने चिन्ता का कारण पूछा - मन्त्री ने कहा कि मेरी चिन्ता तुम दूर नहीं कर सकते। किसान के आग्रह पर मन्त्री ने अपनी चिन्ता का कारण बतलाया किसान ने आश्वासन दिया कि मैं इन प्रश्नों का उत्तर दे दूँगा - मन्त्री ने उसी समय उत्तर जानने चाहे, परन्तु किसान ने यह कह कर कि पहिले उत्तर बतलाने से उत्तरों का महत्व जाता रहेगा उत्तर बतलाने से इन्कार कर दिया। मन्त्री ने यह सोचा कि मुझे तो इन प्रश्नों का उत्तर आता

[illegible] यदि उस किसान ने उत्तर दे दिया तो मेरी आपत्ति टल जायगी अतः अधिक [illegible] भोजन कर लिया उसके परचात् किसान को साथ ले आया। कोई समय [illegible] भारतवर्ष में त्यागी व तपस्वी मुनि लोग खेती करके अपना गुजर करते थे।

अगले दिन दरबार भरा हजारों नर नारी प्रश्नों का उत्तर सुनने के लिये इकट्ठे [illegible] ठीक समय पर मन्त्री को बुला कर उसके प्रश्नों का उत्तर पूछा मन्त्री [illegible] असमर्थता प्रगट करते हुये उस किसान को पेश करके कहा कि वह इन प्रश्नों [illegible] उत्तर देने का दावा करता है राजा ने वही तीन प्रश्न किसान से किये। पहिले [illegible] के उत्तर में किसान ने कहा कि—

[illegible] जब जीव गर्भ में उल्टा लटकता है तब प्रभु अपनी दयालुता से [illegible] दुःखों ने [illegible] का ज्ञान कराते हैं। तब जीव प्रतिज्ञा करता है कि भगवान्! अब [illegible] निकाल दो अब कभी ऐसे कर्म नहीं करूँगा कि फिर जन्म लेना पड़े। [illegible] में ही मनुष्य की आंखें खुलती हैं उस समय सब प्रतिज्ञा कर [illegible] भूल जाता है। महात्मा गांधीजी ने [illegible] में लिखा है कि जब वह दक्षिण अफ्रीका जहाज में बैठ कर जा [illegible] जोर का तूफान आया आठ दिन तक तूफान बना रहा सब [illegible] प्रार्थना करने लगे उन आठ दिनों में ईश्वर की जैसी याद आई [illegible] नहीं आई। सूरज निकलते ही जिस प्रकार से तूफान मिट [illegible] ईश्वर भी भाग गया।

[illegible] प्रतिज्ञा पर कि भविष्य में कभी बुरे कर्म नहीं करूँगा ईश्वर [illegible] बार बार प्रतिज्ञा तोड़ देता है उस पर कोई मनुष्य [illegible] मनुष्य ने तो हजारों जन्मों में मेरे सामने इस प्रकार की [illegible] गर्भ से बाहर आते ही प्रतिज्ञा को भूल जाता है। भगवान् [illegible] क्या तूने मुझे पागल या बावला समझा है जो तेरी ऐसी प्रतिज्ञा पर [illegible] इस पर भी प्रभु कृपा करते हैं और बार बार जन्म देकर मौका देते हैं [illegible] इस आवागमन के दुःखों से छूट जावे। उत्तर बड़ा माकूल था राजा निरुत्तर [illegible]।

राजा ने दूसरे प्रश्न का उत्तर देने के लिए कहा किसान ने कहा कि [illegible] अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार राज्य मुझको सौंप कर मेरी जगह खड़े हो [illegible] सिंहासन से नीचे खड़े हो गये और किसान सिंहासन पर जा बैठा [illegible] भगवान क्षण में राजा को रंक और रंक को राजा बना देते हैं [illegible] वैसी ही बुद्धि हो जाती है तुमतो राजा से गरीब [illegible] गरीब से राजा बन गया हूं, संसार में ऐसे अनेक दृष्टान्त मिलते हैं [illegible] में चक्रवर्ती राजा जेलों में ठूँस दिये गये, कोई गोली से उड़ा दिये गये, [illegible] अभिमान करते हैं? रूस के शक्तिशाली जार का क्या हुआ?

तीसरे प्रश्न का उत्तर राजा ने मांगा किसान ने कहा कि प्रभु गम खाते हैं। संसार में जीव भगवान् के सामने न जाने कितने पाप करते है परंतु वे किसी पापी से कभी नाराज़ नहीं होते। भगवान के दिये हुये प्रकाश व हवा इत्यादि पदार्थ सबको समान रूप से प्राप्त होते है वे सबको सुख देना चाहते हैं परन्तु जीव अपने कर्मों से दुःख पाते हैं।

राजा इन उत्तरों को सुनकर जब चलने लगे तो किसान ने सिंहासन छोड़ दिया और कहा कि राजन् मैं राज्य का भार नहीं उठा सकता तुम ही राज्य करो मैं तो अपनी खेती में ही प्रसन्न हूं।

(२)

कर्म का रहस्य

पाण्डवों की सभा हो रही थी और युद्ध के होने न होने पर विचार किया जा रहा था क्यों कि युद्ध मे बड़ी हानि होती है इससे सम्पूर्ण विज्ञान और सभ्यता का नाश हो जाता है कौरव (दुर्योधन) को समझाया जावे कि गुजर के लायक हम को भी राज्य का हिस्सा कुछ दे दे ताकि युद्ध न हो। समझाने के लिये सब विद्वानों ने भगवान कृष्ण को चुना कि यह बड़े विद्वान् व योगी है यह दुर्योधन को जाकर समझावें ताकि युद्ध न हो।

भगवान कृष्ण सबकी इजाजत के बाद द्रौपदी के पास गये और कहा कि सब सभा ने मुझे चुना है कि मैं कौरवों को जाकर समझाऊं और सुलह हो जावे और युद्ध न हो कृष्ण भगवान से ज्यादा कौन बुद्धिमान व चतुर हो सकता है यह सोचकर द्रौपदी को यकीन सा हो गया कि सुलह हो जावेगी और युद्ध न होगा तथा पापियों का नाश भी न होगा। क्रोध में भरकर द्रौपदी ने कहा कि आप खुशी से जावें आप लोगों को लाज नहीं आती कि मुझे रजस्वला अवस्था मे दुश्शासन खींच कर सभा में ले गया जब कि मैं एक धोवती पहिने हुये थी फिर नंगी करने के लिये साड़ी उतारने की कोशिश की और नंगी जांघ करके बैठने को कहा। याद रक्खो। आप लोग युद्ध नहीं करेगें तो मेरा भाई भी क्षत्रिय है वह युद्ध करके इन दुष्टों का नाश करेगा। जाइये आप कोशिश कीजिये और सुलह करा दीजिये।

द्रौपदी को क्रोध मे देखकर कृष्ण बोले कि द्रौपदी तुम नाराज क्यों होती हो यह तो सम्भव हो सकता है कि सूर्य पूर्व के बजाय पश्चिम में उगे और चांद अपनी शीतलता को और अग्नि उष्णता व तेज को छोड़ दे। अनहोनी सब बातें सम्भव हो सकती हैं मगर यह असंभव है कि लडाई न हो और सुलह हो जावे मैं तुमसे

यक़ीन दिलाता हूँ कि मैं सुलह कराने में कोई कमी न रक्खूंगा और पूरी कोशिश करूँगा कि युद्ध न हो।

द्रौपदी ने कहा कि आप जब त्रिकालदर्शी हैं और आपको मालूम है कि युद्ध जरूर होगा तो अपना समय नष्ट करने आप क्यों जा रहे हैं? भगवान ने कहा कि सब मनुष्य त्रिकालदर्शी नहीं होते मैं संसार में वही काम करके बताना चाहता हूँ कि जिसको करके मनुष्य पापों से बच जावे। मनुष्य के अधिकार में सिर्फ मनको पवित्र या अपवित्र कर देना है मन पवित्र हो जाने से मनुष्य दुःखों से बच जाता है अपवित्र करने में दुःखों में पड़ा रहता है लड़ाई तो अवश्य होगी क्योंकि मनुष्य मात्र कर्मों से बंधे हुये हैं। पाप कर्मों से नाश का समय आगया मैं यह सोचकर कि लड़ाई लड़कर ये मर जावें मनको क्यों अपवित्र करूँ मनुष्य का यही कर्तव्य है कि मनको शुद्ध संकल्प वाला रक्खें। द्रौपदी को शांतकर के हस्तिनापुर पहुंचे। दुर्योधन को समझाया कि भला ईश्वरकी शक्ति से बड़ी शक्ति किसकी है ईश्वर खुद मारने को या कर्म फल देने को नहीं आते क्योंकि सर्वव्यापक हैं आना जाना एक देशीय का होता है। वे तो कर्मों के अनुकूल मनमें प्रेरणा करते रहते हैं। पांच गांव भी दुर्योधन ने देना क़बूल न किया। कृष्ण को गिरफ्तार करने की सोची युद्ध हुआ महाभारत का परिणाम भारत के सामने है सब ज्ञान विज्ञान नाश हो गये योद्धा मारे गये और देश का पतन हो गया।

आज कल के विद्वान इस कथा को मन गढ़न्त कह सकते हैं मगर सत्यता कथा में जरूर है। वह कौन शक्ति काम कर रही है? बड़े बड़े विद्वान चर्चिल, रूजवेल्ट हिटलर आदि क्यों लड़ रहे हैं? क्या ये अज्ञानी हैं? लड़ाई के दुष्ट परिणामों को नहीं समझते हैं? नहीं जरूर समझते हैं पर कर्म फल - भोगने के लिये यह सब खेल हो रहे हैं इससे अच्छा सबूत क्या हो सकता है कि इटली ने एबीसीनिया पर चढ़ाई करदी गैसें छोड़ कर कैसे कैसे अत्याचार किये। मुसोलनी नहीं जानता था कि ईश्वर सृष्टिकरता है उसके पापों का फल मिलेगा, कैसी बुद्धि बिगाड़ी कि अपने देश का नाश किया। ये इतने बड़े बड़े विद्वान् देश भक्ति मे रंगे हुये यह नाशकारी लड़ाई लड़ रहे हैं। उत्तर इसके सिवाय क्या हो सकता है कि कर्म फल सब खेल दिखा रहे हैं। सारांश कहानी का यह है कि मनुष्य मन को शुद्ध करने का यत्न करता रहे और कभी किसी को दुःख पहुँचाने का विचार तक न करे।

(३)

होनहार होकर रहती है।

राजा जन्मेजय भारतवर्ष मे महाभारत के बाद राज्य कर रहे थे, व्यास जी महाराज घूमते हुए वहां आगये राजा ने व्यास जी से कहा कि आप जैसे योगी व भीष्म जी व द्रोणचायजी जैसे महानुभावों की उपस्थिति मे जुआ खेला गया और द्रौपदी तक को दाव पर लगा दिया गया कितनी लज्जा की बात है व्यास जी ने उत्तर दिया कि राजन् होनहार होकर ही रहती है जैसा होना होता है वैसी ही सब बातें हो जाती है।

राजा ने कहा कि मैं इस बात को नहीं मानता मनुष्य पाप करते है और फल को होनहार कह देते है। यदि आप चाहते तो इन घटनाओं को रोक सकते थे कर्म करना मनुष्य के हाथ मे है यदि जुआ न होता तो महाभारत होकर संसार का नाश न होता।

व्यास जी ने योग दृष्टि से जानकर कहा कि राजन् तुम्हारा कथन ठीक नहीं किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि,

'जैसी हो भवितव्यता तैसी उपजे बुद्धि।
होन हार हृदय बसे बिसर जाय सब सुध'॥

राजन् तुम्हारे द्वारा ब्रह्म हत्या होगी और उसके प्रायश्चित के लिये १२ वर्ष वन में रहना होगा मैं अभी से तुम्हें चेता देता हूँ कि यह बाते मत करना।

नं० १— यज्ञ के लिये सफेद घोड़ा मत खरीदना।
नं० २— यदि घोड़ा खरीद भी लो तो सवारी मत करना।
नं० ३— यदि सवारी भी करो तो पूर्व दिशा मे मत जाना।
नं० ४— यदि पूर्व दिशा मे चले भी जाओ तो जो भी मिले उसे साथ मत लाना।
नं० ५— यदि साथ भी ले आओ तो उससे विवाह मत करना।
नं० ६— यदि विवाह भी करलो तो उसे पटरानी मत बनाना।
नं० ७— यदि पटरानी भी बनालो तो उसके साथ यज्ञ मत करना
नं० ८— यदि उसके साथ यज्ञ भी करो तो यज्ञ करते समय ऋषियों को बुलाना। लड़कों के साथ यज्ञ मत करना।
नं० ९— यदि यज्ञ करता लड़के हों तो उन पर क्रोध न करना।
यह सब बातें होंगी और क्रोध वश तुम लड़के का शिर काटोगे तथा ब्रह्म हत्या का दुख तुमको भोगना पड़ेगा।

राजा ने कहा कि इतनी बातें बतला देने पर भी यदि ऊपर लिखे नौ कर्म मैं करूं तो मेरे बराबर कौन मूर्ख होगा। मैं आजही से हुक्म दिये देता हूं कि मेरे राज्य में आज से यज्ञ में सफेद घोड़ा नहीं आवे और न अश्वमेध यज्ञ किये जावें। जब अश्वमेध यज्ञ न होगा और सफेद घोड़ा न आवेगा तो शेष बातें कैसे सम्भव हो सकेंगी।

व्यास जी ने कहा कि कर्म फल अटल है ईश्वर के नियमों को कोई टाल नहीं सकता मैंने जो बातें बतलाई हैं वह सब होकर रहेंगी। यह कह कर व्यास जी महाराज चल दिये।

कुछ समय बाद राज्य में अनावृष्टि के कारण अकाल पड़ा राजा ने अपने निश्चय के अनुसार अश्वमेध यज्ञ नहीं किया। प्रजा ने पुकार की कि यदि यज्ञ न किया गया तो देश का नाश हो जायगा प्रजा की मांग उचित होने से अश्वमेध यज्ञ करने का निश्चय हुआ। यज्ञ के लिये सफेद घोड़े का होना आवश्यक था। इसलिये सफेद घोड़ा खरीदा गया। यज्ञ हुआ वर्षा हुई प्रजा सुखी हुई।

समय बातों को भुला देता है और यदि भुलाता नहीं तो कम से कम बातों के प्रभाव को कमकर देता है यद्यपि राजा को सब बातें याद थीं परन्तु घोड़े की चाल बहुत अच्छी थी प्रति दिन राजा से उसकी प्रशंसा होती थी विद्वानों ने कहा कि ऐसे घोडे पर सवारी जरूर होनी चाहिये आप सवार होकर पूर्व दिशा को न जावे। राजा ने सोचा कि सात बाते अभी शेष है इसलिये सवारी करने में हर्ज भी क्या है राजा ने सवारी की।

कुछ समय पीछे चोरों ने गायों को पूर्व दिशा की ओर घेर लिया। राजा को सूचना दी गई। उस समय राजा गऊ की रक्षा करना अपना धर्म समझते थे उस तेज सफेद घोड़े के अतिरिक्त दूसरी सवारी से राजा जल्दी नहीं पहुँच सकते थे। लाचार हो उसी सफेद घोडे पर बैठ कर राजा पूर्व दिशा को गये और राजा ने चोरों से गायों को छुडा लिया। वापसी पर रास्ते में एक सोलह वर्ष की सुन्दरी कन्या मिली और उसने कहा कि मैं रास्ता भूल गई हूँ आप मुझे अपने घर ले चलो। राजा ने व्यासजी की बाते सुना कर साथ ले जाने से इन्कार कर दिया। कन्या ने कहा कि आप सूर्यवन्शी हैं स्त्रीजाति की रक्षा करना आपका कर्त्तव्य है। यदि मुझे साथ न ले चलोगे तो मैं शाप दे दूँगी राजा शाप से डर कर कन्या को अपने साथ ले आया।

कन्या अपूर्व सुन्दरी थी राजा उस पर आसक्त हो गया उसके मन में विचार पैदा हुआ कि यह लडकी जबर्दस्ती साथ आई है यदि उसकी इच्छा हो तो शादी कर लेने में क्या हर्ज़ है। कन्या से पूछा तो वह भी विवाह से सहमत थी कर्म फल लीला रच रहे थे दोनों का विवाह हो गया। राजा ने मन में विचारा कि इसे पटरानी नहीं बनाऊंगा जिससे आगे दुर्घटना न हो।

रानी जितनी सुन्दरी थी उतनी ही विदुषी थी राजा उसके मोह में फँसे हुये थे अपनी बुद्धिमाना से रानी ने पटरानी का पद प्राप्त कर लिया।

दुर्भाग्य से देश मे फिर अकाल पड़ा प्रजा की इच्छानुसार राजा को यज्ञ करने के लिये बाध्य होना पड़ा। विना अर्धाङ्गिनी के यज्ञ सफल नहीं हो सकता इसलिये पटरानी ने यज्ञ मे साथ बैठने की जिद की जो उचित होने से राजा को माननी पड़ी। राजा ने पूरा प्रयत्न किया कि यज्ञ कर्ता वृद्ध ब्राह्मण बुलाये जावें। यज्ञ का समय निश्चित था पुराने यज्ञ कर्ता दूसरी जगह यज्ञ कराने गये हुये थे। इसलिये बाध्य होकर युवक यज्ञ कर्ताओं को ही बुलाना पड़ा राजा को व्यास जी की सब बातें याद थी एक दिन यज्ञ करते करते एक युवक यज्ञ कर्ता प्रजा रानीको देखकर हँस पड़ा राजाको एक दम क्रोध आगया क्रोध में मनुष्य का ज्ञान लुप्तहो जाता है वह कर्तव्य - अकर्तव्य को समझ नहीं सकता क्रोधावेश मे राजा ने उस लड़के का शिर काट दिया।

प्राचीन समय में मृत्यु दण्ड नही था मनुष्य के मारने वाले को मृतक की खोपड़ी गले में डालकर बारह वर्ष तक जंगलों में रहना पड़ता था उसी के अनुसार राजा बारह वर्षों तक जङ्गलों में रहे और कष्ट भोगा। एक दिन घूमते हुये व्यास जी आगये और उनने पूछा कहो राजन क्या होनहार - टल सकती है। राजा लज्जित हुआ और चुप रहा। होनहार कभी नहीं टलती। तब ही तो चेम्बरलेन आदि राजनीतिज्ञों के प्रयत्न करने पर भी महा-भयंकर नाशकारी, संसार व्यापी महायुद्ध न रुक सका और कर्म फल स्वरूप उसके परिणामों को हम सब भोग रहे है।

---

(४)

ईश्वर लीला की विचित्रता

भगवान ने एक दूत को एक स्त्री का जीव निकालने का हुक्म दिया जब दूत स्त्री के पास पहुंचा तो क्या देखता है कि तीन बच्चे पाँच साल से कम उम्र के खेल रहे है पिता उनका कब मर चुका था माता प्लेग के बुखार में बेहोश पड़ी है. दो पांच सात दिन के दोनों स्तनों को पी रहे है। दूतने मालूम किया कि यह तीन बच्चे भी उसी स्त्री के है. उसने विचारा कि ईश्वर कितना निर्दयी है यदि यह माता मर जावेगी तो इन बच्चो को कौन पालेगा? यह सोच कर विना आत्मा निकाले वह दूत ईश्वर के सामने चला गया। भगवान के पूछने पर कि क्या वह जीव ले आया तो उसने ऊपर का कारण सुना कर कहा कि मुझसे यह निर्दयता का काम नहीं हो सकता इस पर दूत को गिरफ्तार करने का हुक्म दिया कि दूत का काम हुक्म को तामील करना है न कि उसमे तर्क वितर्क करने का। दूत को भेजा गया वह फौरन

बच्चों को बिलखता हुआ छोड़ कर उस स्त्री का जीव ले आया। बाद में पहिले दूत का मुकद्दमा पेश हुआ उसका यह बड़ा अपराध माना गया कि उसने तामील हुक्म न की जंग में अगर फौज यह सोचने लगे कि बम्ब के गिरने से कितने मनुष्य बच्चे मर जावेंगे तो लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती और राज प्रबन्ध बिगड़ जावे उस दूत के लिये यह हुक्म हुआ कि नंगा करके बड़े शहर में पटक दिया जावे दूत स्वर्ग से कलकत्ते जैसे बड़े शहर में डाल दिया गया शहरों मे हजारों दुखिया पड़े रहते हैं उनको प्रतिदिन देखने से मनुष्यों की करुणा वृत्ति कम हो जाती है दो दिन तक नग्नावस्था मे ठंड में दूत खड़ा रहा। किसी ने बात तक नहीं पूछी। एक मोची उधर से निकला उसने ठिठरते हुये दूत को देखकर अपनी दोहर उसको देदी दोहर ओढ़कर उसने हाथ से इशारा किया कि वह भूखा है मोची उसको घर ले आया घरवाली लड़ने लगी कि अपना तो कुटुम्ब पहिले ही बड़ा है एक को और ले आये। मोची ने अपनी हिस्से की आधी रोटी दे देने को कहा उस रोज रोटी मिल गई अब रोज रोटी पर मोची व उसकी स्त्री की लड़ाई होती थी चार पांच दिन पीछे मोची जूता बनाते बनाते किसी काम को चला गया उस अनबोला (जो बोलता नहीं था इशारा करता था) ने फोरन उस मोची से भी अच्छा जूता तय्यार करदिया उसको कारीगर और कमाऊ समझकर सब घरवाले उसकी खातिर करने लगे। वास्तव में मुफ्त तो पिता अपने लड़कों को और लड़के अपने पिता को खाना देना पसन्द नहीं करते कुछ पुत्र नेक भी होते हैं जो माता पिता की सेवा करते हैं मगर आम बात यही है जैसे ऊपर कहा गया। अब वह खूब कमाई करने लगा और सब घर वालों का प्यारा हो गया वही औरत जो उसको रोटी देने पर लड़ती थी खूब प्यार से खाना खिलाने लगी सच है ससार स्वार्थ से भरा हुआ है।

एक दिन एक साहूकार मोची के पास आया कि चार बजे तक उम्दा जूते तैयार करदो कीमत चाहे जितनी ले लेना। उसने अनबोला से कहा कि मैंतो इतनी जल्दी जूते नहीं बना सकता यदि तुम बनादो तो साई ले लूं वायदे पर न बनाने पर दो सौ रुपये देने होंगे। अनबोला ने मजूर कर लिया चार बजे का वक्त मुकर्रर था। साढ़े तीन बजे मोची ने जूते मांगे उसने बजाय बूंट के सलीपर लाकर रख दिये मोची बहुत नाराज हुआ इतने मे सेठ जी का आदमी आया कि सेठ जी मर गये सलीपर की ही जरूरत है कीमत ठहरी हुई मोची को दी वह स्लीपर लेकर चला गया इससे मोची को यह पता लगा कि यह अनबोला यातो महात्मा है जो आगे की बात जान जाता है या कोई मन्त्र सिद्ध है उस रोज से उसका मान और बढ़गया कुछ समय के बाद एक मोटर से एक बुढ़िया के साथ दो बच्चे उतरे बुढ़िया ने उनके पैरों का नाप देकर जूते बनाने का आडर दिया क्यों कि अनबोला की वजह से यह मोची मशहूर हो गया था।

अनबोला लड़कियो को देखकर बोल पड़ा कि इन दोनों बच्चियों की मां मोजूद है या नहीं बुढ़िया ने कहा कि यह मेरी दोहती ह यह पांच भाई बहन हैं इनकी मां पांच सात दिन की छोड़कर मर गई थी यह जोड़ली पैदा हुई थीं अब दूत ने बच्चियों को

पहिचान लिया बुढ़िया ने कहा कि मुझे पता लगने पर कि इनके माता पिता मर गये मैं इन बच्चों को अपने साथ ले आई यद्यपि मेरी आर्थिक स्थिति खराब थी तथापि भगवान की दया से जब से यह बच्चे मेरे घर आये माया भरती चली गई। आज ईश्वर की कृपा से सब सुख इन बच्चों के भाग्य से मौजूद है। यह सुन कर दूत ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कि भगवन्! आपकी महिमा अपरम्पार है, तभी तो आप पैदा होने से पहिले मां के स्तनों मे दूध पैदा कर देते हैं। मैं अज्ञानी होने के कारण इनकी मां का जीव न लेगया सब अपने कर्मों के अनुसार दुःख सुख पाते है। पालन करने वाला तो परमात्मा है।

उस दिन से ही दूत शहर छोड़ कर जङ्गल में चला गया और तप करके ईश्वर से अपने अपराध की क्षमा चाही।

---

(५)

ईश्वर जो करता है अच्छा ही करता है।

एक राजा आखेट खेलने गया मन्त्री साथ था रास्ते मे गोली चलाते समय बन्दूक की नाल फट गई राजा की तीन अंगुलिया कट कर गिर गईं। मंत्री धर्मात्मा था, उसने खुशामद की बातें न करके कहा कि ईश्वर जो करते हैं वह अच्छा ही करते है।

राजाओं के पास लोग खुशामदी रहते हैं और हर बात मे उनकी बात का समर्थन कर दिया करते हैं। उनका उद्देश्य राजा को खुश करना होता है. राजा की भलाई से सम्बन्ध नहीं रखते। राजा को यह बात सुनकर यह ख्याल हो गया कि मन्त्री मेरा हितैषी नहीं राजा ने अपने राज से मंत्री को निकाल दिया। पांच सात साल बाद राजा फिर आखेट गया और शिकार के पीछे पीछे भागता हुआ अकेला जङ्गल मे निकल गया दूर जाकर रास्ते की तलाश करने लगा। किसी देश का राजा बहुत बीमार था बचने की कोई आशा नहीं थी एक पण्डित ने कहा कि दूसरे राज का कोई राजा या मन्त्री मिल जावे तो उसे देवी के भेंट चढ़ा दिया जावे तो भगवान इसे छोड़ देंगे। फौज तलाश मे निकल पड़ी। यह राजा जङ्गल में भटक रहा था, फौज वालों ने पूछा कि तुम कौन हो। इसने यह समझ कर कि राजा बतलाने से मेरी ज्यादा सेवा होगी उसने सच्चा पता बता दिया दूसरे देश का राजा मिल जाने से सब लोग खुश होगये और राजा को पकड़ कर ले

आये और लोगों के पूछने पर बतला दिया कि कल सुबह तुम को देवी की भेंट चढ़ा दिया जावेगा। राजा ने छोड़ देने की बहुत कुछ खुशामद की मगर किसी ने नहीं सुनी अगले दिन प्रातःकाल आठ बजे देवी को भेंट चढ़ाने का समय आया। राजा को सजाकर देवी के सामने ले गये। देवी की भेंट अङ्गहीन जीव नहीं चढ़ते। देखने पर मालूम हुआ कि तीन अंगुलियां नहीं हैं। सब की खुशी चिंता में बदल गई और राजा को छोड़ना पड़ा। राजा जान बचाकर घर आया। तब उस को यह पता लग गया कि ईश्वर जो करते हैं अच्छा ही करते हैं; मगर विचार पैदा हुआ कि मन्त्री को मैंने बेकसूर देश निकाला दिया उसके साथ ईश्वर ने क्या अच्छा किया मन्त्री की तलाश हुई बहुत खोज के बाद मंत्री मिल गये और राजा के पास लाये गये राजा ने मंत्री जी से कहा कि मेरी तीन अंगुलियां कटने के समय आप ने सच कहा था कि जो ईश्वर करते हैं सब अच्छा ही करते हैं। अज्ञान की वजह से हम को मालूम नहीं पड़ता अगर उस रोज़ मेरी नाल फटने से अंगुलियां न कट जाती तो मैं देवी की भेंट चढ़ जाता। ईश्वर जानता था कि मुझ पर यह आपत्ति आने वाली है। उसने रक्षा का पहिले ही इन्तज़ाम कर दिया। मगर मेरी समझ में यह नहीं आया कि मंत्री तुम्हारे साथ ईश्वर ने क्या अच्छा किया जो इतने अर्से तक दर दर मारे २ फिरे और इतना दुःख पाया। मन्त्री ने कहा कि मेरे साथ तो भगवान ने बहुत अच्छा किया अगर आप मुझे न निकालते तो मैं आप के साथ रहता ही था, मैं भी पकड़ा जाता। आप तो अंग हीन होने से बलिदान से बच जाते और मैं देवी के भेंट चढ़ जाता। भगवान ने मेरी जान बचादी।

सारांश कहानी का यह है कि ऐसे उदाहरण बहुत मिलते हैं कि ईश्वर दुःखों से रक्षा करते हैं। यद्यपि दुःख के समय उसका पता नहीं लगता।

---

(६)

मूल्यवान आयु का अपव्यय न करो
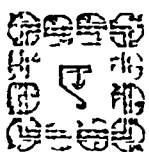
एक समय एक राजा शिकार खेलने गये एक जानवर के पीछे घोड़ा दौड़ाया और पीछे जाते हुये घोर जंगल में पहुँच गये जानवर कहीं जंगल में छिप गया था खैर लौटते समय रास्ता भूल गये भूख और प्यास से व्याकुल हो आस पास पानी की तलाश करने लगे तो एक लकड़हारा, जो झाड़ी काट कर और कोयले करके बेचता था राजा को मिला राजा ने उससे पानी की मांग की लकड़हारे ने राजा को ठंडा पानी

पिलाया तब राजा ने कहा कि मैं भूख से भी बड़ा व्याकुल हो रहा हूँ जरा कुछ खाने को हो तो दो। लकड़हारे ने कहा कि आप बड़े आदमी मालूम होते हैं मेरे पास तो बाजरे की सूखी रोटी पड़ी है अगर आप खा सकें तो लादूं राजा ने कहा कि जो भी तुम्हारे पास हो इस वक्त वही मुझे खाने को दे दो। लकड़हारे ने सूखी रोटी बाजरे की लाकर दे दी राजा भूख में उस सूखी रोटी को खा गया और लकड़हारे की बड़ी तारीफ की और कहा कि मुझे रोटी मे बड़ा स्वाद आया।

वास्तव में भूख में गूलर भी पकवान जैसा स्वादिष्ट लगता है जब भूख नहीं होती तो बड़े स्वादिष्ट पदार्थ भी अच्छे नहीं लगते राजाने लकड़ हारे को धन्यवाद दिया और अपना पता एक कागज़ पर लिख कर दे दिया कि इस पते पर तुम मुझ से ज़रूर मिलना तुमने मेरी इस वक्त मदद की है उसका मैं ऋणी हो गया जब तुम मेरे पास आओगे मुझसे जो सेवा हो सकेगी करूंगा।

कुछ दिनों के बाद लकड़हारा शहर में आया और एक पढ़े लिखे आदमी से उस कागज को पढ़वाया तब लकड़ हारे को मालूम हुआ कि वह तो मेरे राजा हैं बड़ा खुश हुआ और वह पर्चा राजा के पास पहुंचाया जो उसे दे गया था बादशाह ने उस लकड़ हारे को बुलाकर बड़ी खातिर की और लाखों रुपये का चंदन का बाग इनाम में दिया और समझाया कि बेश कमती बाग तुम्हे दे रहा हूं लकड़ हारे ने धन्यवाद दिया और चन्दन के बाग में रहने लगा। मगर मूर्ख ने चन्दन के पेड़ की कीमत नहीं जानी और चंदन के पेड काट काट कर कोयले करके बेचना शुरू किया पद्रह बीस साल के बाद बादशाह को ख्याल हुआ कि अब तो लकड़हारा बहुत मालदार हो गया होगा चलो उसे देखे कि क्या हाल है जब लकड़हारे के पास पहुंचे तो देखा कि दस पन्द्रह बीघे का बाग बचा है बाकी सब बाग को काट काट करके कोयले करके बेच दिये राजा को दुःख हुआ कि मूर्ख ने चन्दन के बाग को बरबाद कर दिया इससे तो मुझे इसको धोंकड़ आदि का जङ्गल देना चाहिये था। कि जिसका कोयला अच्छा बनता राजा ने लकडहारे से पूछा कि क्या हाल है लकड़हारे ने राजा को धन्यवाद दिया और कहा कि दस पन्द्रह बीघे का बाग रह गया है और बाग मिल जावे तो उसके कोयले करके गुजर करलूं और बाकी उमर पूरी करदूं। राजा ने कहा भाई चन्दन का बाग बार बार नहीं मिला करता तूने इसकी कदर नहीं की और कोयले करके दौलत लुटादी, जो उस पेड़ के गुरे को बेच देख? उसे जब बेचने गया तो ५) मे बिका तब उसका चंदन के पेड़ की कीमत का पता लगा और रोने लगा कि मैंने अपना धन लुटा दिया चाहे चालीस पचास बीघे का ही बाग मिल जावे तो इससे मेरी उम्र कट जावेगी राजा ने कहा कि तूने मेरा सत्कार किया और अपना कर्तव्य पालन किया उसका फल मिल गया चंदन का बाग तो और नहीं मिलेगा जो पेड़ कटने से बच गये इनके कोयले न करना और ज़रूरत के मुताबिक बेच दिया करना। मालदार तो नहीं होगा मगर गुजर हो जावेगा

[illegible] ने ऐसा ही किया धनवान तो नहीं हुआ बाकी उम्र अच्छी तरह [illegible]।

[illegible] कहानी से शिक्षा मिलती है कि हम लोगों के किसी शुभ कर्म के [illegible] से मनुष्य जन्म रूपी चन्दन का बाग मिला था जिस तरह अज्ञान से लकड़हारे ने चन्दन के पेड़ों को काट काट कर कोयले कर दिये हमने भी सांस रूपी चन्दन के [illegible] को काट काट कर कोयले कर दिये यानी अपनी उमर को व्यर्थ ही पाप कर्मों में [illegible] मनुष्य जन्म बार बार मिलना कठिन है जब तक कि शुभ कर्म न किये [illegible] विचारो कि यह श्वास कितने कीमती हैं कि बादशाह अपनी एक दिन [illegible] के बदले में बादशाही देकर लेना चाहे तो नहीं ले सकते। सब पदार्थ खरीदे जा सकते हैं मगर उमर नहीं खरीदी जा सकती अगर खरीदी जा सकती तो धनवान तो कभी नहीं मरते जिंदगी रतन जवाहरात देकर खरीद लेते। राजाओं के पुत्र जवानी में नहीं मरते वह उमर को खरीद लिया करते मगर राजाओं के पुत्र भी जवानी में मारे जाते हैं। भाइयो! जितनी उमर के कोयले कर लिये वह तो गई, जो [illegible] है इस उमर के कोयले न करो। और शुभ कर्म करके मनुष्य जन्म को सफल [illegible] मरना मृत्यु के समय बहुत पछताओगे किसी को दुःख मत दो जो जैसा बीज [illegible] फल उसको मिलता नजर आता है यदि तुम दुःख का बीज नहीं बोओगे [illegible] दुःख बिलकुल नजर नहीं आवेगा। कहानी को बार बार विचारो और अपने [illegible] शुभ कर्मों में लगादो। बस यही इसका रहस्य है।

———

(७)

जैसा बोओगे वैसा काटोगे।

एक धनाढ्य सेठ जी बहुत कन्जूस थे। धन बहुत था जब उसके पुत्र की वधू जो [illegible] जी. आई तो उसने देखा कि इस घर में दान पुण्य कुछ नहीं होता, पिछली कमाई [illegible] खा रहे हैं, अगले जन्म में दुख पावेंगे। मौके के इन्तजार में थी। बहू होने के कारण [illegible] ससुर से कुछ कह नहीं सकती थी, पतिदेव कुछ कमाते नहीं थे इत्तफाक से एक साधु भिक्षा मांगने आगये। बहू ने कहा कि महाराज इस घर में सब बासी रोटी खाते हैं, यहां आपको कोई आशा नहीं करनी चाहिए कि कोई भिक्षा देगा। साधु यह सुन कर चला गया, सेठ साहब सुन रहे थे उन्होंने अपनी स्त्री को बुलाया कि क्या तुम [illegible] को बासी खाने को देती हो आज वह एक साधू से कह रही थी कि इस घर में

सब.वासी रोटी खाते हैं। क्या तुम बहू के साथ अपनी कन्या जैसा व्यवहार नहीं करती? यह बुराई की बात है तुम्हारी लड़की जब दूसरे के घर जावेगी और यदि वह वासी रोटी खावे तो कितना दुःख उसको होगा और सुनने पर हम को भी। सेठानी जी ने कहा बिल-कुल गलत है हमारे घर मे कोई भी वासी रोटी नहीं खाता मै मालुम करती हूं कि बहू ने साधु से कैसे कहा कि इस घर में सब वासी रोटी खात है।

बहू ने हाथ जोड़ कर कहा कि माताजी मेरा मतलब इन रोटियों से नहीं था जो रोज दोनों समय बनती है बल्कि मेरा मतलब था कि जो पहिले जनम में शुभ कर्म किये उनको भोग रहे है, आइंदा के लिये दान पुण्य नहीं कर रहे है तो यह वासी रोटी के समान है कोई मनुष्य बहुत सी रोटी बना कर रख ले और उसी में से खाता रहे आगे को रोटी बनावे नहीं तो उसे वासी ही कहा जावेगा। सेठानी जी इतनी बुद्धिमान कहां थीं जो बहू की बात को समझ जाती। उसने कहा कि नहीं किसी दूसरे मनुष्य के सामने ऐसी बात नहीं कहनी चाहिये कि घर वाले वासी रोटी खाते हैं। अपने घर की लोक हंसाई होती है। सेठजी बुद्धिमान थे वह सब बातें सुन रहे थे उन्होंने सोचा कि बहू सच कहती है कि हम लोग पहिले के ही शुभ कर्मों को भोग रहे हैं। अगले जनम के लिये दान पुण्य नहीं करते रहे हैं वह वासी रोटी के समान ही है। वासी रोटी जिस प्रकार नहीं खानी चाहिए इसी प्रकार आगे को दान पुण्य करके पिछले भोगों को खाते रहना ठीक नहीं। सेठ जी ने कहा कि बहू सच कहती है आयन्दा से अपने घर से कोई भूखा नहीं जाना चाहिये। बहू से कहो कि जो अपने घर आवे उसे चने की रोटी खिलाया करे। सेठजी की आदत कंजूसी की थी। स्वभाव एक दम नहीं बदलता इससे चने की रोटी खाने की आज्ञा दी बहू खुश हुई कि दान पुन्य तो शुरू हो गया।

कुछ अर्से बाद दिवाली का त्यौहार आया। दिवाली पर उत्तम भोजन बने सब के थाल भोजनों से भरे हुये थे जब थाल सेठजी के सामने आया, उसमें चने की रोटी नमक आया। सेठजी थाल को देखकर अप्रसन्न हो गये कि मैं लाखों रुपया कमाता हूँ, आज त्यौहार के दिन मुझको चने की रोटी नमक के साथ कैसे परोसी गई? सेठानी को बुलाकर इसका कारण पूछा। उसने कहा कि बहू से दरयाफ्त करती हूं क्योंकि भोजन वही परोस रही है। बहू से कारण पूछा कि क्यों बहू! त्यौहार के दिन तुमने सेठजी को नमक व चने की रोटी क्यों दी? बहू ने कहा कि माताजी आप पहले यह बतलाईं कि आप सेठजी को दुख देना चाहती हैं या सुख। सेठानी जी ने कहा कि बहू स्त्रियों में ऐसी कौन अभागी होगी जो अपने पति को सुख देना न चाहती हो अभागिन स्त्रियां ही पति को दुःख दिया करती हैं। मैं सेठजी को कैसे दुख देना चाहूंगी? इस पर बहू जी ने कहा कि माता जी ईश्वर तो संसार में यह शिक्षा दे रहे है कि जो जैसा बीज जमीन मे डालता है उसको वैसा ही फल मिलता है, चने बोने वाला चना: गेहूं बोने वाला गेहूं काटता है आम नारंगी अमरूद बोने वाले आम नारङ्गी अमरूद के फल खाते है। उस प्रभु ने दया

करके सब ज्ञान मनुष्यों को प्रत्यक्ष कर के बतला दिया। इस पर कोई उससे लाभ न उठावे तो इस में भगवान का क्या दोष। जिस प्रकार माता पिता अपनी सन्तान को सुख देते हैं, वे यही चाहते है कि उनकी सन्तान सुखी रहे ऐसे ही ईश्वर चाहते हैं कि सब जीव सुखी रहें प्रति दिन परमात्मा शिक्षा दे रहे हैं कि जैसा बोओगे वैसा ही फल मिलेगा। सेठजी चने की रोटी व नमक दान कर रहे है अगले जन्म में सृष्टि नियम के अनुकूल सेठजी का नमक व चने की रोटी मिलेगी। मैं चाहती हूं कि सेठजी आगे दुःख न पावे और चने की रोटी और नमक खाने की आदत डाल लें वरना अब तो महान सुख पिछले शुभ कर्मों से मिल रहे हैं उत्तम भोजन के बाद जब चने की रोटी मिलेगी तो पिताजी कष्ट पावेंगे इसलिये मैं चाहती हूं कि अभी से ही चने की रोटी खाने का स्वभाव डाल लें ताकि दुःख अनुभव न हो सेठानी जी इस रहस्य को फिर न समझी. मगर सेठजी बुद्धि मान थे समझ गये उन्होंने कहा कि देवी तू धन्य है तेरी जैसी देवी जब संसार में होंगी तब ही देश की उन्नति होगी। तूने सच कहा कि जो जैसा बोता है वैसा काटता है। मैं चने की रोटी दे रहा था अगर आज तू शिक्षा न देती तो अगले जनम में अवश्य दुःख पाता। उसी दिन से उस घर मे खूब दान पुन्य होने लगा। सच है कि जिस घर में सती देवी होती हैं। वही घर सुखी होता है आप ऐसी कृपा करें कि इस भारत में ऐसी ही देवियां पैदा हों जिससे प्रत्येक घर स्वर्ग बन जाय।

---

(८)

नेक कमाई ख़राब कामों में खर्च नहीं होती।

एक साधू बड़े त्यागी महात्मा थे वे टोपी सींकर अपना गुजर करते थे टोपी की सिलाई के दो पैसे लेते थे और उस दो पैसे में से एक पैसा दान करदेते थे। वे एक पैसे में अपना गुजर करते थे दूसरी टोपी तब सीते जब एक पैसा खर्च हो जाता था गांव वाले साधु जी का एक पैसा खर्च हो जाने पर कपड़ा टोपी के लिये सीने को दे आते थे साधू बड़े सन्त व विद्वान थे, भजन के बाद थोड़ा सा उपदेश लोगों को दिया करते थे इससे गांव वाले आजाया करते थे एक दिन एक धनाढ्य सज्जन ने पूछा कि महाराज दान किसको देना चाहिये साधु ने कहा कि देश काल और पात्र के अनुसार दान देना चाहिये यानी यतीम बच्चों का पालन पोषण करो, अपाहिज जो कमा नहीं सकते उनको खाना कपड़ा दो, जहां पानी की कमी हो मवेशियों को खेल और आदमियों के लिये प्याऊ बैठाओ, गरीबों को जूते पहिनाओ, बीमारों को

दवा और ठंड में निर्धनों को कपड़ा बांटो। यदि बिना फल की इच्छा के दोगे तो सात्विक दान होगा, फल की इच्छा से राजस और अनादर वगैरा से दान करोगे तो तामस होगा। किसी तरह भी हो दान प्रत्येक मनुष्य को देना चाहिये।

इस धनाढ्य मनुष्य ने, यह उपदेश सुनकर एक अन्धे नाई को जिसके पांच छः बच्चे नंगे थे। जो खुद और उसकी स्त्री भी चीथड़े पहिने थी एक अशरफी देदी। नाई बड़ा खुश हुआ घर पहुँच कर उसने अपने मित्रों की दावत की - दो बोतल शराब आई, बकरा काटा गया और रंडी का नाच कराया गया रात मे जलसा हुआ सुबह को लोगों ने अन्धे नाई से पूछा कि यह जल्सा कैसे किया? रुपया कहां से आया नाई ने कहा कि कल एक धनाढ्य ने एक अशर्फी दे दी थी उससे जल्सा किया है सुनने वालों ने उसको बुरा भला कहा कि कम्बख्त बच्चे नंगे फिरते हैं और औरत चीथड़े लपेटे फिर रही है! तुझे शर्म नहीं आती! तूने इस तरह से रुपये को लुटा दिया! धनाढ्य ने यह बात सुनी और उसे पहिचान लिया कि यह तो वही है कि जिसको अशर्फी दी थी उसको बड़ा दुःख हुआ कि मेरा रुपया ऐसे खराब काम में खर्च हुआ मुझे भी इससे पाप लगेगा। सीधा महात्मा जी के पास पहुँचा! महाराज आपके कहने के मुताबिक सब बातें जांच करके मैंने दान किया था पर वह रुपया ऐसे खराब काम में कैसे खर्च हुआ? साधु ने कहा कि तुम्हारे प्रश्न का उत्तर अभी दूंगा। जाओ पहिले जो आदमी बाहर से आता हुआ मिले उसको यह पैसा दे आओ। धनाढ्य वह पैसा लेकर शहर पना के दरवाजे पर खड़ा हो गया आदमी पहिले निकला उसने एक पैसा उसके हाथ मे रख दिया वह आदमी चादर ओढ़े हुये था पैसा मिलने पर फिर शहर की तरफ चल दिया धनाढ्य भी उसके पीछे हो लिया एक पेड़ के नीचे जाकर उसने जहां से मरा हुआ कबूतर उठाया था और उसको चादर में छिपा रखा था वहीं डाल दिया और एक पैसे के चने उस आदमी ने लिये, दो सेर मिले, चने लेकर भड़भूजे से भुनाकर घर ले आया। तीन बच्चे उसके कल के भूखे थे सबको चने खाने को दिये और बचे हुये खुद खाकर पैसे देने वाले को आशीर्वाद देना शुरू किया फिर उस प्रभु को धन्यवाद दिया जिसने लाज और धर्म दोनों को रखा। इसके बाद उस धनाढ्य ने पूछा कि यह मरा कबूतर पेड़ के नीचे कैसे डाला और छिपाये हुये कैसे ले जा रहे थे उसने जवाब दिया कि दो बातों की मेरी प्रतिज्ञा है कि खाना और कपड़ा किसी से नहीं मांगूगा मेरा विश्वास है कि कर्मों के अनुकूल खाना व कपड़ा निश्चित है उससे ज्यादा नहीं मिलता, मेरे बच्चे कल के भूखे थे मजदूरी मिली नहीं, बच्चों का दुःख मुझ से देखा नहीं गया मरा हुआ पक्षी पड़ा था, विचार पैदा हुआ कि बच्चों के पेटकी ज्वाला इससे मिट सकती है। मारने से पाप होता था यह अपनी मौत से मरा है, बच्चों को खिलाने में मुझे पाप नजर नहीं आया इससे मरा हुआ कबूतर पेड़ के नीचे से उठा लाया था भगवान को मजूर न था कि मेरे बच्चों का धर्म बिगड़े। आपको भेज दिया, आपने एक पैसा दे दिया, उसके चने ले आया। आप देखिये कि बच्चे

कितने खुश हुये आत्मा इनकी शान्त हुई धनाड्य साधू के पास पहुँचे साधू ने देर होने का कारण पूछा तो उन्होंने यह कथा कह सुनाई जो ऊपर लिखी हुई है।

इसके बाद धनवान ने पूछा कि मेरी बात का उत्तर मिलना चाहिये आपकी आज्ञा के अनुसार दान करने पर भी यह पाप उस अन्धे नाई ने क्यों किया? साधू ने कहा कि जवाब तो आपको मिल गया। धनाड्य ने कहा कि महाराज क्या जवाब मिला मुझ से तो आपने इस बारे में कुछ भी नहीं कहा कि भाई देखो नेक कमाई कभी खराब कामों में खर्च नहीं होती और पाप की कमाई अच्छे कामों में खर्च नहीं होती देखो मेरा पैसा बिना पात्र के विचारे तुमने दिया उसको देखो कैसे उत्तम काम में खर्च हुआ और तुमने विचार और पात्र को देखकर दान दिया फिर भी खराब काम में खर्च हुआ। तुम्हारी कमाई अच्छी मालूम नहीं होती।

कहानी का सारांश यह है कि पाप की कमाई कभी मत करो। यह सिवाय दुःख और पापों के बढ़ाने के शुभ काम नहीं करानी इसलिये गृहस्थियों को चाहिये कि धर्म से ही धन इकट्ठा करें पाप से कभी नहीं।

(१)

मृत्यु का केवल धर्म ही साथी है।

एक राजा मंत्रियों सहित भ्रमण को जा रहे थे रास्ते में एक सन्यासी तप करते मिले जो सिर्फ एक कोपीन बाँधे हुये थे और नग्न रहते थे स्वामी दयानन्द जी भी बारह वर्ष नग्न रहे थे गंगा किनारे समाधि लगाया करते थे एक दिन बहुत जाड़ा पड़ रहा था कुछ अँग्रेज हवा खोरी करने उस तरफ आ निकले एक साधू को ऐसी ठंड के समय नंगा बैठा देखकर आश्चर्य करने लगे और स्वामी जी से पूछा कि क्या आपको ठण्ड नहीं लगती? ऋषि फरमाते हैं कि जिस तरह नाक को नंगे रहने की आदत पड़ जाती है उसी प्रकार मेरे शरीर को आदत पड़ गई है आपने ठंड से बचने के लिये तो दस्ताने व जुराबें आदि बनवा लिये पर नाक के ढ़कने का खोल (ढकना) नहीं बनवाया क्यों कि इसको नग्न रहने की आदत है इसी प्रकार वह तपस्वी तप कर रहा था उस दिन बर्फ पड़ रही थी ठण्ड ज्यादा देखकर राजा को ध्यान हुआ कि महात्मा जी ठंण्ड से दुःख पा रहे हैं। अपने मंत्री के

साथ दुशाला व ५०० अशरफी रखमेजी महात्मा ने मंत्री से कहा कि राजा से कहो कि किसी कंगले को दे दें मुझे किसी पदार्थ की आवश्यकता नहीं है । मंत्री ने महात्मा जी उत्तर सुना दिया । राजा समझा कि कम अशरफी होने से महात्मा ने भेंट स्वीकार नहीं की फिर ५ हजार अशरफी भेजी मन्त्री को पहिला ही उत्तर मिला कि किसी कंगले को दे दो राजा इस उत्तर को सुनकर स्वयं बहुत से रत्न आदि लेकर गये और महात्मा से भेंट स्वीकार करने की प्रार्थना की साधु ने वही उत्तर राजा को दिया जो मंत्री को दिया था । राजाने कहा कि महाराज आपसे ज्यादा कंगाल कौन होगा बदन पर कपड़ा नहीं खाने को दाना नहीं साधु ने कहा कि राजन् मैं तो राजाओं का राजा हूं मुझे कैसे कंगाल बतलाते हो इस पर राजा ने कहा कि महाराज राजा के पास बहुत फौज रहती है आपके पास फौज कहां ? साधु ने कहा कि फौज की आवश्यकता उसको होती है जिसका कोई शत्रु हो और शत्रु का डर हो राजा ने कहा कि राजा के पास बड़े कीमती वस्त्र होते हैं आपके जिस्म पर कपड़ा तक नहीं साधु ने उत्तर दिया । कि कपड़े की आवश्यकता उसको होती है जिसको गर्मी सर्दी लगती हो- मेरे शरीर को गर्मी सर्दी नहीं लगती राजा ने कहा कि आपके पास तो खाने को दाना भी नहीं साधुने कहा कि मेरे पिता ने मुझे भोजन बहुत दे रखा है यह पेड़ों के पत्ते व फल भोजन को, और सुन्दर चश्मे पानी के पीनेको राजा ने कहा कि आपके पास एक पैसा भी नहीं राजाओं के पास हीरे जवाहारात होते हैं साधू ने कहा कि धनकी आवश्यकता उसको होती है जिसको किसी पदार्थ की इच्छा हो और मुसीबत पड़ती रहती हो मुझे सिवाय प्रभू के जो मेरे साथ हर समय रहता है और किसी की इच्छा नहीं और उस महान पिता जिसके आधीन संसार का धन है वह पिता मेरा रक्षक है फिर मुसीबत मुझ पर नहीं आ सकती जब राजा निरुत्तर हुआ तो एक छड़ी कीमती साधु के पास डाल कर कहा कि आप से ज्यादह कोई पागल मिल जावे तो यह छडी उसीको दे देना पागलों की यही पहिचान है कि संसार के भोग मिलने पर छोड़दे राजा छडी डाल कर चला गया कुछ समय बाद साधुने योग दृष्टि से मालूम किया कि उस राजा की कल मृत्यु हो जावेगी वह छड़ी लेकर राजा के पास गया और अपने आने की खबर कराई मृत्यु के समय बहुतों को वैराग्य हो जाता है और बुद्धि ठीक हो जाती है हाय मैंने मनुष्य जीवन भोगों में खराब कर दिया, राजा ने साधु को बुलाया, साधु ने पूछा कि राजन् कैसी तबियत है राजा ने कहा कि महाराज दो चार दिन का महमान हूं मृत्यु मुह खोले इन्तजार कर रही है साधु ने पूछा कि राजन कहां जावोगे राजा ने कहा कि मैं तो आपको पहिले ही जानता हूँ कि आप अर्द्ध पागल है भला मृत्यु के बाद किसी को पता लगता है कि कहां जाता है मुझे पता नहीं कि कहां जाऊंगा साधू ने कहा कि मैं तो यह देखता हुं कि सफर के मुताबिक सामान व धन साथ में लिया जाता है आपको तो यह पता तक नहीं कि कहां जाना है फिर ऐसे सफर के लिये कितना धन साथ ले जाओगे। राजाने कहा कि धन

साथ नहीं जाती। साधु ने पूछा कि जब धन आपके साथ होगा नहीं यह पता तक नहीं कि कहां जाना है, कितने विकट रास्ते आवेंगे फिर सलाह मसविदे के लिये कौन मंत्री साथ रहेगा जो दुःखों से बचावेगा। राजा ने कहा कि मंत्री भी साथ नहीं होगा तब साधु ने पूछा कि रानी कौनसी होगी जो मन बहलाव करेगी राजा ने कहा कि रानी भी साथ नहीं जासकती साधु ने कहा कि फिर राजकुमार कौनसे साथ जावेंगे जिनके बिना आप रह नहीं सकते राजा ने कहा कि महाराज कुमार भी साथ नहीं जावेंगे। साधू ने कहा कि जाने दो सब बातों को किस सवारी में बैठ कर जाओगे राजा ने कहा इसीलिये ही मैंने आपको पागल मान रखा है कहीं मृत्यु के समय सवारी मे बैठ कर जाते हैं ? तब साधु ने कहा कि इस अपनी छडी को संभालो मुझे तो आपसे ज्यादह पागल कोई नहीं मिला जिसके लिये पूछता हूं कि कौन साथ जावेगा। सबको इन्कार कर रहे हो फिर सारी उम्र उन पदार्थों के इकट्ठे करने में आपने खो दी जो सब यहीं छोड़ना पड़ेंगे। और साथ नहीं जावेंगे मेरा समय प्रभु चिन्तन में लगा और शुभ कर्म इकट्ठे किये वे सब मेरे साथ जावेंगे।

इस कहानी का सारांश यह है कि संसार के सब पदार्थ यहीं रह जावेंगे मृत्यु के समय कोई साथ नहीं जावेगा इसलिये सारा समय उन पदार्थों के इकट्ठा करने में मत खोओ जो साथ नहीं जाते। कुछ समय उस प्रभु की याद मे लगाओ जो मुसीबत के समय ढाढस देता है और मदद करता है मनुष्य जन्म को बिना समझे व मनन किये मत खराब करो और प्रतिदिन सोचा करो कि कितना समय शुभ कर्मों में खर्च हुआ है और कितना समय व्यर्थ गया जो समय परोपकार या ईश्वर भक्ति में लगे वह शुभ कर्मों में माना जाता है बाकी समय व्यर्थ जाता है।

---

(१०)

❀ जैसी करनी वैसी भरनी ❀

क धर्मात्मा राजा के मन में यह प्रश्न हुआ कि मुझे यह राज्य किस शुभ कर्म के बदले में मिला है इसकी तलाश जरूर करना चाहिये राज्य में करोड़ों मनुष्य स्त्री पुरुष हैं कोई तो त्यागी होगा या पिछले जन्म की बात किसी को तो याद होगी ? वहां मेरे प्रश्न का उत्तर मिल जावेगा। यह सोचकर राजा ने अपने राज्य में यह एक दिन मुकरर करादिया कि उस रोज तब तक कोई भोजन न करे जब तक कि मुझे इसका उत्तर न मिल जावे कि मैंने पहले जन्म में कौनसा उत्तम कर्म किया है कि जिसके बदले मुझको राजा के यहां जन्म मिला।

राजा वाली आज्ञा थी। फौरन तारीख मुकर्रर होकर राज्य भर में मनादी करादी गई। नियत दिन आया किसी के घर रसोई नहीं बनी सब भूखे थे एक नाई की लड़की ८-१० साल की खेलती आई और अपनी माता से रोटी मांगी उसकी माता ने कहा बेटी राजा की ऐसी आज्ञा होगई है कि जबतक कोई यह न बतलावे कि किस कर्म फल से उसको राजा के घर जन्म मिला है कोई रोटी नहीं खा सकता। इसको तो ईश्वर ही जान सकते है इस राजा को क्या उल्टी सूझी है सारादेश भूखा पड़ा है तुझे रोटी कहां से दूं। लड़की ने कहा कि मैं यह बतलाना तो नहीं चाहती थी जब सारे लोग भूखे पड़े हैं और दुख पा रहे है पहिले जन्म की बातें मालूम होने मे भलाई होती तो ईश्वर जरूर याद रखता। इससे कोई लाभ नहीं बल्कि हानि अधिक है पिछले जन्म के दुख सुख को याद करके जीव दुख उठाया करता- मालूम नहीं भगवान ने हम भाई बहिनों को क्यों पिछले जन्म की बात याद करा रखी है मुझे राजा के पास ले चलो मैं राजा को बतादूंगी और सारे राज्य के दुख को दूर करूँगी। नाई ने जाकर राजा से यह सब समाचार कहे राजा ने बड़ी खुशी की और पालकी भेजकर लड़की को बुलाया और उससे अपना प्रश्न पूछा लड़की ने कहा कि राजा मेरी बात पर आपको विश्वास न होगा। जबतक कि कोई आश्चर्य की बात आपको मालूम न हो कि रिआया को रोटी खाने की आज्ञा दो- और तुमको सारा हाल एक साधु जो अंगारे के सिवाय कुछ नहीं खाता वह बतलावेगा राज्य भर में खुशी छा गई सब को भोजन की आज्ञा मिलगई लड़की को राजा ने अपने घर रख लिया और उस साधु की तलाश में चल दिया उसके बतलाये हुये पते पर एक साधु बैठा मिला जो भूख लगने पर आग के अंगार खा रहा था राजा को दूर से आता हुवा देखकर साधू हँसकर बोला कि राजा किधर रास्ता भूलकर आ गये राजाने कहा कि मैं अपने मतलब को आया हूं साधु ने मतलब पूछा राजा ने वही सवाल किया कि पहिले जन्म मे मैंने कौनसा शुभ कर्म किया था कि जिसके फल स्वरूप मुझे राज्य मिला- साधु ने कहा कि इस प्रश्न का उत्तर तुम्हारे शहर की एक लड़की नाई की जानती थी उससे क्यों न पूछ लिया जो इतनी दूर कष्ट उठाया राजा ने कहा कि उस लड़की ने ही आपका पता मुझे दिया है तब मैं आपके पास आया हूं तब साधु ने कहा कि जब तक आश्चर्य आपको मालूम न होगा आप विश्वास नहीं करेंगे देखो दुनियां सब जान रही है कि शुभ कर्मों के फलों से ही दुनियां में मनुष्य सुखी और दुखी है मगर कौन विश्वास करता है बुद्धि बतला रही है मगर यकीन नहीं आता- तुमको भी यकीन न होगा।

मगध देश के राजा के रोज लड़का सुबह पैदा होता है और शाम को मर जाता है वह तुरन्त का पैदाशुदा लड़का आपके प्रश्न का उत्तर देगा। वह आपको और मुझे और नाई की लड़की को जानता है लड़के तक पहुँचने का तरीका भी अलग बतलादिया राजा उस पते पर उस शहर में पहुंचा और एक बुढ़िया के घर ठहरा बुढ़िया जब राजा के घर जाने लगी तो उसस पूछा कि माजी कहां जाती हो उसने उत्तर दिया

कि इस राजा के इतनी रानियां है कि एक लड़का पैदा होने का नम्बर रोज़ का लगा हुवा है सुबह लड़का पैदा होता है शाम को मर जाता है। सुबह को गीत गाने व शाम को रोने जाना पड़ता है क्योंकि जिस रानी के लड़का पैदा होता है वह खुशी करती है, यह नहीं जानती कि पाप कर्म से लड़का शाम को मर जावेगा। आज जिस रानी के लड़का पैदा हुवा है उसके गीत गाने जा रही हूं राजा ने पन्डित का रूप बनाकर राज महल के सामने घूमना शुरू कर दिया किसी के पूछने पर कि आप कहां रहते हैं और कैसे राजमहल के चक्कर लगा रहे है उसने कहा कि मैं उस लड़के को देखना चाहता हूँ कि जो आज पैदा हुआ है राजा ज्योतिषी की तलाश में था राजा को जब यह खबर मिली तो ज्योतिषी को बुलाया और अपने दुख का कारण पूछा ज्योतिषी ने कहा लड़का मुझे दिखलाओ तब मै कारण बतला सकता हूं राजा मंत्रियों सहित ज्योतिषी को राजमहल में ले गये दूर से ही लड़का देखकर हँसा और राजा से बोला कि आप आ गये ज्योतिषी ने उत्तर दिया मैं अपने मतलब से आया हूं लड़के ने मतलब पूछा। उसी रोज बच्चे को बातें करते देखकर सब लोग आश्चर्य में हो गये राजा ज्योतिषी के रूप मे था कहा कि मैंने कौनसा ऐसा शुभ कर्म किया जो राजा के घर जन्म मिला उस बच्चे ने सब उपस्थित सज्जनों को अपनी तरफ मुखातिब करके कहा कि सुनिये आप सब लोग भी इस पर ध्यान रखिये।

पहिले जन्म में हम ३ भाई और १ बहिन थे मा बाप मर चुके थे रोटियों से तंग थे सारा दिन मांगने पर २-२ रोटी से ज्यादा नहीं मिलती थी एकदिन बिल्कुल भीख न मिली भूखे पड़े रहे दूसरे दिन मांगने पर २२ रोटी चारों की पांती में आई। रोटी खाने ही वाले थे कि इतने में एक भूखे साधु ने कहा कि कहत पड़ा हुवा है सात दिन से एक दाना भी मुह में नहीं गया भूख से बहुत व्याकुल हूँ शरीर छूटने वाला है मुझे खाने को दो उस साधु की हालत देखकर तुमको दया आ गई अव्वल उस साधु के पास जो आज कल अंगारे खा रहा है जाकर कहा कि भाई मैं भी कलका भूखा हूं एक साधु सात दिन का भूखा आ गया अगर मैं दोनो रोटी उसको देदूँ तो मैं कल मांग न सकूगा एक रोटी तू और एक मैं देदूं तो उस साधू की जान बच जावेगी और हम भी कल मागने काबिल के रह जावेंगे। इस पर उस साधु ने कहा कि मैं तो कल का भूखा हूं तुम बड़े दानी हो तो अपनी रोटी देदो क्या मैं अगारे खाऊंगा? रोटी देने से मना कर दिया तुम फिर मेरे पास आये मैंने भी रोटी देने से इनकार करदिया फिर नाई की लड़की के पास गये उसने भी रोटी देने से इनकार करदिया और यह ताना मारा कि हम नाई थोड़े ही हैं जो काम तो करें, और भूखे पड़े रहें तब तुमने दो रोटी अपनी उस भूखे साधु को देदी। साधु ने रोटी खाकर तुमको आशीर्वाद दिया। इसलिये तुमने राजा के घर जन्म लिया मै पैदा होता रहता हूं और मरता रहता हूँ न मरने का न जीने का। उस साधू का सिवाय अंगारे के कुछ खाने को नहीं मिलता लड़की ने नाई के घर जन्म लिया जिसने जो भी जवाब दिया भगवान ने उसको वही दिखला

दिया कहानी का सारांश यह है कि भूखे को घर से कभी भूखा मत जाने दो- मेरी दुर्गति देखलो कि जन्म लेता हूं और मरता रहता हूं जन्म और मृत्यु से दूसरा बड़ा दुःख कोई नहीं है उसने उस साधु को रोटी खिलाने के पुण्य से राजा के घर में जन्म लिया उस पुण्य में से कुछ मुझे देकर ईश्वर से प्रार्थना करो कि मैं इस जन्म मरण से बच जाऊँ। कभी ऐसा न करूँगा कि जो भूखे को खाने को न दूं राजा ने ईश्वर से प्रार्थना की और लड़के को दुख से छुड़ाया। संसार में सुख दुखों के भेद से पता चलता है कि जो जैसा करता है उसको वैसा ही फल मिलता है। इसलिये कम से कम यह व्रत लेना चाहिये कि अपने घर आये भूखे को भोजन जरूर खिलाया करो।

—o—

(कहानी नं० ११)

भाव ही कर्म का मापदण्ड है।

राजा युधिष्ठिर ने अश्व मेघ यज्ञ खतम किया था राज सभा भरी हुई थी अश्वमेध यज्ञ की सब प्रशंसा कर रहे थे। और वास्तव मे बहुत बड़ा यज्ञ हुआ था जैसा महाभारत के पढ़ने से पता चलता है कि यज्ञ की सफलता की यह कसौटी रक्खी गई थी कि शंख जब अपने आप बज जावे तब यज्ञ समाप्ति पर आया जानो और शंख नहीं बजा तो यज्ञ असफल समझो इसकी तलाश हुई कि यज्ञ में क्या कमी रह गई जो शंख नहीं बजता। भगवान् कृष्ण से पुछा गया कि महाराज हम तो यह जान नहीं सकते कि यज्ञ में क्या कमी रह गई। खूब विचार कर लिया हमें कोई कमी नजर नहीं आती आप योगी [है] योग बल से मालूम कर के बतलाइये कि यज्ञ में क्या कमी है ताकि उसको पूरा किया जाय भगवान ने योग बल से मालूम किया कि एक हरिजन को न्योता देना रह गया और उसने आकर भोजन नहीं किया यही कमी है तुरन्त अर्जुन आदि को भेजा गया और हरिजन (भंगी) को बुलाया उसने वक्त पर न्योता न देने से आने से इन्कार कर दिया तब भगवान व युधिष्ठिर दोनो हरिजन (भंगी) के पास गये और यज्ञ में चलने की प्रार्थना की मगर हरिजन ने जाने से इन्कार कर दिया राजा ने भूल स्वीकार करके क्षमा चाही भगवान कृष्ण के समझाने पर हरिजन यज्ञ में आया और भोजन किया तब शंख बजा। विचारिये राजा तक प्रजा का कैसा आदर करते थे और यज्ञ तबही सफल माना जाता था जब सब प्रजा उसमें शरीक होती थी।

राज सभा में हरिजन को न्योता न देने की चर्चा हो रही थी यज्ञ की समाप्ति की खुशी मनाई जा रही थी कि इतने में एक नेवला राज सभा मे आया जिसका आधा शरीर सोने का था। नेवले ने सभा में कहा कि जगत मे यज्ञ की धूम मची हुई है

कि आपने बड़ा अश्वमेध यज्ञ किया उस प्रशंसा को सुनकर मैं भी आ गया आपकी यज्ञ की भूठन पर बहोत लौटा मगर मेरा आधा शरीर सोने का न हुआ जिसकी मेरे अन्दर कमी है उससे पता चलता है कि यज्ञ की प्रशंसा सही नहीं है आपके राज के एक निर्धन ब्राह्मण की कथा सुनिये उसके तीन बच्चे और स्त्री दो दिन के भूखे थे निर्धन ब्राह्मण कहीं से सत्तू मांग कर लाया था जो बच्चों के लायक ही था. पत्ते मे बच्चों को सत्तू परोस रहे थे कि इतने में एक साधु सात दिन का भूखा आया और ब्राह्मण से कहा कि भूख के मारे प्राण निकले जा रहे हैं खाने को दो उस ब्राह्मण ने अपने बच्चों के सामने का सत्तू उठाकर भूखे साधु को खिला दिया बच्चों के रोने तक का ख्याल नहीं किया साधु ने सत्तू खाया तब उसकी आंखें खुली। साधु ने ब्राह्मण का बड़ा उपकार माना और धन्यवाद दिया नेवले ने कहा उस ब्राह्मण को सौ अश्वमेध यज्ञ का फल मिला उस साधु ने सत्तू खाकर दो पत्ते फेंके उस पर भूठन लगा हुआ था इत्तफाक से मैं उस भूठन पर लौट गया मेरे शरीर पर जहां जहां वह भूठन लगी वही शरीर सोने का हो गया तब से मै जहां जहां दान व यज्ञ की प्रशंसा सुनता हूँ वहीं जाकर जूठन पर लौटता हूं कि बाकी शरीर सोने का हो जावे मगर नहीं होता आपके यज्ञ की बड़ी प्रशंसा सुनी कि शंख खुद यज्ञ की समाप्ति पर बज गया यज्ञ सफल हो गया मैं आपके यज्ञ की जूठन पर भी बहुत लोटा मगर मेरे शरीर का कोई हिस्सा भी सोने का नहीं हुआ वास्तव में राजन उस निर्धन ब्राह्मण के सत्तू के दान का मुकाबिला आपका यज्ञ नहीं कर सकता क्योंकि निर्धन ब्राह्मण के बच्चे दो दिन के भूखे थे उसने बच्चे को रोता छोड़ा और उसके सामने के पत्ते पर से सब सत्तू सात दिन के भूखे साधु को दान देकर उस साधु की जान बचाई उसने अतिथि धर्म का पालन किया आपने यज्ञ में असंख्य रुपये खर्च किये देखने में बहुत बड़ा काम किया मगर ब्राह्मण के दान का मुकाबिला नहीं हो सकता कि यज्ञ के बाद आपके पास असंख्य धन मौजूद है निर्धन ब्राह्मण ने बच्चों को भूखा रख कर साधु को सत्तू खिलाया वास्तव में कर्म का बड़ा छोटा भाव परिस्थितियों पर आंक ना चाहिए इसलिये गरीब लोग प्रभु से जल्दी मिल सकते हैं और उसके पास पहुंच सकते हैं।

ईसा मसीह ने चन्दे की अपील की। लाखों रुपये देने वाले भी थे मगर ईसा मसीह ने सब रुपये के ऊपर दो पैसे एक बुढ़िया के रख कर प्रशंसा की कि सब से बड़ा दान इस बुढ़िया का है कि इसके पास दो पैसे थे वही दान कर दिये यानी सर्वस्व दानकर दिया दानकी बड़ाई रकम से नहीं नापी गई मगर भाव से नापी गई।

(१२)

देश व जाति को कलंकित न करो

एक डाकू एक महात्मा के पास पहुंचा– डाकू को मालूम हो गया था कि साधु के पास एक ऊंट है जो ८० मील सफर करके लौट आता है डाकू के पास एक घोड़ा था जो कीमती तो था मगर वह ४० मील जाकर वापस आ सकता था इसने उन महात्मा से कहा कि मेरा घोड़ा पांच हजार रुपये का है आपका ऊंट ५००)रु० का होगा मैं चाहता हूँ कि आप मेरा घोड़ा बदले में लेकर ऊंट बदले में मुझे दे देवें- साधु ने पूछा यह नुकसान आप क्यों उठाते है कि ५000) रु० का घोड़ा देकर ५00) रु० का ऊंट लेना चाहतेहै डाकू ने इसका कारण बतलाने से इन्कार किया साधु ने ऊंट बदलने से इनकार कर दिया- तब डाकू ने सब मामला साधु से कह सुनाया कि मैं डाका डालने का काम करता हूं डाका जितनी दूर फासले पर डाला जावे उतना ही अच्छा है ताकि डाकू पकड़ा न जावे- इस ऊंट से ८० मील तक की दूरी का डाका डाल कर वापस आजाया करूँगा– साधु ने कहा कि इस पाप कर्म करने के लिये मैं ऊंट नहीं बदल सकता- गो ऊंट बदलने में मुझे काफी फायदा है मगर बुरे कामों में मनुष्य मदद करता है उस को भी पाप लगता है तब ही ताजीरात हिन्द में इस का जुर्म रक्खा है ताकि डाकू को कोई मदद न पहुँचावे- डाकू ने कहा महात्मा जी इन बातों में क्या रक्खा है आप ऊंट बदल लीजिये वरना मैं तो इस ऊंट को जरूर लूंगा। क्यों इतना बड़ा नुकसान कर रहे हो– कि कीमती घोड़ा लेकर ऊंट नहीं देते साधु ने कहा जबरन तो ऊंट आप ले सकते है मगर मैं राजी से ऊंट नहीं दूंगा यह सुन कर डाकू चला गया–

५-६ महीने का समय बीच में देकर डाकू ने मालूम किया आज कि साधु जी इस रास्ते से ऊंट पर चढ़कर आवेंगे जंगल में रास्ते के किनारे एक दरख्त के नीचे लेट गये और फर्जी मूंछ डाढ़ी लगाओ जिससे पहिचान में न आवें और चिल्लाना शुरू कर दिया कि पेट के दर्द से मरा जाता हूं साधु ने उस आदमी को रोता चिल्लाता देखा ऊंट रोक कर पूछा भाई कैसे पड़े रो रहे हो उस बीमार ने कहा धन्य हो आपको आप साधु हैं तब ही तो आपके दिल में दया है वरना सैंकड़ों मुसाफिर कब से निकल गये, मुझे रोता देख कर चले गये किसी ने बात तक नहीं पूछी– महाराज मेरे पेट मे दर्द है जिससे उठा तक नहीं जाता;- और फिर रोना शुरू किया कि महाराज बचावो— साधु ने कहा कि यहां तो मेरे पास कोई दवा नहीं पास ही गांव है वहां तक मेरे साथ ऊंट पर बैठ कर चले चलो मैं आप का इलाज कराऊंगा बीमार बोला महाराजमे उठ कर ऊंठ के पास तक नहीं पहुंच सकता तब साधु ऊट से उतरे दण्ड कमन्डलु जो हाथ में था नीचे उतर कर एक तरफ रख दिया और बीमार को पकड़ कर उठाया और ऊट पर बिठला दिया साधु कमन्डलु उठाने चले जो पास ही रक्खा था डाकू

ने ऊंट के एड़ लगाई और थोड़ा दूर पहुँच कर फर्जी डाढ़ी मूछ उतार कर फेंक दी और कहा कि महाराज मैं वही डाकू हूं जो पांच हजारका घोड़ा देकर ऊंट बदलता था मगर आप महात्मापने में आ गये कि मैं पाप कर्म मे शरीक नहीं होता कहिये अब तो घोड़ा भी नहीं मिला और ऊंट भी गया साधु ने कहा कि भाई तू ऊँट लेजा मगर मेरी एक बात सुनले डाकु ने कहा वहीं खड़े हो जावो दूर से बात कहदो सुनलूंगा तुम चाहो कि ऊंट पकड़लूं यह मौका में आपको नहीं दूंगा क्योंकि भलमन्शात का समय नहीं रहा मैंने आप से सच बात कहदी तब भी आपने ऊँट बदलने से इन्कार कर दिया साधु दूर खडे हो गये कि मेरी बात सुनते जावो डाकु ने कहा कि कहो क्या बात कहते हो। साधु ने कहा कि तुम किसी से इस बात को मत कहना कि मैंने बीमार बन कर ऊंट को ठगा है यहां जंगल में कोई नहीं जानता अच्छा है कि इस को कोई तीसरा आदमी न सुने- डाकू ने कहा कि कोई सुनले तो इस में आप का क्या नुकसान है-- साधु ने कहा कि बड़ा नुकसान है डाकू ने कहा कि नुकसान बताओ-- साधु ने कहा कि अगर लोगो को यह मालुम होगा कि तुम ने बीमार बनकर ऊंट ठगा है तो लोग अंजान बीमारों की सेवा करना छोड देगें और यही समझेगें कि बीमार डाकू तो नहीं है-डाकू ने पूछा इससे आप का क्या नुकसान होगा आप क्यों इसकी फिक्र व चिन्ता करते हैं साधुने कहा कि इस से संसार को बड़ा नुकसान पहुंच जावेगा क्योंकि अन्जान बीमारों की सेवा शुश्रूषा कोई नहीं करेगा जिस से मनुष्यों के अन्दर दया वृत्ति नहीं रहेगी- बीमार ही डाकू उसको नज़र आवेगें-- डाकू ने कहा कि इस से भी आपको कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा आप क्यों चिन्ता कर रहे हैं-- साधुने कहा भाई जब संसार में मनुष्यता नहीं रहेगी और कोई बीमारों की सेवा नहीं करेगा तो संसार में बुराई फैल जावेगी इस लिये तुम प्रतिज्ञा करलो कि मैं किसी से नहीं कहूँगा और मैं तुम से कुछ नहीं चाहता - यह सुन कर डाकू ऊंट से उतर कर साधु के पैरों में आ पडा - महाराज तुम धन्य हो ऊंट जाने पर भी आप का ध्यान परोपकार पर ही रहा और मैं कितना पापी हूं कि ऐसे पाप कर्म कर रहा हूं जो दूसरों को दुख पहुँचा रहा हूं अब मैं डाके न डाल कर पापों का प्रायश्चित करूंगा और साधु के साथ हो लिया और साधु से सन्यास लेकर परोपकार में लग गया सत्य है ऐसे कर्म योगी महात्माओं के उपदेश का असर होता है कि उपदेश ने डाकु को साधु बनादिया भारत वर्ष तेरे सपूत तेरा नाम उज्जवल करते थे कहां आज तेरा ऐसा अपमान कि तेरे सपूत झूठे चोर बदमाश दूसरे देशों में माने जाने लगे-- वे ही देश ऊंचे उठ रहे हैं कि जिन के लोग अपने देश के लिये कोई काम ऐसा नहीं करते कि जिससे उनका देश बदनाम हो—

———

(कहानी न० १३)

देश का अपने किसी कार्य से अपयश न करो

स्वामी सत्यदेवजी ने अपना प्रत्यक्ष देखा किस्सा बयान किया कि वह जहाज में बैठे योरोप जा रहे थे एक जापानी बासीफल ताजेफल बतला कर एक मुसाफिर को दे गया जो मेरे पास ही बैठा हुआ था खाने के समय उसको पता चला कि फल ताजे नहीं बासी हैं वह मुसाफिरों से कहने लगा कि फल बासी हैं जापानी ताजे बतला कर बेच गया इतने मे एक जापानी आया और उसने पूछा कि आपने कितने में यह फल खरीदें हैं उसने एक रुपया बतलाया उस जापानी ने तीन रुपये दस दिये और मुसाफिर से कहा कि कृपा करके यह फल मुझे दे दो और किसी से जिक्र न करना कि जापानी इस तरह झूंठ बोलकर बासीफल ताजे बतला कर बेच गया मुसाफिर ने कहा कि मैंने फल आपसे थोड़े ही लिये हैं यह तीन रुपये कैसे ले लूँ मगर जापानी के आग्रह पर एक रुपया लेकर बासीफल वापिस कर दिये जिस देश के लोग अपने देशका इतना खयाल रखते हैं वही देश तरक्की करते हैं भारतवर्ष के लोग इतने पतित हो गये हैं कि सब जगह अपने भाइयों की बुराई करते हैं।

ईश्वर वह दिन फिर लावे कि इस देश के मनुष्य भी अपने देश से प्रेम करने लगे और इसका ख्याल रक्खें कि कोई काम ऐसा न करें कि जिस से देश का गौरव घटे।

—o—

(कहानी नं० १४)

बुद्धि ही सर्वोत्तम

एक बड़े धनाढ्य व बुद्धिमान में एक बहस छिड़ गई धनाढ्य कहता था बुद्धि से बडा धन है तब ही तो बड़े २ बुद्धिमान विद्वान धनवानों के यहां नौकर देखे जाते हैं बुद्धिमान ने कहा कि यह सच है कि धनवान के यहां बड़े २ बुद्धिमान नौकर रहते हैं जहां धन से काम नहीं चलता वहां बुद्धि से ही काम निकलता है इसीलिए बुद्धि का दरजा धन से बड़ा है दोनों ने अपनी अपनी युक्ति देना शुरू की।

धनवान ने यह युक्ति दी कि बड़े २ विद्वान, पंडित, डाक्टर, इंजिनियर फिला सफर आदि को धनवान नौकर रखते हैं। संसार का ऐसा कोई पदार्थ नहीं जो धन से न खरीदा जा सकता हो फिर दर्जा भगवान का बड़ा क्यों नहीं मानते।

बुद्धिमान कहता था कि धन से सब पदार्थ खरीदे जा सकते हैं मगर दर्जा उत्तम बुद्धि का ही है जब ही हिन्दू धर्म ईश्वर से धन की प्रार्थना न करके बुद्धि को प्रार्थना करता है इसीलिये गायत्री मंत्र का दर्जा सब मंत्रों से बड़ा है और इसको गुरु मंत्र कहा है धन से जहां काम नहीं निकलता वहां बुद्धि बड़ी है जब आपस में फैसला न हो सका तो दोनों राजा के पास गये और हर एक ने अपने दावे के प्रमाण पेश किये राजा ने दोनों की युक्तियां सुनी वह एक दूसरे से बडी अच्छी मालूम पड़ती थी इम्तहान के तौर पर राजा ने अपने मित्र एक राजा को खरीता लिखा और सील मोहर करके दोनों को दिया कि जाओ वह राजा तुम्हारा न्याय करेगा। दोनों बडी खुशी के साथ उस राजा के पास पहुँचे और खरीता राजा के सामने पेश किया खरीते में लिखा हुआ था कि इन दोनों मनुष्यों को पहुंचने पर फांसी दे देना और फांसी पर खुद जाकर देखलेना कि कहीं रुपया वगैरा देकर छूट न निकलें फांसी के बाद मुझे इत्तला देना। राजा ने खरीता पढ़कर दोनों को सुनाया और हुक्म दिया कि कल आठ बजे फांसी दी जावेगी और फांसी के वार मैं खुद आकर देखूंगा। दोनों प्रार्थना करने लगे कि हमने कोई कुसूर नहीं किया मगर किसी ने नहीं सुनी रास्ते में बुद्धिमान ने कहा कि लो धन से बच जावो तब मैं समझूँ कि धन बड़ा है धनराज ने करोड़ों रुपये की रिश्वत देना चहा मगर रिश्वत नौकरों तक काम दे सकती है खुद मालिक को कैसे रिश्वत दी जा सकती है धनवान हार मानकर बुद्धिमान से कहने लगा कि अब की बार जान बचालो कभी ऐसी जिद् न करूँगा बैठे बिठाये दुःख में पड गया बुद्धिमान ने कहा तो फिर तो मान लोगे कि धन से बुद्धि बडी है धनवान ने कहा कि भाई जान बच जावेगी तब कैसे बुद्धि को बड़ा नहीं मानूंगा बुद्धिमान ने कहा कि फिक्र मत करो कल मैं बचालूंगा।

अगले दिन फांसी का वक्त आया दोनों से पूछा गया कि जो इच्छा हो सो कहो वह परिपाटी अब भी है कि फांसी के समय किसी से मिलने व खाने की इच्छा हो तो पूरी कराई जाती है। बुद्धिमान ने कहा कि राजा से दो बात करनी है। राजा को इत्तला दी गई राजा ने कहा कि उनको बुला लाओ। दोनों राजा के सामने पेश हुये बुद्धिमान ने राजा से कहा कि अब तक यह सुना जाता है कि राजा वही होता है जिसमें ईश्वर का अंश विशेष हो ईश्वर ज्ञान स्वरूप है अगर ईश्वर का कुछ अंश भी आपमें होता तो कुछ बुद्धि तो आपमें होती आपके इस कार्य से पता लगता है कि आपमें बुद्धि छू तक नहीं गई अगर बुद्धि होती तो खरीते को पढ़कर यह सोचते कि उस राजा के यहां फांसी आदि का सब

सामान मौजूद है इन दोनों को कोई पकड़ कर नहीं लाया दोनों खुशी से मेरे पास आये हैं फिर उस राजाने खुद फांसी न देकर मेरे यहां भेजा है अगर कोई जुर्म फांसी का करते तो वह राजा खुद ही दंड दे देते मेरे यहां क्या भेजा यह कह कर दूसरे साथी से कहा कि चलो सौभाग्य का दिन आज आया है अपने राजा के लिये अगर कुछ काम आ जावें तो इससे अच्छा और क्या काम हो सकता है प्रजा का धर्म है कि अपने जैसे राजा के लिये सब कुछ न्यौछावर करदे सिपाही से कहा कि अच्छा जितनी जल्दी हो फांसी दे दी जाय मेरी इच्छा पूरी हो गई। यह कह वह दोनों चल दिये राजा ने वापिस बुलाया और पूछा कि सच बताओ कि राजा ने तुमको यहां फांसी देने क्यों भेजा। चूंकि यह काम तुम्हारी रजावन्दी से हुआ है दोनों ने कह दिया कि हम इस बात को कभी नहीं बतला सकते पिछले महा युद्धों में किसी देश के किसी सिपाही ने अपनी देशकी कोई गुप्त बात नहीं बतलाई गोली खाना मन्जूर किया मगर कोई बात बतलाई नहीं वास्तव में जो देश स्वतन्त्र है अपने देश के लिये उसके लाखों आदमी मर रहे हैं मगर पकड़े जाने पर कुछ से कोई बात नहीं बतलाते फिर क्या हम देश द्रोही हैं जो आपको गुप्त बात बतला दें। उन्होंने बतलाने से साफ इन्कार कर दिया। राजा ने हुक्म दिया कि इनको फांसी अभी न दी जावे और सात दिन तक बराबर राजा बुलाकर दरयाफ्त करता रहा मगर उन्होंने नहीं बतलाया राजाको पूरा ख्याल हो गया कि हम देश प्रेम से भरे हुये हैं आठवें दिन बुद्धिमान ने कहा राजा हमारे देश को कलंक लग जावेगा कि यह दोनों देश द्रोही निकले आप नहीं मानते तो मजबूर बतलाये देता हूं।

एक बड़ा ज्योतिषी हमारे राजा के पास आया हुआ ठहर रहा है हमारे दोनों के ग्रह देख कर उसने यह बतलाया कि जिस राज मे यह मरेंगे उस राजका एक साल में नाश हो जावेगा हमने राजा से कहा कि हमको किसी दूसरे राज में भेज दो ताकि हमारा राज्य बच जाय। राजा ने बहुत मना किया कि मैं राज्य के लोभ से दो आत्माओं को नहीं मार सकता हमने यह भी सोचा कि दूसरे राज्य में बस जावें ताकि हमारे राजा को निर अपराध निकालने का पाप न लगे। मगर इसमें यह अंदेशा दीखा कि अगर पता लग जावेगा तो वह राजा निकालदेगा क्योंकि यह बात सारे शहर में फैल चुकी थी हमारी सलाह से यह करीना आप को लिखा गया कि किसी तरह हमारा राज्य महफूज हो जावे मृत्यु का कुछ पता नहीं कि कब आजावे हर एक वस्तु का अनुमान लगाया जा सकता है मगर मृत्यु का पता नहीं लगता। चले तो सौ वर्ष तक की आयु हो सकती है वरना देखने में हट्टे कट्टे जवान ठोकर खाकर मरते देखे जाते है। राजा ने उनकी बात सुनकर बड़ा उपकार माना वह फौरन छोड़कर बड़े तेज दो घोड़े मंगा कर उनको सवार करा कर अपने सवारों के साथ अपने राज से बाहर कर दिया और सरहद पर पहरा बैठा दिया कि यह दोनों आदमी राज्य में घुसने न पावें इस तरह दोनों

हजारों रुपयों के घोडे लेकर घर पहुंचे और राजा को सब किस्सा सुनाया और कहा कि आपने तो मारने के ढंग कर दिये थे अपनी बुद्धि से जान बचा कर आये हैं।

सच है बुद्धि से बड़ा कोई पदार्थ नहीं है।

—*—

(कहानी न० १५)

❀ तकदीर बड़ी है या तद्वीर ❀

एक समय तकदीर बुद्धि में बहस छिड़ गई। बुद्धि कहती थी मैं बड़ी हूं प्रारब्ध कहता था कि मैं वडा हूं क्योंकि जिसकी प्रारब्ध अच्छी होती है उसके सब कर्म ठीक हो जाते हैं और सांसारिक वैभव उसके पैरों पर पडे रहते हैं जिसका प्रारब्ध ठीक नहीं रात दिन पुरुषार्थ करने पर भी कुछ नहीं मिलता क्योंकि बुद्धिमान धनवान के यहां नौकर रहते हैं बुद्धि ने कहा कि यह कहना तुम्हारा सत्य है। प्रारब्ध सब कुछ दिखला सकता है मगर जब तक बुद्धि न हो तब तक आनन्द सुख उस से जीव नहीं उठा सकता संसार में सारे काम सुख के लिये किये जाते है जब सुख व आनद ही न आया तो प्रारब्ध किस काम का बुद्धि ही को पहिला दर्जा मिलना चाहिये सलाह हुई कि व्यवहार में लाकर इस की जांच की जावे कि वास्तव में इन दोनों में बड़ा कौन है।

तकदीर ने एक रतन जड़ी कीमती खड़ाऊ एक ग्वाल के सामने डाल दी ग्वाल खडाऊं देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ तकदीर ने एक साहूकार के मन में प्रेरणा की साहूकार उधर होकर निकला ग्वाल के पास अनमोल लाल जवाहर से जड़ी खडाऊं देखी साहूकार ने उस से पूछा कि खडाऊ बेचते हो उसने कहा बेचदूंगा साहूकार ने कहा कि क्या लोगे उसने कहा कि दो मन भूँगडे, रोज मवेशी चराऊँगा और भूँगडे खाऊँगा साहूकार खुश हो गया कि कीमती चीज मुफ्त में मिल गई खडाऊ लेकर अपने राजा के भेंट की खडाऊ देखकर राजाने बूझा कि यह खड़ाऊ कहां से मिल गई मैंने तो ऐसी कीमती खडाऊ देखी भी नहीं थी साहूकार की जबान से निकल गया कि एक राजा से ली है इस पर राजानें पूछा कि उसके कोई लडका भी है साहूकार ने अपनी पहिली झूँठ छिपने के लिये कह दिया कि लडका भी है। तब राजाने कहा कि उस लड़के से मैं राजकुमारी की शादी करूँगा तुम जाकर इसको तय करके आओ।

साहूकार को चिन्ता हुई कि मैने झूंठ घोल दिया। सोचा चलें देखें कि वह ग्वालिया यह खडाऊ कहां से लाया। जाकर देखा तो उससे भी ज्यादा कीमती दोनों पेरों में खडाऊ पहिने ग्वाल फिर रहा है साहूकार ने सोचा कि छिप कर

देखें कि वह खड़ाऊं कहां से लाता है। साहूकार छिपकर बैठ गया ग्वाल एक पत्थर को सिरहाने लगा कर सो गया करवट जो ली सिर उसका पत्थर पर लग गया पत्थर उसी समय सोने का हो गया साहूकार यह देख रहा था उसने कहा कि इस ग्वाल की तकदीर बड़ी सिकन्दर है जो भी चीज इस के माथे से लगती है वह सोने की हो जाती है इससे बड़ा राजा क्या हो सकता है। साहूकार ने उससे कहा कि तू राजा से भी ज्यादा तकदीर वाला है जानवर चराना छोड़ दे और मेरे साथ रह। उसने बहुतेरा इनकार किया मगर साहूकार नहीं माना उसे साथ ले आया बड़े २ सहतीर उसके सिर से लगाये और सोने के हुए जो भी काम करे उससे लक्ष्मी घर में भरनी शुरू हो गई साहूकार ने सारे राज पाट के सामान इकट्ठे कर लिये और राजा के पास शादी की तारीख निश्चित कर दी उसका है यों उस देश में लड़की ब्याह कर लड़का जाती थी अब भी कुछ छोटे देशों में ऐसा रिवाज है।

निश्चित तारीख पर बड़ी सज धज के साथ उसके मकान के नजदीक पहुँचे बाजे की आवाज सुनकर ग्वाल ने सेठ से कहा कि आप मुझे जाने दो मुझे पकड़ने वाले आते दीखते हैं किसी के खेत में मवेशी चले गए मालूम होते हैं। साहूकार ने दिल में सोचा कि कहीं राजा के सामने कोई बात ऐसी न कहदे। उसे समझाया कि जब कोई बात कहनी हो मेरे कान में कहा करो यह तुम्हारी बारात के बाजे बज रहे हैं अब तुम राजा हो ग्वाल नहीं रहे। जब बारात मकान के सामने होकर निकली उसने साहूकार के कान में कहा कि देखो कह रहा था कि किसी के खेत में मवेशी चले जावेंगे जरूर किसी के खेत में मवेशी चले गए जब ही मुझ को पकड़ने वाले आ गये। साहूकार को बड़ी चिन्ता हुई कि यह गवांर मुझे भी पिटवावेगा। भगवान् इस दुख से बचाना, इतना वैभव होते हुवे इस को वही मवेशी चराना और खेत में चले जाना याद आ रहा है। ग्वाल को खूब समझाया, राम राम करके ज्यों त्यों करके फेरे डलवाये और दस्तूर के मुताबिक अलग कमरे में पहुँचाया कि राजकुमारी से मिले। राजकुमारी श्रृंगार किए हुए चली, ग्वाल ने बहुत सजा हुआ कमरा देखकर कहा कि इस बेईमान साहूकार ने आज मुझे मरवाया मैं सुना करता था कि रात में भूतों के यहां नाच हुआ करता है, उसी भूतों के नाच के कमरे में मुझे बिठा दिया इतने में राजकुमारी श्रृंगार किये हुये आई, उसने कहा कि मैं भी सुनता था कि भूतों के नाच में चुडेल भी आती है देखो वह चुडेल भी आगई। आज तो इस सेठ ने बिना मौत मरवा दिया यह सोच कर खाट के नीचे घुस गया राजकुमारी सहम गई कि यह क्या बात है कहीं मेरी पोशाक में तो कमी नहीं। महाराज कुमार साहब मुझे देख कर कैसे छिप गये राजकुमारी ने वापिस आकर सब श्रृंगार को देखा किस चीज की कमी है मगर कोई कमी नजर न आई राजकुमारी कुछ सोचने लगी सोचने में कुछ समय लग गया। ग्वाल को समय मिल गया। चट खाट के नीचे से निकल कर छत पर चढ़ गया कि मौत तो आज आ गई जिन्दगी बच नहीं सकती कमरे में रात चुडेल आकर खा जावेगी जो मेरे भाग से लौट गई है अगर अन्दर आ जाती तो मेरा काम तमाम कभी का हो जाता अब मरना निश्चित है तो छत से कूद पड़ूं शायद हाथ पांव

टूट कर जान बच जाय। मगर कमरे में तो चुडैल बिना मारे नहीं छोड़ेगी ऐसा सुन्दर भी नहीं हूं कि चुड़ैल अपने घरों में ले जाकर रख लेगी, ऐसा मशहूर है कि खूबसूरत मिल जाने पर चुडैल अपने स्थान में रख लेती है छत पर चढ़ा और कूदने को मुडेर पकड़ कर लटका हाथ छूटने वाले ही थे कि बुद्धि ने तकदीर से कहा कि देख लिया तूने। वह देख कूद कर मरता है। दोनों के देखते २ मुण्डेर हाथ से छोड़ दी हाथ छूटते ही वह जमीन पर पड़ा और पड़ते ही मर गया। सच है बिना बुद्धि के धनाढ्य अगर जिन्दे भी देखे जाते हैं तो संसार के सुख नहीं भोग सकते देखने में यही आता है कि बिला बुद्धि सुख नहीं मिलता।

(कहानी नं॰ १६)

लक्ष्मी, बल, बुद्धि धर्म का बलिदान ही सत्य की कसौटी है।

एक राजा ने अपने शहर में नया बाजार लगवाया और शहर को आबाद करने के लिये यह घोषित किया कि जिसका सामान नहीं बिकेगा उसका सामान राज्य में खरीदकर कीमत खजाने से दी जावेगी कुछ दिनों में आस पास के शहर बिगड़ने लगे और उस राजा की राजधानी बढ़ने लगी। आस पास के राजाओं को चिन्ता हुई कि इनकी मंडियां बिगड़कर राज्य को बड़ा नुकसान पहुंचेगा। उन्होंने अपना एक सभा की जिसमें उन राज्यों के बड़े विद्वान इकट्ठे हुये। उनमें से एक ज्योतिषी ने कहा कि मैं एक ऐसा दरिद्र देवता बना सकता हूं कि उसकी जो शक्ल देख लेगा उसका सामान नहीं बिकेगा देखें वह राजा कहां तक खजाने से रुपया देता रहेगा। सब राजाओं ने मिलकर ज्योतिषी को इस काम पर लगा दिया।

ज्योतिषी ने एक बड़ी विकराल मूर्ति मनुष्य जैसी दरिद्र देवता की बनाई अंदर उसके गोबर कूड़ा भरा। मङ्गल के दिन दरिद्र देवता का मन्त्रों से आह्वान किया। ख्याल्लात और विचारों का बड़ा असर पड़ता है इसको कोई झूठ न समझे।

मारण, मूठ आदि मारन की प्रथा भारत में अब तक प्रचलित है कि मूठ मारने से आदमी मर जाता है। कोई कहता है कि किसी ने मन्त्र पढ़ दिया जिससे मनुष्य वश में हो गया ऐसी दंत कथा प्रचलित है

उस दरिद्र देवता को जिसने देखा उसी का सामान नहीं बिका खजाने से रुपया दिया जाने लगा राजा तक यह खबर पहुंची कि दरिद्र देवता के देखने से सामान नहीं बिकता और रुपया खजाने से दिया जा रहा है। उसने कहा कि मुझे इसकी परवाह नहीं मैं अपनी प्रतिज्ञा पर कायम रहूंगा फिर दूसरे राजाओं ने कमेटी की कि इस राजा

के शहर में कोई कमी नहीं आती कब तक इसका इन्तजार किया जावे फिर ज्योतिषी को बुलाया। ज्योतिषी ने कहा कि अच्छा अब दरिद्र देवता इसी राजा के घर रखता हूँ और कहता हूँ कि मैं बेचने इसको लाया था मगर इसको बदनाम कर दिया कि जो कोई भी इस दरिद्र देवता को देखेगा उसी की चीज नहीं बिकेगी इससे कोई खरीदता नहीं अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार आप इसे खरीदिये या प्रतिज्ञा तोड़ दीजिये। यह कह कर वह ज्योतिषी उस राजा के दरबार में उस दरिद्र देवता को ले गया।

राजा को यह सब पता लग चुका था ज्योतिषी से कहा कि कल इसका उत्तर दूंगा। ज्योतिषी चला गया। राजा ने सब मन्त्रियों को बुलाया और पूछा कि अब क्या किया जावे। अगर दरिद्र देवता को नहीं खरीदता तो प्रतिज्ञा टूटती है और अगर इसे खरीद लिया जावे तो दरिद्र देवता का वास अपने घर में होता है जिस घर में दरिद्र देवता रहते हैं वहां लक्ष्मी नहीं रहती और जहां लक्ष्मी न हो वहां बल नहीं रहता और जहां बल न हो वहां बुद्धि नहीं रहती और बुद्धि के बिना धर्म नहीं रहता मंत्री ने कहा कि महाराज जैसे के साथ वैसा ही व्यवहार करना नीति धर्म है। आपकी प्रतिज्ञा सामान खरीदने की है न कि दरिद्र देवता को खरीदने की इसलिये यही उत्तर ज्योतिषी को दिया जाना चाहिये यह माल की तारीफ में नहीं आता इसको मैं नहीं खरीदता। यह ज्योतिषी राज्य को नुकसान पहुंचाना चाहता है ऐसे पुरुष की बातों को बातें न करिये। साफ उत्तर दीजिये। राजा ने कहा कि प्रतिज्ञा तो यह की गई है कि जो भी सामान कोई लावेगा और वह नहीं बिकेगा तो वह राज्य में खरीद किया जावेगा यह सामान की तारीफ में आता है। मैं कैसे इन्कार करूं। मन्त्रियों ने कहा कि दरिद्र देवता को अगर ले लिया गया तो राज्य पर दुःख के पहाड़ टूट पड़ेंगे इस चालाक ज्योतिषी की बातों में न आईये। राजा ने कहा कि यह राज्य किसी के साथ नहीं गया। मेरे पिता, पितामह संसार में नहीं रहे अपने कर्मों को साथ ले गये राज्य यहीं रह गया मैं भी शुभ या अशुभ कर्म करूंगा साथ ले जाऊंगा सिर्फ राज्य के लोभ से जो मेरे साथ नहीं जावेगा, सत्य को किस प्रकार छोड़ दूं। आप सब मेरे मोह में फसे हुए हैं जो उल्टी राय दे रहे हैं। जिसके मन्त्री नेक सलाह देते हैं वही राज्य तरक्की करता है। मैं प्रतिज्ञा का पालन करूंगा और सत्य को नहीं छोड़ूंगा।

अगले दिन ज्योतिषी को मुंह माँगे दाम देकर दरिद्र देवता खरीद लिये।

रात्रि के समय एक स्त्री आई और राजा को जगा कर कहा कि आपने दरिद्र देवता खरीद लिए, या तो आप इसको वापिस करो वरना मैं आपके घर नहीं रह सकती क्योंकि जहां दरिद्र देवता वास करते हैं वहां लक्ष्मी नहीं ठहरती। राजा ने कहा कि मैं सत्य को नहीं छोड़ सकता। लक्ष्मी ने कहा कि तो मैं आपके घर नहीं रह सकती यह कह कर लक्ष्मी चली गई।

दूसरे दिन रात मे एक आदमी ने राजा को जगाया। राजा ने पूछा कि तुम कौन हो। उसने कहा कि मैं बल हूं। जहां लक्ष्मी नहीं रहती वहां बल नहीं रहता तुम संसार में देखलो कि जिनके पास लक्ष्मी है उसको रिश्तेदार, मित्र, सम्बंधी सब प्यार करते हैं दुखों में दौड़े चले आते हैं। गरीब, निर्धन की कोई सहायता नहीं करता। बल तो लक्ष्मी के साथ रहता है मैं तुम्हारे यहां कैसे रह सकता हूं आपने दरिद्र देवता खरीदकर लक्ष्मी को निकाल दिया। राजा ने कहा कि मैं सत्य को नहीं छोड़ सकता चाहे तुम रहो चाहे जाओ। बल भी चलते बने।

तीसरी रात्रि में एक स्त्री ने राजा को जगाया और पूछने पर कहा कि जहां लक्ष्मी होती है वहीं बल रहा करता है और जिनके पास यह दोनों चीजें होती हैं वहीं बुद्धि रहती है तुम देखते नहीं कि निर्धन कितनी ही बुद्धि की बातें करें उसकी कोई नहीं सुनता बल्कि आवाजें कसते हैं कि बुद्धिमान होता तो लक्ष्मी को क्यों खो देता सौ बावलों का बावला वह मनुष्य हो जाता है। तुमने दरिद्र देवता खरीद लिये। लक्ष्मी और बल तुम्हारे पास से चले गये अब बुद्धि रह जावे तो भी तुम्हारी कोई बात नहीं सुनेगा मैं अपना क्यों अनादर कराऊ या तो दरिद्र देवता को वापिस करके इन को बुलाओ वरना मैं भी नहीं रहती। राजा ने सत्य को छोड़ने से इन्कार किया और बुद्धि चली गई।

चौथी रात को धर्म आदमी के रूप मे आया और राजा को जगाया। राजा के पूछने पर बताया कि मै धर्म हूं जहां लक्ष्मी होती है वहां बल रहता है और जहां यह दोनों होते हैं वहां पर बुद्धि रहती है और वहीं पर धर्म रहता है आपने दरिद्र देवता खरीद कर इन तीनों को खो दिया भला फिर मैं यहां रह कर क्या करूँ विना पैसे दान धर्म कुछ नहीं हो सकता मुझे रखना हो तो इनको वापिस बुलाओ मगर वे तभी वापिस आ सकते हैं जब दरिद्र देवता को वा पस करें। राजा ने साफ जवाब दे दिया कि मैं सत्य को छोड़ने में असमर्थ हूं चाहे प्राण चले जायँ। यह सुनकर धर्म भी चलते बने।

पांचवें दिन रात्रि में एक बूढ़े आदमी ने राजा का हाथ पकड़ कर जगाया। और राजा के पूछने पर कहा कि मैं सत्य हूं आपने दरिद्र देवता लेकर लक्ष्मी, बल, बुद्धि और धर्म को घर से निकाल दिया। भला बताओ बिना इन सबके मैं किस काम का मैं आपके पास नहीं रहना चाहता क्योंकि मेरी शोभा तो इन चारों के साथ रहती है। यह सुनते ही राजा ने दौड़ कर उस आदमी का हाथ पकड़ लिया कि मैं तुमको नहीं जाने दूंगा आपके ही लिये मैंने सब कुछ छोडा और मुसीबतों को सर पर लिया। आपको यह कहते लज्जा नहीं आती। अगर मैं सत्य का पालन नहीं करता तो अपने मन्त्रियों का कहना मानकर दरिद्र देवता को नहीं खरीदता सत्य के पालने के लिये दरिद्र देवता को खरीदा इसीके

लक्ष्मी, बल, बुद्धि; धर्म को जाने दिया अब आप कहते हो कि मैं तुम्हारे घर नहीं रहता। इतने दुख उठाकर मैं तुम्हें कैसे जाने दूगा। सत्य ने कहा वास्तव में तुमने मेरे लिये सब मुसीबतें उठाई है मैं नहीं जाऊंगा। सत्य रह गया।

अगले दिन धर्म आये और कहा कि आपने घर से सत्य को नहीं जाने दिया धर्म तो बिना सत्य के रह नहीं सकता मैं अब कहाँ रहूं मेरा तो वहीं वास होता है जहां सत्य वास करता है। राजा ने कहा कि आपका घर है न तो मैंने जाने को कहा न रहने को इन्कार करता हूँ।

अगले दिन बुद्धि आई और कहा कि राजन्! आपने सत्य रख लिया इससे धर्म वापिस आ गया और जहां ये दोनों रहते है वहीं मैं रहती हूं मैं यहां से कभी नहीं जाऊंगी मैं तो यहीं रहूंगी।

तीसरे दिन बल भागे हुये आये और राजा से क्षमा मांगी और कहा कि बल तो वहीं वास करता है जहां सत्य,धर्म,और बुद्धि रहती है। सच्चे,धर्मात्मा बुद्धिमान के साथ ही बल रहता है।

अन्त में चौथे दिन लक्ष्मी हाथ जोड़े खड़ी है कि महाराज मेरा अपराध क्षमा करो कि जहां सत्य; धर्म, बुद्धि बल होता है लक्ष्मी उसके यहां हाथ जोड़े खड़ी रहती है आपने इन चारों को रख लिया मैं यहां से नहीं जा सकती। राजा ने कहा कि संसार में तेरे कारण ही सब शत्रु होते हैं तेरे कारण ही सब गये थे इसलिये मैं तुझको रखना नहीं चाहता। देवि! तुझे मैं दण्डवत करता हूं अब तो ये सब तेरे बिना आगये फिर तेरे मोह में ये तेरा साथ देंगे मैं तुझे हर्गिज नहीं रक्खूंगा। लक्ष्मी ने कसूर की माफी चाही और कहा कि मेरी शोभा इन्हीं के साथ है और पैरों मे पड़ गई तो राजा ने घर में रहने की आज्ञा दी।

कहानी का सारांश यह है कि सत्य के पालन करने में लक्ष्मी, बल, बुद्धि और धर्म की हानि उठानी पड़ती है। मगर जो सत्य का पालन कर लेते है तो ये सब पदार्थ स्वयं ही आजाते है।

सत्य के पालन करने वालो! इस कहानी को ध्यान पूर्वक पढ़ना सत्य के पालन करने में आपको अवश्य कष्ट होगा जैसाकि युधिष्ठिर हरिश्चन्द्र आदि को हुआ मगर अंत में विजय सत्य की ही है। ईश्वर भारतवासियों को बल दें कि यहां के मनुष्य पहले की तरह सत्य वादी बनें और सत्य के पथ से न डिगें।

भारतमाता तुमने ही राजा हरिश्चन्द्र, राम, युधिष्ठिर, भरत जैसे सपूत पैदा किये जिससे इस देश का सिर ऊंचा है।

कहानी नं० १७

जहाँ चाह वहाँ राह
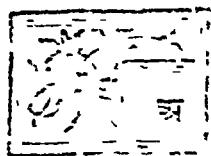
अर्जुन और कर्ण दोनों बराबर के योद्धा थे। संसार में यह बात देखी जाती है कि अपने बराबर वाले की बड़ाई सुनकर मनुष्य प्रसन्न नहीं होता बल्कि उसे बुरा लगता है। जब ही तो रामायण में भगवान राम ने वन में जाते समय सीता जी को उपदेश दिया था कि मनुष्य स्वभाव है कि वह अपने बराबर वाले की बड़ाई से प्रसन्न नहीं होता—हे सीते! तुम भी भरत जी जब राजगद्दी पर बैठ जावें तब उनके सामने मेरी बड़ाई न करना। भला भरत जी जैसे तपस्वी और त्यागी महात्मा के लिए भगवान राम ने सीता को ऐसा उपदेश दिया फिर दूसरे मनुष्यों के लिए आप लोग समझ सकते हैं कि उनको अपने बराबर वाले की बड़ाई सुनकर क्यों न बुरा होगा।

भगवान कृष्ण कर्ण दानी की प्रशंसा हमेशा किया करते थे कि कर्ण के बराबर कोई दूसरा दानी नहीं होगा। अर्जुन कर्ण की प्रशंसा सुनकर मन में दुखी होता था पर कृष्ण से कुछ कहता नहीं था। एक दिन कृष्ण कर्ण के दान की प्रशंसा कर रहे थे अर्जुन से न रहा गया और उसने कहा कि आप कर्ण की प्रशंसा किया करते हैं क्या आप बतला सकते हैं कि मेरे दरवाजे से कौन वापिस चला गया। कृष्ण समझ गये कि अर्जुन को कर्ण की तारीफ अच्छी नहीं लगी। अर्जुन को शिक्षा देनी चाहिये कि कर्ण और अर्जुन में क्या फर्क है। उस वक्त कृष्ण चुप हो गये।

६ माह बाद एक ब्राह्मण की स्त्री मर गई बरसात का मौसम था। ब्राह्मणी मरते समय अपने पति से कह गई कि मुझे चन्दन की लकड़ी से जलाना। ब्राह्मण पहिले अर्जुन के पास आया और कहा कि मेरी स्त्री का देहान्त हो गया वह मरते वक्त कह गई है कि उसका दाह संस्कार चंदन की लकड़ी से करना आप चंदन की लकड़ी दाह संस्कार को दिलादें। अर्जुन ने तुरंत भण्डारी को हुक्म दिया कि जितनी लकड़ी पंडित-जी चाहें उतनी दे दी जावें। भण्डारी लकड़ियों के भण्डार में गया पर भगवान कृष्ण ने योग सिद्धि से भण्डार में चंदन की लकड़ी एक भी नहीं रखी। भण्डारी ने अर्जुन से कहा कि महाराज चंदन की लकड़ी समाप्त हो गई। ब्राह्मण को चंदन की लकड़ी कहां से दूं। वर्षा हो रही है सूखी लकड़ी कहां से दी जावे। अर्जुन इसके बारे में सोचने लगा। ब्राह्मण को देर होती थी घर में स्त्री मरी पड़ी थी। ब्राह्मण स्वभाव के भी तेज थे क्रोध में भर गये और कहा कि लकड़ी नहीं है और तुम इंतजाम भी नहीं कर सकते तो मुझको उत्तर दे दो मैं किसी दूसरे दानी के पास जाता हूं। अर्जुन ने कहा कि महाराज आप तो क्रोध मे भर गये मुझे सोचने तक की मोहलत नहीं देते। ब्राह्मण ने

कहा कि जिसके घर में मुर्दा पड़ा हो उसके दिल से पूछो दूसरों के दुखों को आप नहीं जान सकते। यह कह कर ब्राह्मण वहां से चल दिया और राजा कर्ण के पास आया उस से भी वही सवाल किया जो अर्जुन से किया था। कर्ण ने फौरन भण्डारी को हुक्म दिया कि लकड़ी दे दी जावे । भण्डारी ने आकर देखा तो वहां भी चंदन की एक भी लकड़ी नहीं थी। भण्डारी ने कर्ण से कहा कि महाराज चंदन की लकड़ी खत्म हो गई। कर्ण ने कहा कि शीघ्र खातीको बुलाकर चंदनके शहतीर व किवाड़ मकान से निकलवालो। भण्डारी व मंत्री आदि ने कहा कि महाराज लाखों रुपये के महल खराब हो जायेंगे यह आप क्या करते हैं। राजा ने कहा कि मकान फिर बन सकते हैं मगर यह समय फिर नहीं मिल सकता। भला एक ब्राह्मण को मैं दाह संस्कार के लिये चंदन की लकड़ी न दे सका तो मुझे कलङ्क लग जायगा। त्यौरी बदल कर कहा कि फौरन हुक्म की तामील की जावे। मकान तुड़ाकर शहतीर और किवाड़ दे दिये जावें। फौरन तामील पूरी हुई राजा कर्ण ने ब्राह्मण से क्षमा चाही कि आप को कुछ देर इंतजार करना पड़ा। ब्राह्मण शहतीर वगैरह ले गया और चिता बनाकर संस्कार शुरू कर दिया। कृष्ण तो अर्जुन को शिक्षा देना चाहते थे। अर्जुन को अपने साथ वायुसेवन के बहाने उसी तरफ ले गये जिधर ब्राह्मण दाह संस्कार कर रहा था। चंदन की लकडियों के जलने से बड़ी सुगंधि उठ रही थी। अर्जुन ने कहा कि चंदन की बड़ी सुगंध आ रही है। आगे जब पहुंचे तो वही ब्राह्मण संस्कार करता मिला अर्जुन ने भी पहिचान लिया। कृष्ण ने पूछा कि ब्राह्मण देवता चंदन की लकडी कहां से मिली इसकी सुगंधि दूर तक फैल रही है। ब्राह्मण ने कहा कि राजा कर्ण से चन्दन की लकडी मिली। कृष्ण ने पूछा कि इतनी बरसात में क्या इतनी सूखी लकडी भण्डार में मिल गई अर्जुन के यहां तो एक लकडी भी भण्डार में नहीं मिली। ब्राह्मण ने कहा कि महाराज भण्डार में तो कर्ण के भी चंदन की लकडी नहीं थी। जब भण्डारी ने आकर जवाब दिया कि भण्डार में लकडी खत्म हो गई तो कर्ण ने शीघ्र उत्तर दिया कि मकान के शहतीर उतार कर दे दो। नौकरों ने कहा कि लाखों रुपये के मकान खराब हो जायेंगे मगर कर्ण ने एक नहीं सुनी फौरन मकान के शहतीर और किवाड़ उतरवा कर दे दिए और नौकरों को यह जवाब दिया कि मकान फिर बन सकते हैं मगर यह समय फिर नहीं मिलेगा। कर्ण जैसा दानी होना कठिन है धन्य है उसकी माता को जिसने उसे जन्म दिया।

कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि अर्जुन तुम उस रोज नाराज हो गए थे और कहा था मेरे घर से भी कोई वापिस नहीं जाता आप कर्ण की क्यों तारीफ करते हैं। यह सत्य है कि तुम भी दानी हो मगर कर्ण जैसी लगन तुम्हें दान में नहीं है। अगर तुम्हारी लगन भी कर्ण जैसी होती तो तुमको भी यह बात सूझती कि मकान के शहतीर और किवाड़ तुड़वा दिये जावें। क्या तुम्हारे महल मे चन्दन की शहतीर नहीं थीं सब बात यह है कि जिसको जिस काम की लगन होती है उसको ही उस काम के पूरा करने की बातें सूझ आती हैं। देखो कर्ण को यह लगन है कि उसके घर से कोई मांगने वाला वापिस

नहीं आये तभी तो उसको शीघ्र ही सूझ आई और तुरंत किवाड़ तुडाकर चन्दन की लाकड़ी उसको दे दी।

सत्य है काम की लगन होना चाहिये रास्ता ईश्वर उसके लिये निकाल देते हैं।

कहानी (१८)

झूठी निन्दा स्वयं के लिये हितकर होती है।

क मौलवी साहब हज को जाना चाहते थे उनकी पुत्री सुंदर और जवान थी जिसको साथ नहीं ले जा सकते थे इस तलाश में थे कि कोई विश्वास पात्र सज्जन और धर्मात्मा मिल जावे तो उनके पास लडकी को छोड जाऊं। बहुत तलाश से एक सज्जन जो बड़े ईश्वर भक्त थे जिनकी प्रशंसा धर्मात्मा होने की प्रसिद्ध थी पता लगा। उनसे जाकर रखने को प्रार्थना की उन्होंने जवान लड़की रखने से इन्कार कर दिया क्योंकि दूसरे की लड़की की बडी जिम्मेदारी होती है इस लिए लडकी को नहीं रख सकते थे। उस शख्स ने फिर किसी सज्जन की तलाश की मगर कोई विश्वासपात्र मनुष्य नहीं मिला। पहले वाले शख्स से जाकर कहा मुझे हज जाना जरूरी है और लडकी साथ जा नहीं सकती, आपसे ज्यादा कोई विश्वासपात्र मिलता नहीं इसी लिए आप ही लडकी रखने की कृपा करें। उसके कहने पर लड़की रखली और हज करने चले गये।

लडकी सुन्दर थी उसे देख कर उस शख्स की नियत बिगड गई और उससे अपनी शादी करने का निश्चय कर लिया।

संसार में काम देव का रोकना बड़ा कठिन बतलाया है। हिन्दू धर्म में जवान माता और बहिन के पास एकान्त में बैठना मना किया है। इतना सावधानी रखा है। जब वह शख्स हज से वापिस आया और अपनी लड़की मांगी तो उसने देने से इनकार कर दिया। लडकी वाले ने कहा कि मैंने आपकी नकी की बडा तारीफ सुनी थी तभी लडकी आपके पास रख कर गया था आप यह क्या कहते हैं। उसने बहुत समझाया और उसकी भलमनसाहत की तारीफ की मगर उन्होंने एक नहीं सुनी। और लड़की देने पर राजी न हुये। लडकी के पिता ने पञ्चायत बुलाई पञ्चों ने भी समझाया। कहीं कामी पुरुषों पर किसी नसीहत या उपदेश का असर होता है? वह लडकी देने पर राजी नहीं हुआ। पञ्चो ने कहा कि भाई यह तो बदल गया और इसकी नियत में फरक आ गया तुम अदालती कारवाई करो। पञ्चों में

से एक बोला इनको शाह साहब के पास ले जाओ शायद उनके कहने से यह मान जावे और लड़की वापिस दे दे। उसने कहा कहीं भी ले चलो मैं लड़की वापिस नहीं दूंगा। वह दोनों शाह साहब के पास चले रास्ते मे लोगों ने पूछा कहां जा रहे हो? लड़की वाले ने सब हाल कह दिया उन लोगो ने कहा कि शाह साहब बड़े बदनाम हैं शराबी जुआरी और व्यभिचारी बताया जाता है वह क्या समझायेंगे। यह सुनकर वह दोनों लौटने लगे। रास्ते में वही आदमी जिसने शाह साहब का पता दिया था मिला और बोला कि शाह साहब के पास नहीं गये। उन्होंने कहा कि शाह साहब की लोग बहुत बुराई कर रहे हैं उनके पास जाकर क्या करेंगे। उसने कहा कि बुराई झूठी है तुम जरूर जाओ। तब दोनो शाह साहब के यहां पहुंचे। बोतल भरी हुई रक्खी थी और कांच का गिलास भी बोतल पर रखा था। यह देखकर उनको यकीन हो गया कि यह शराब पीते हैं और लोग ठीक कहते है इनसे क्या स्वाद करवायेंगे वे लौटने लगे। शाह साहब ने उनको बुलाया और पूछा कि आप कैसे आये थे और क्यो लौटने लगे? उन्होंने सब किस्सा अपने आने और लौटने का सुनाया तब शाह साहब ने कहा कि भाई बोतल में पानी भर रखा है जिसको मैंने शराब पीना मशहूर कर रखा है। बुराई अगर झूठा हो तो उससे फायदा पहुँचता है नुकसान नहीं पहुँचता और भलाई अगर सच्ची भी हो तो उससे नुकसान पहुंच सकता है। देखो इन साहब की नेकी और सज्जनता की बड़ी शोहरत थी और वास्तव मे यह बड़े अच्छे आदमी थे। इसीसे तुमने धोखा खाया और अपनी लड़की इनके पास रख कर हज करने चले गये। अगर इनकी बदनामी मेरी तरह होती तो तुम अपनी लड़की को इनके सुपुर्द करके कभी नहीं जाते जो आदमी बदनाम होते हैं सब लोग उनसे चौकन्ने रहते है और उनका कोई विश्वास नहीं करता। इनकी नेकनामी ने इनको भी नुकसान पहुंचाया और तुमको भी। भाई नेकनामी की शोहरत खराब है सज्जन अपनी बुराई से प्रसन्न रहते है और उन सज्जन से कहा कि ऐसा काम दुनिया मे मत करो जिससे संसार मे बुराई फैले तुम संसार से सब का विश्वास उठाना चाहते हो बहुत से लोग अपनी बड़ाई सुनकर खुश होते है और वह बड़ाई उनसे अच्छे काम कराती है तुम लड़की वापिस करदो और आइन्दा से किसी भी जवान लड़का को अपने घर मे न रखना। शाह साहब का कुछ ऐसा असर हुआ कि लडकी उसने वापिस देदी और आइन्दा के लिये प्रतिज्ञा करली कि किसी की जवान लडका को अपने घर में नहीं रखूंगा।

संसार में मनुष्य बुरे आदमियों से इतना नुकसान नहीं उठाते जितना कि नेक पुरुषों से धोखा खा जाते है। तुलसीदासजी के लिये मशहूर है कि जब उनकी प्रशंसा जगत में बहुत फैली तो एक वेश्या से कहा कि तुम शहर मे मेरे साथ निकल जाओ वेश्या ने साधू का कहना मानलिया और उनके साथ शहर मे निकल गई। रुई मे जैसे आग फैलती है उसी प्रकार बुराई संसार में फैलती है। सारे शहर में शोहरत हो गई कि तुलसीदासजी बड़े खराब है आज लोगों ने उनको वेश्या के साथ जाते देखा। कुछ सज्जनों ने तुलसीदासजी से आकर कहा कि आज शहर में आपकी बड़ी

[illegible] ने कहा कि उन्होंने कहा मेरा इसमें ही भला है। लोग मुझे भजन नहीं करने देते थे अब मनुष्य कम आवेंगे और भजन करने का समय मिलेगा।

अर्थात् ज्ञानी का मत है कि झूठी बुराई हानि नहीं पहुंचाती। उनको [illegible] हैं जो झूठी बुराई फैलाते हैं।

(कहानी १६)

— मित्रता —

एक ऋषि के गुरुकुल में द्रोणाचार्य व राजा द्रुपद शिक्षा पाते थे। इन दोनों में मित्रता हो गई। पहिले जमाने में राजा और निर्धन के पुत्र एक ही गुरुकुल में पढ़ते थे और सब एक अवस्था में रखे जाते थे जिससे राजकुमार प्रजा के सब दुःखों को समझते थे। क्योंकि गुरुकुल में सब दुख उठाने पड़ते थे। कहा है

जिसके न हो पैर बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई ॥

आज कल के महाराज कुमार राजा बनकर कभी दुखियों के दुख से वाकिफ नहीं होते और उनकी प्रजा दुखी रहती है। जब तक भारत अपनी पुरानी संस्कृति को न अपनायेगा तब तक इसकी अवस्था नहीं सुधरेगी।

जब राजा द्रुपद जंगल में द्रोणाचार्य के साथ जाते और वहां के दुखों में द्रोणाचार्य उनकी मदद करते तो द्रुपद कहा करते कि देखो जब मुझे गुरुकुल से निकल कर राज्य का काम सौंपा जावेगा तब दूसरे के कष्टों का पूरा ध्यान रखेगा और आपकी मित्रता को कभी नहीं भूलूंगा। और भी सेवा मुझसे आप लेंगे वह सेवा करूंगा। द्रोणाचार्य कहते कि महाराज कुमार पहले तो जो वायदा आप कर रहे हैं वह बचपन का है कानून भी इस वायदे को नहीं मानता फिर आप ही कह देंगे कि हमने बचपन में ऐसा कह दिया होगा फिर सिद्धान्त यह है कि मित्रता बराबर वालों की होती है। आप राजकुमार और मैं निर्धन ब्राह्मण का पुत्र हूं। गुरुकुल से निकल कर आप राजा होंगे और मैं निर्धन रहूंगा क्योंकि सच्चे ब्राह्मण का आभूषण निर्धनता है। धनवान मनुष्य धार्मिक व तपस्वी नहीं हो सकते,तभी तो किसी ऋषि ने सच कहा है—

"कि सुई के छेद में से ऊँट का निकलजाना सम्भव है मगर धनवान मनुष्य धर्मात्मा नहीं हो सकते अपवाद इसमें जरूर हो सकता है।

आपकी और मेरी मित्रता क्या? यह तो बचपन की बातें हैं। द्रुपद ने कहा कि ऐसा कभी नहीं होगा मैं आपकी मित्रता को कभी नहीं भूल सकता। द्रोणाचार्य

ने कहा कि शास्त्रों की बात झूठ तो कभी नहीं होती अगर आप ऐसे ही रहे जैसा कह रहे है तो आप अपवाद ही कहे जायेंगे।

राजा द्रुपद विद्या पढ़कर गद्दी पर बैठे। द्रोणाचार्यजी बाणविद्या के गुरु बने मगर ब्रह्मतेज का अभिमान था किसी राजा के पास न जाकर जंगल में निर्धनों को विद्या पढ़ाया करते थे किसी लड़की से जो बाणविद्या में निपुण थी इनका विवाह हुआ जब यह कन्या थी तो इसको एक कुत्ता काटने को दौड़ा इस लड़की ने अपने धनुषबाण से इस तरह बाण छोड़े कि बाणों से कुत्ते का मुंह भर गया और वह काट न सका और कुत्ते के चोट भी न आई द्रोणाचार्य ने वह कौतुक देख कर ही इससे विवाह किया था इनके एक पुत्र अश्वत्थामा नामक हुआ। जो बड़ा होने पर कौरव पांडव के साथ धनुषविद्या पढ़ते थे। गुरु कृपाचार्य इनको विद्या पढ़ाते थे एक दिन किसी बात पर अश्वत्थामा से पाण्डव नाराज हो गये और प्रति दिन की तरह इनको दूध नहीं पिलाया तो यह रोते हुये अपनी माता के पास आये इनके घर दूध नहीं होता था इनकी माता ने सत्तू में गुड़ घोल कर बहका दिया कि दूध पीओ अश्वत्थामा बच्चे थे उन लोगों के सामने जाकर कहा कि तुमने दूध नहीं दिया तो मेरी माता ने दूध दे दिया। उनको क्या पता था कि माता ने बहला दिया है पांडव वगैरह ने हँसी उड़ाई यह दूध थोड़े ही है यह तो सत्तू में गुड़ घोल दिया है इस पर अश्वत्थामा को दुख हुआ माता के सामने जाकर रोने लगे इतने में द्रोणाचार्य भी आगये अश्वत्थामा को रोता देखकर रोने का कारण पूछा उनकी स्त्री ने बतला दिया। यह मालूम होने पर द्रोणाचार्य को दुख हुआ कि मुझे धिक्कार है कि इतनी विद्या पढ़ कर भ मैं अपने पुत्र को दूध नहीं दिला सका। जब द्रोणाचार्य ज्यादा दुख मानने लगे तब उनकी स्त्री ने कहा कि महाराज आप बड़े ज्ञानी हैं ब्राह्मणों का तो निर्धनता आभूषण है। आपने कई बार गुरुकुल की बातें सुनाई उनसे पता लगा कि आपके मित्र राजा द्रुपद हैं और उन्होंने आपसे वायदा कर रखा है कि जब भी कभी जरूरत हो मुझसे कहना आपके जरा जाने की देर है किस बात की कमी रह सकती है। द्रोणाचार्यजी पुत्र के मोह में फसे हुये थे फौरन समझ में बात आ गई और राजा द्रुपद के पास चल दिये और दरवान से कहा कि राजा को इत्तला दो कि आपके मित्र द्रोणाचार्य मिलने आये हैं। दरवान ने जाकर इत्तला की कि एक साधू लम्बा चौड़ा श्यामवर्ण नंगा दरवाजे पर खड़ा है और आपको अपना मित्र बताता है। सभा भरी हुई थी बाहर के भी राजा आये हुये थे राजा को मित्र शब्द बुरा लगा और दरवान को बुलाने का हुक्म दिया द्रोणाचार्यजी जब सभा में गये तो राजा ने मान नहीं किया न खड़े हुये और न मित्र जैसे प्रेम से मिले ही। द्रोणाचार्य जी समझे बहुत दिनों की बात हो गई राजा ने मुझको पहिचाना नहीं और हंस कर कहा कि राजा द्रुपद आपने मुझे पहिचाना नहीं मैं वही आपका मित्र द्रोणाचार्य हूँ कि जो अग्निऋषि के गुरुकुल में पढ़ते थे और आप कहा करते थे कि जब मैं राजा हो जाऊँगा तो आपकी सेवा करूँगा। राजा

कहानी नं० २०

देश, काल और पात्र को देखकर दान करो

एक धर्मात्मा सेठजी ने गर्मी में प्याऊ पानी पीने के लिये बिठाई। रास्ता आम था, सैकड़ों मुसाफिर वहां होकर निकलते थे और ठण्डा पानी पीते थे एक दिन एक कसाई एक गौ को काटने ले जारहा था मारने वाले मनुष्य को पशु भी पहिचानते हैं। साधुओं के पास पक्षी हिरन चले आते हैं पर पर शिकारी को देखते ही भागते हैं। विचारों का असर जरूर पड़ता है। गाय कसाई के हाथ से अपने को छुड़ा कर भागी कसाई भी पीछे भागा। गर्मी बहुत थी मौत के भय से गाय इतने जोर से भागी कि कसाई के हाथ नहीं आई प्यास से कसाई बेहाल हो गया। प्याऊ नजर पड़ी जाकर पानी पिया प्यास बुझ जाने से गाय के पीछे दौड़ा, गाय को पकड़ लिया और मार डाला जब सेठजी की मृत्यु हुई तो धर्मराज ने चित्रगुप्त से सेठ के धर्म और पापों की रिपोर्ट मांगी। चित्रगुप्त ने कहा कि इन सेठजी को गाय के मारने के पाप का हिस्सा मिला है यह नरक जावेंगे। सेठजी घबराये और कहा कि महाराज मैं हिन्दू धर्म का मानने वाला जहां गाय की पूजा की जाती है मैं गाय को मारने में कैसे शरीक हो सकता हूँ। चित्रगुप्तजी किसी और के धोखे में मेरा नाम गलत बता रहे हैं दुबारा जांच करने पर भी सेठजी गाय के मारने के पाप के भागी माने गये। सेठजी ने कहा कि मुझे समझाओ मैंने गाय कैसे मारी मैं तो स्वप्न में भी गाय नहीं मार सकता। तब सेठजी को पूरा हाल पौ बैठाने और कसाई का गाय को ले जाते हुये छुड़ा कर भागना और सेठजी की पौ पर कसाई का पानी पीकर फिर गाय पकड़ने की शक्ति मिलने आदि की कथा सुनाई। सेठ जी ने धर्मराज से कहा इसमें मेरा क्या क़ुसूर है मैंने तो प्यासों को पानी पिलाने को पौ बिठाई थी मगर मैंने कसाई को पानी पिलाने को पौ नहीं बिठाई थी अगर भूखों को भोजन कराया जाय और कोई भूखा भोजन करने के पश्चात चोरी करे तो इसमें खिलाने वाले का क्या दोष। कसाई ने मेरी पौ से पानी पीकर गाय मारी तो कैसे मैं कसूरवार हो सकता हूँ। धर्मराज ने कहा कि भाई दान में बड़ी सावधानी करनी चाहिए। कमाने के मुकाबले में खर्च करने में बड़ी बुद्धि की ज़रूरत है। आज कल भारत में बहुत दान होता है लेकिन बिना विचारे दान करने से भारत की क्या दुर्दशा हो रही है। तुम देखते नहीं कि हट्टे कट्टे संसार में मौज कर रहे हैं। यतीम बच्चे अपाहिज रोटी कपड़े को तरस रहे हैं देखो कितना नुकसान पहुंच रहा है जिसके कर्म से जितनी हानि होगी उतना ही उसको पाप लगेगा। अगर तुम पौ बैठाते समय उस नौकर को हिदायत कर देते कि डाकू चोर कसाई को पानी मत पिलाना, तो वह क्यों कसाई को पानी

पिलाता और गाय मारी जाती तुम्हारी असावधानी से ही गाय मारी गई है तुमको इसका फल भोगना पड़ेगा वरना संसार में बुराई फैल जावेगी। संसार में बिना विचारे दान होने लगेगा। सेठजी ने बहुत कुछ प्रार्थना की मगर धर्मराज ने यह कसूर काबिल माफी नहीं बताया क्योंकि कोई मनुष्य लापरवाही से रेल को लड़ा दे और उससे मुसाफिर मर जावें तो बतलाओ उस लापरवाही का उजर सुना जा सकता है। जिस भूल से जितनी हानि होती है उसी के अनुसार दण्ड दिया जाता है दान देने में देश, काल और पात्र को न विचारा जावेगा और मनुष्य बिना विचारे दान करते रहेंगे तो संसार में बड़ी बुराई फैल जावेगी। आपके सामने भारत की मिसाल मौजूद है इसलिए दान देश, काल और पात्र को देख कर ही करना चाहिये।

——o——

(कहानी २१)

मनुष्य को दण्ड उसकी ज्ञानावस्था के अनुसार मिलता है।

—oo—

एक साधु तालाब के किनारे तप करते थे। बड़ा उत्तम स्थान था और शाम को कथा कही जाती थी साधु विद्वान के अतिरिक्त योगी भी थे। गर्मी का मौसम था। एक दिन एक शिकारी हिरनी के पीछे पड़ा, हिरनी जान बचाने भागी शिकारी ने भी पीछा किया। भागते भागते दोपहर के बारह बज गये शिकारी भी धूप और प्यास से व्याकुल हो गया और बिचारी हिरनी भी घबरा गई प्यास के कारण तालाब में पानी पीने लगी। साधु इसको देख रहे थे कि शिकारी घण्टों से परेशान हो रहा था हिरनी मार नहीं खाती थी। जब हिरनी ने पानी पीने को मुँह पानी पर रक्खा तो साधु ने शिकारी से कहा देखता क्या है अब देर मत कर मारले, बहुत देर से हैरान और परेशान हो रहा था अब तुझे मौका मिल गया। शिकारी ने कहा कि प्यासी हिरनी के गोली नहीं मारूँगा। इतने में अचानक आसमान से बिजली गिरी। साधू तथा शिकारी दोनों साथ साथ मर गये। शिकारी को स्वर्ग भेजने और साधु को नरक भेजने की आज्ञा हुई। साधु ने धर्मराज से कहा कि यह अन्धेर कैसा है कि मैंने तमाम उम्र ईश्वर भक्ति और योग किया और कोई पाप भी नहीं किया मुझे नरक का हुक्म और इस शिकारी ने तमाम उम्र अनगिनती जानवर मारे हैं यह स्वर्ग भेजा जा रहा है। धर्मराज ने कहा कि यहां अन्याय नहीं हो सकता। अन्याय मनुष्य अज्ञानता, मोह और लालच से कर सकता है मैं अन्याय क्यों करूं मेरे लिये सब बराबर हैं। साधु ने पूछा कि मुझे किस कर्म के बदले नरक में और शिकारी को स्वर्ग में भेजा जा रहा है धर्मराज ने

कहा कि शिकारी ने जो जानवर अब तक मारे अज्ञानता से मारे इसके शुभ कर्म अच्छे न होने से ऐसे माता पिता के यहां जन्म लिया जो मांसहारी थे इसको शिक्षा ही नहीं मिली कि मारने से पाप लगता है और किसी को न मारना चाहिये। साधु ने कहा कि महाराज यह शिक्षा ईश्वर ने सब मनुष्यों को दी है कि अपना सा दुख सब मनुष्यों का समझना चाहिये जिस तरह कानून की अज्ञानता नहीं मानी जाती। उसी तरह शिकारी की अज्ञानता नहीं माननी चाहिये धर्मराज ने कहा कि यह साधारण ज्ञान इसने मनुष्य तक ही समझा तभी यह मनुष्य को नहीं मारता बहुत आदमी ऐसे है जो कि मानते है कि पशु पक्षियों में जीव नहीं है। अब विद्वानों ने यह निश्चय किया है कि पशु पक्षी कीट पतंगों में भी जीव है इसलिये शिकारी ने तो अज्ञानता से पाप किया इससे इसको नरक में नहीं भेजा गया मनुष्य जन्म को इसने सार्थक नहीं बनाया था मगर इससे एक शुभ कर्म मरते समय ऐसा होगया जो इसे स्वर्ग भेजा जा रहा है। मेरा नियम यह है कि शरीर छोड़ते समय जीव की जो इच्छा हो वह पूरी कर दी जाती है और ईश्वर की याद में शरीर छोड़ने से पिछले अशुभ कर्म नाश हो जाते है जब शिकारी और तुम पर बिजली पड़ी और मृत्यु हुई उस वक्त शिकारी के दिल मे यह दया आई कि हिरणी प्यासी है प्यासी को मारूंगा तो अधिक दण्ड मिलेगा। प्यासी हिरणी को नहीं मारना चाहिये तुमने तमाम उम्र योग और तप किया तुम्हारी बुद्धि पवित्र होनी चाहिये थी मगर तुमने साधु होते हुये भी शिकारी से यह कहा कि "बहुत परेशान हो चुका देखता क्या है मार"। दिल मे दया नहीं रखी जितना जो ज्ञानी होगा उतना ही पाप कर्म का फल उसे अधिक मिलेगा अगर ज्ञानियों को कड़ा दण्ड न दिया जावे तो संसार में पाप बहुत बढ़ जावें क्योंकि बुद्धिमानों के कर्म का अनुकरण अज्ञानी पुरुष करते हैं तभी तो यह कहावत चली आती है कि 'यथा राजा तथा प्रजा'। भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है कि राजा और बड़े आदमियों को पाप कर्म नहीं करना चाहिये क्योंकि छोटे आदमी बड़ों की नकल करते हैं। देखो बच्चे वही नकल करते हैं जो अपने बड़ों को करते देखते है। जिसके बड़े बूढ़े तोलने का काम करते है उसके बच्चे भी तराजू का खेल खेलते है।

कहानी का सारांश यह है कि मृत्यु के समय जैसे विचार होंगे वैसा ही फल मिलेगा।

(कहानी २२)

मित्र की परीक्षा

दो धनाढ्य घराने के लड़कों में बड़ी दोस्ती थी। साथ २ भोजन करते और साथ २ रहते। विद्या पढ़ कर अपने घर चले गये और अपना कारोबार सँभाल लिया। फिर मिलना तो बहुत कम हो गया किन्तु पत्र व्यवहार

रहता था। अरसे के बाद यह भी कम हो गया। पत्र व्यवहार न रहने पर भी उनके प्रेम मे कोई अन्तर नहीं आया। समय का चक्कर पड़ा उनमें से प्रेमसिंह नाम के मित्र की आर्थिक अवस्था बहुत खराब होगई। यहां तक कि खाने कपड़े के लाले पड़ गये। एक दिन बच्चे भूखे रह गए। उनकी स्त्री ने कहा "बच्चे भूखे हैं अब तो आपको अपने मित्र के पास जाना पड़ेगा क्योंकि बच्चों का दुःख नहीं देखा जाता। आप कई बार कह चुके हैं कि मेरा मित्र बड़ा धनवान है सिर्फ उनके पास जाने की देर है। प्रेमसिंह ने कहा कि मैं तुम्हारा कहना करूंगा वैसे चिट्ठी भेजना भी काफी हो सकता था किन्तु मिले बहुत अरसा होगया। इसलिये खुद ही जाता हूं। दो चार दिन उधार से काम चलाना। यह कह कर वहां से चल दिया दूसरे दिन मित्र के गांव में पहुँचे। कपड़े फटे हुये थे, जूते तक पैरों में नहीं थे कांटे लगकर पैर लोहू लुहान हो रहे थे इस चिंता में पड़ गये कि इस अवस्था में मित्र के घर कैसे जाऊं और गाँव के बाहर बैठ गए। एक जाने वाले आदमी से कहा कि भाई यहां के मालिक गांव से कहना कि आपका प्रेमसिंह नाम का मित्र आया है। मगर उसकी हालत ऐसी नहीं कि आपके घर इस टूटे फूटे हाल से आवे और आपको लज्जित करे। अगर आप गांव से बाहर मिल लें तो बड़ी कृपा होगी। उस आदमी ने जब प्रेमसिंह की बात सुनाई और उसकी गिरी हालत का नकशा खींचा तो मित्र की आंखों से आंसू गिरने लगे। सब काम छोड़कर नौकरों को यह हुक्म दिया कि कपड़े और स्नान को जल लेकर फौरन आओ मैं जाता हूँ। वह मित्र बड़ी जल्दी प्रेमसिंह के पास पहुंचे और उनकी दुर्दशा देखकर बहुत रोए और कहा कि मेरे रहते आपने यह दुःख उठाया मेरा जन्म बिगाड़ दिया मैं नरक का अधिकारी हो गया क्योंकि हमारे शास्त्र यही कहते हैं कि जिसका मित्र दुखी है वह पाप का भागी है। रामायण में भी यही लिखा है .

जे न मित्र दुःख होहि दुखारी . तिनहि विलोकत पातक भारी।

रोते २ अपने हाथ से कांटे निकाले। इतने मे नौकर सब सामान लेकर पहुंच गया। मित्र ने स्नान कराकर कपड़े पहनाए और फूलों की माला पहनाई, मोटर में बिठलाकर घर लाए भगवान कृष्ण सुदामा जी की कहानी भारतवासी जानते हैं इसमें केवल इतना भेद रह गया भगवान् ने चुपके से सुदामा के घर ऐश्वर्य के सामान भेजे थे इस मित्र ने यह सोचकर कि जब प्रेमसिंह की आर्थिक अवस्था का यह हाल है तो बच्चे वगैरा सब दुःख पाते होंगे फौरन धन आदि पदार्थ उसी वक्त भेज दिए और घर पर कहला दिया कि प्रेमसिंह बहुत दिनों में आये हैं १५ दिन तक ठहराऊंगा किसी बात की चिंता न करें। मित्र ने बहुत कुछ उपलम्भ दिए कि मेरे रहते आपने ये दुःख क्यों उठाए, मेरा तो स्वप्न में भी यह खयाल नहीं था कि आपकी आर्थिक अवस्था इतनी खराब हो जावेगी आपके पिता तो ४०/,५०) ६०) लाख रुपये छोड़ गए थे प्रेमसिंह ने कहा भाई ईश्वर की लीला अपार है जरा सी देर में भगवान राजा को रंक और रंक को राजा बना सकते हैं।

१५ दिन बाद प्रेम सिंह को खूब धन देकर सवारी में रवाना किया रास्ते में रात को एक नगरी में ठहरे रात को राजा मर गए वह मरते समय कह गये कि मेरे कोई पुत्र नहीं है सुबह को जो भी अर्थी के सामने सबसे पहले आदमी आजावे उसे राजगद्दी बिठला देना उस के कर्म में राज्य होगा उसको मिल जावेगा।

भगवान् की लीला देखिए कि जब दिन फिरते है तो इस तरह फिरते हैं प्रेमसिंह घर की जल्दी की वजह से दिशा जंगल को जंगल में चला गया लौटते वक्त राजा की अर्थी के सामने सबसे पहला आदमी वही आया और उसे राजगद्दी पर बैठा दिया और प्रेमसिंह राजा बन गया। दौरा सबसे पहले अपने मित्र के गाँव में किया डेरे वगैरा तने हुए थे सब राज ठाठ जुड़े थे उसको आशा थी कि मेरे मित्र को जब पता लगेगा तो वह खुश होकर मुझसे मिलने आवेगा मैं बड़ा आदर करूँगा। बहुत इन्तजार के बाद जब उसका मित्र नहीं आया तब अपने मंत्री को बुलाने भेजा और कहलाया कि आपका मित्र राजा होगया है और वह आपसे मिलना चाहता है क्या आप वहाँ चलने की कृपा करेंगे? राज नियम से वे मजबूर है वरना वे खुद आते। मंत्री ने जाकर उनके मित्र से सब समाचार कहे तब उसने कहा कि मेरी तरफ से राजा साहब को धन्यवाद देना और मेरी ओर से माफी माँग लेना कि मुझे मिलने की फुरसत नहीं है इस उत्तर को सुनकर राजा आश्चर्य में पड़ गए। जब मेरी आर्थिक अवस्था इतनी खराब थी तबतो सब कामों को छोड़कर भागे हुए आए। आज मैं राजा हूं लोग मुझसे मिलने को अपना सौभाग्य समझते हैं इस समय मित्र ने यह उत्तर दिया कि मुझे अवकाश नहीं है? यह उत्तर सुनकर राज नियम तोड़कर राजा अकेला अपने मित्र के यहाँ पहुँचा मित्र देखकर भी अपना काम करता रहा और राजा की ओर ध्यान न दिया। राजा मित्र से चिपट गया और कहा कि मैं इस रहस्य को नहीं समझ सका कि मेरी गिरी हालत में इस प्रकार मिले और राजा होने की हालत में इस तरह मिल रहे हो। मित्र ने कहा कि भाई अब आप राजा हो गए अब आपको मेरी जरूरत नहीं। बड़े २ राजा आपके मित्र होने का दावा करेंगे जब मेरी जरूरत थी उस वक्तमुझे मित्र के नाते मिलना चाहिए था। भाई संसार में रिश्ते और मित्र अब धन के रह गए सत युगी समय नहीं रहा उस कृष्ण सुदामा से कैसे मिले थे जब मनुष्य की हालत ठीक रहती है इसके रिश्तेदार रिश्तेदारी निकालकर रिश्तेदार बनने में अपना गौरव समझते हैं और जब मनुष्य निर्धन हो जाता है तो रिश्तेदार भी रिश्ता बताने में संकोच करते है।
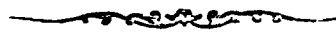
कहानी २३

मनुष्य का धन से लोभ

भगवानदास नामी मनुष्य के धनसिंह धर्मसिंह कुटम्बसिंह तीन मित्र थे. इनमें से वह धनसिंह से बहुत प्रेम करता था धनसिंह के लिये कुटम्बसिंह और धर्मसिंह से लड़ पड़ता था और उनका साथ छोड़ बैठता था दूसरा नम्बर कुटम्बसिंह के प्रेम का था धर्मसिंह की परवाह नहीं करता था मामूली जान पहचान रखता था एक दिन भगवानदास को एक मामले में पुलिस ने पकड़ लिया और मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया मजिस्ट्रेट ने पूछा आप को कौन जानता है कि आप अच्छे आदमी हैं भगवान दास ने फौरन अपने मित्र धनसिंह का नाम बतला दिया जिससे बहुत ही प्रेम करता था चपरासी धन सिंह के मकान पर पहुँचा और मित्र की गवाही देने और चलने को कहा धन सिंह ने कह दिया कि मैं उनको नहीं जानता। चपरासी ने कहा अदालत तक तो चलिये। अदालत में चलने से भी साफ इन्कार कर दिया कि मैं जब उन को जानता ही नहीं तो क्या चलूँ चपरासी ने धन सिंह का उत्तर जाकर कह दिया मजिस्टेट ने कहा कि भगवान दास धनसिंह ने आने और गवाही देने से इन्कार कर दिया अगर वारन्ट से भी बुलवाओगे तो ऐसे बे मुरव्वत गवाह से भलाई की क्या आशा कर सकते हो कोई और गवाह हो तो बताओ। तब कुटम्बसिंह का नाम बतला दिया। सिपाहीकुटुम्बसिंह के पास पहुँचा वह अदालत तक तो आ गया मगर मजिस्ट्रेट के सामने इन्कारी हो गया कि मैं इनके कर्मों के बाबत कुछ नहीं जानता तब तो भगवानदास को बड़ा दुःख हुआ कि जिनके लिये मैंने बड़े बड़े पाप किये आज मेरा साथ छोड़ बैठे कोई मदद नहीं करता। धर्मसिंह के लिये दिलमें सोचा कि उससे क्या आशा रखूं। कि इतने में क्या देखता है कि धर्मसिंह भागा हुआ आ रहा है पहिले तो भगवान दास को चिंता हुई कि यह मेरी क्या गवाही देगा मगर धर्मसिंह ने मजिस्ट्रेट के सामने उसके सब शुभकर्मों को सुनाया और बतलाया कि इन्होंने दुखियों के दुःख दूर किये हैं भूखों को भोजन कराया नंगों को कपडे पहनाये यह बड़े अच्छे आदमी हैं। मजिस्ट्रेट ने उसके गुण सुनकर बहुत इज्जत के साथ बिदा कर दिया।

कहानी का सारांश यह है कि मनुष्य सबसे ज्यादा प्रेम धन से करता है। धन के ऊपर माता पिता बन्धु आदि से लड़ पड़ता है मगर यह मृत्यु के समय बिल्कुल साथ नहीं देता। जहाँ का तहाँ पड़ा रहता है। भाइयो धन पर विश्वास मत करो यह यहीं रह जावेगा।

दूसरा नम्बर कुटुम्ब का है इसके लिये मनुष्य कितने पाप करते हैं मगर कुटुम्ब भी मरघट तक साथ देते हैं। जीव के साथ सिर्फ शुभ या अशुभ कर्म जाते हैं इसी धर्म को मनुष्य भूले हुये हैं और गफलत में अपनी आयु को खो रहे हैं। माता, पिता

औ बन्धु सब संसार में रह जाते हैं हमारे साथ पाप या पुण्य जायेंगे इसीलिये शुभ कर्मों को करो ताकि अगले जन्म में दुःख न पाओ। सुख दुःख संसार में इसी पाप पुण्य के साक्षी हो रहे हैं।

कहानी २४

परोपकार ही जीवन है

एक राजा मरते समय यह वसीयत कर गया कि जब दाह, संस्कार को अर्थी उठाई जावे तो शहर से निकलने पर दरवाजे पर जो आदमी आता हुआ सामने आवे उसी को राज्य पर बिठा देना। जब राजा की अर्थी शहर के बाहर कोट से निकली एक साधु लंगोट लगाये शहर में आता हुआ मिल गया. राजा की वसीयत के अनुकूल वह राज्य का अधिकारी हो गया. उसे दाह कर्म करने को कहा गया और राज्य अधिकारी को सूचना दी गई गई। साधु ने राज्य लेने और दाह कर्म करने से इन्कार कर दिया. साधु विद्वान थे। मन्त्रियों ने समझाया कि महाराज ईश्वर की तरफ से राज्य आपको सोंपा गया है. राजा की वसीयत पूरी करनी पड़ेगी। साधु ने बहुत कुछ इन्कार किया और अपने को अयोग्य बताया। प्रजा व मन्त्री नहीं माने साधु को पकड़ कर साथ कर लिया साधु का नियम के अनुसार राज्य तिलक कर दिया गया साधु ने कहा कि आप लोग जबर्दस्ती राज्य दे रहे है। मगर मेरी भी दो बाते प्रजा व मंत्रियों को मंजूर करनी पड़ेगी अगर मेरी बात मंजूर करो तो मैं इस बड़े बोझ को उठा सकता हूँ। प्रजा व मंत्रियों ने कहा कि अब आप राजा हो गये आप की उचित आज्ञा जरूर मानी जावेगी साधु ने कहा कि प्रजा से जो कर वसूल हो कर आता है वह प्रजा के ही काम आना चाहिये।

मेरे और मुलाजमान के खर्च के लायक रखकर सब प्रजा के लिये खर्च कर देना चाहिये आप इसको उचित मानते है या नहीं। सबने कहा महाराज मानते है। तब साधु ने कहा कि जब मैं कहाँ करूँ कि मंत्रियो छुटने दो तो इसका अर्थ आप लोगों को यह लगाना होगा कि गरीबों को खाना और कपड़े दिये जावे। वर्तमान बच्चे कोई कष्ट न पावे। अन्धे अपाहिज जो काम करके नहीं खा सकते उनको भोजन और कपड़े दिये जावे। राज्य में कोई भूखा व नंगा न रहे सबने कहा महाराज ऐसा ही होगा। दूसरी बात कहिये साधु ने दूसरी बात यह कही कि खजाने में मेरी लंगोटी तूमड़ी खड़ाऊ रखी जावे और रोज मुझे उनके दर्शन कराये जावे। यह भी सब मान गये। राज्य काज सम्भाल लिया।

आठवे दिन खास इजलास होता था मन्त्री वगैरह बड़े २ आदमी राजा से मिलने आते थे। प्रधान मन्त्री से राजा कहते कि प्रधान मन्त्री जी छुटने दो। हुक्म लगते ही भोजन व कपड़ा बटना शुरु होने लगता। दूर २ के राजा व प्रजा यह कीर्ति सुन

जावें। बराबर दान पुण्य होता रहता था बड़ी प्रशंसा दूर २ तक फैली मनुष्य का स्वभाव है कि दूसरे की बड़ाई सुनकर प्रसन्न नहीं होता खास कर राजे महाराजे एक दूसरे राजा की बड़ाई नहीं सुन सकते इसी तरह एक राजा ने यह इलजाम लगा कर कि साधु राजा है इसलिये भूखे नंगों को खिलाकर रियाया को आलसी बना रहा है। वह फौज चढ़ा लाया और घोषित कर दिया कि २४ घण्टे में राज्य हवाले करो तुम्हारा राज्य प्रबन्ध बहुत खराब है। राजा ने जवाब लिख दिया कि क्या मेरी किस प्रजा ने आप से शिकायत की है कि राज्य प्रबन्ध ठीक नहीं है।

न्याय की बात तो वह सुनता है जो न्याय करना चाहते हो जबरदस्ती राज्य छीनना चाहता हो वहां न्याय का क्या काम। वह बकरी के बच्चे वाली बात था कि बकरी का बच्चा नदी में पानी पी रहा था इतने में एक भेड़िया आ गया बकरी के बच्चे को देख कर उसके मुह में पानी आ गया कि मुलायम गोश्त है। भेड़िये ने ललकार कर कहा कि क्यों बकरी के बच्चे तमाम नदी के पानी को गदला कर दिया। तुझे दूसरे की फिकर ही नहीं कि कोई दूसरा भी पानी पियेगा। बकरी का बच्चा देखते ही सहम गया कि कि आज मौत आई। हुजूर पानी तो आपकी तरफ से बहकर मेरी तरफ आ रहा है अव्वल तो गन्दा पानी नहीं फिर मैं नीचे की तरफ पानी पी रहा हूं आपकी तरफ गन्दा पानी कैसे जा सकता है। भेड़िये ने कहा क्यों बे तूने मुझे गाली क्यों दी बकरी के बच्चे ने हाथ जोड़कर कहा कि हुजूर मैंने गाली कब दी। भेड़िये ने कहा कि ६ महीने हुये तब गाली दी थी। बकरी के बच्चे ने कहा कि हुजूर मेरी उम्र ३ माह की है मैं ६ माह पहिले गाली देने कैसे आ जाता भेड़िये ने कहा तू ने नहीं तो तेरी मा ने गाली दी होगी हमारे सामने बक बक किये जाता है फौरन गर्दन पकड़ कर मसोस डाली।

साधु ने इस अल्टीमेटम को सुन कर कहा कि आज कल अपना कसूर कोई नहीं मानता उस राजा ने कहा तमाम इन्तजाम खराब कर दिया,अब पूछते हो कि आप से किसने शिकायत की साधु को राज्य करने की कब योग्यता हो सकती है। फौज को हुकम दिया कि चढाई कर दो।

जब फौज नजदीक आगई तब प्रधान मन्त्री ने कहा कि हुजूर दुश्मन फिर आ गया कल राज्य पर अधिकार कर लेगा सब किले छिन जावेंगे आप कैसे राजा है कि शत्रु की कुछ फिक्र ही नहीं और छुटने दो की रट लगा रक्खी है। राजा ने कहा कि अपना कर्तव्य किये जाओ और किसी बात की चिन्ता न करो। अगले दिन शत्रु किले में घुस आया और राजा को गिरफतार कर लिया। राजा ने हंस कर कहा कि भाई मुझे क्यों गिरफ्तार करते हो इस राज्य को आप संभालो मैंने तो शुरु में ही बहुत इन्कार किया था मुझे तो जबरदस्ती राज्य सौंपा गया है। मैं सिर्फ एक बात चाहता हूं कि खजाने में मेरी लंगोटी तूम्बी और खड़ाऊ रक्खी है जिनको मैं रोज देखा करता था उनको दे दो और मुझे कुछ

नहीं चाहिये। राजा ने तीनों चीजे हवाले करके पुछा कि आप रोज इन तीनों चीजों को क्यो देखते थे। साधु ने कहा कि मैं रोज इनको देखकर अपनी असलियत को याद करता था कि यह राज्य तो ईश्वर का दिया हुआ है मेरा इस पर कोई हक नहीं है अब आप तुम राज्य करना मगर एक बात सर्वदा याद रखना कि जब तक राज्य करो छुटने देना। राजा ने 'छुटने दो' का अर्थ पुछा तो साधु ने कहा कि राज्य से अपने निर्वाह मात्र आमदनी लेकर बाकी प्रजा को लौटा दिया करना और वह इस तरह पर कि राज्य मे कोई भूखा नंगा न रहे ऐसी विद्या प्रजा को देना जिससे कोइ दुराचार या चोरी आदि न करे। इस राज्य को आपके बड़े साथ नहीं ले गये और आप भी साथ नहीं ले जाओगे सिर्फ शुभ या अशुभ कर्म साथ जायेंगे। इसकी प्रतिदिन याद कर लिया करना कि जब संसार में आया तब मुट्ठी बांधे यानी शुभ कर्मों के फल साथ लेकर आया जब संसार से जावेगा तो खाली हाथ जावेगा। देखते नहीं हो कि कितने राजा संसार से उठ गये क्या साथ ले गये और आप भी क्या साथ ले जावोगे यह कह कर साधु लंगोटी लगा कर और तुम्बी लेकर जंगल मे चले गये।

कहानी का सारांश यह है कि हर एक मनुष्य को प्रति दिन यह सोचना चाहिये कि १- मैं कौन हूं २- क्यों आया हूं ३- क्या कर रहा हूं ४- क्या करना चाहिये

१ मैं कोन हुं से यह सोचो कि मैं पेदा होने से पहिले कहां था और मरने के बाद कहां जाऊंगा? और मरने के बाद क्या होता है? यह जीवात्मा अमर है इसका नाश कभी नहीं होता। मरने के पश्चात यह जीव कर्मानुकूल जन्म लेता है।

२ क्यों आया : दु:ख से छुटने के लिये आया हुँ

३ क्या कर रहा हूँ? किसी को दु:ख मत दो न दु:ख का बीज बोओगे न तुम्हे दु:ख होगा।

४ क्या करना चाहिये। दूसरे के दु:ख दूर करने चाहिये

कहानी २५

जैसा भोजन करोगे वैसा ही मन बनेगा।

एक साधु तपस्या किया करते थे राजा के यहां भी उनका बड़ा मान था। साधु जिसके यहां भोजन करते थे उसको उपदेश भी करते थे क्योंकि साधु भी भोजन मुफ्त में नहीं करने मुफत मे भोजन करना पाप समझते है। एक दिन एक सुनार ने साधु को भोजन कराया। साधु ने भोजन के बाद उपदेश कर दिया कि चोरी नहीं करनी चाहिये मगर सुनार की सारी उम्र चोरी करते गुजरी थी जरा सी देर के उपदेश का क्या असर होता। सुनार के भोजन पानी तक मे चोरी के संस्कार घुसे हुये थे

साधु ने भोजन कर लिया तीन घंटे बाद जब भोजन का असर हुआ साधु के मन मे विचार पैदा हुआ कि मै कितना पागल हूं कि ससार के प्रत्यक्ष सुखो को तो छोड रक्खा है और मनुष्य जीवन को तप आदि करने मे खो रहा हूं मरने के बाद क्या होता है। कोई भी तो मरने के बाद यह नहीं बतला सकता कि किस अच्छे कर्म का सुख और किस पाप का दुःख मिल रहा है तमाम उम्र अपनी व्यर्थ खो दी। संसार के मनुष्यो की तरह मै भी आनन्द लूटता और सब ऐसा ही करना चाहिये अब तक की उमर गई सो गई। अब तो संसार का सुख भोगना चाहिये यह सोच कर कि सुख बिना धन के नहीं मिल सकते धन प्राप्त करने के लिये चोरी की सूझी। धूनी से उठ कर राज्य महल की तरफ चल दिया। साधु का राज्य भवन मे बड़ा मान था क्योंकि साधु कभी किसी से कुछ मांगते नहीं थे रात के बारह बजे थे पहरेदार ने टोका कि कौन है साधु ने कहा कि चोर पहरेदार ने सोचा कि महाराज हंसी से चोर कह रहे है पहरेदार चुप हो गया आगे जनानी ड्योढी पर रोका गया यही जवाब वहाँ दे दिया पहरेदार ने सोचा कि भला साधु कैसे चोर हो सकते है इस तरह साधु राजमहल मे पहुंच गये महारानी साहब का हार खूंटी पर टंग रहा था उसको उतार कर चल दिये कि यह जवाहरात से जड़ा हार लाखों का है सेरी उमर के लिये काफी होगा। लौटते हुये भी पहरेदारो ने टोका साधु ने वही जवाब दे दिया कि चोर है। धूनी पर जाकर हार गाड दिया और सो गये कि सुबह इसे बेच कर मोटर लूंगा उम्दा बंगला मोल लेकर किसी सुन्दरी से विवाह करूंगा। नोकर आदि रख कर खूब भोग भोगूंगा और मनुष्य जन्म को सफल बनाऊंगा। सुबह हार खूंटी पर न मिलने से महल का मन गया कि यह कीमती हार किसने चुराया पुलिस ने शक मे बांदी नौकरो को पकड लिया और मार पीट शुरू करदी और कहा कि सिवाय तुम्हारे कौन रनवास में आता है तुममे से किसी ने हार चुराया है। सिपाहियों ने कहा कि रात को बारह बजे साधु जरूर आये थे। राजा ने कहा कि महात्मा बड़े तपस्वी और निर्लोभी है वह चोरी नहीं कर सकते। सुबह हुई साधु शोच इत्यादि से निपट कर बैठे। सुनार के अन्न का अंश जब शरीर से निकल गया तब मन में विचार पैदा हुआ कि मैने हार चोरी करके कैसा बुरा काम किया है यह मेरा विचार कैसे हो गया कि मरने के बाद कर्मो का फल मिलता है या नहीं। संसार मे प्रत्यक्ष दीख रहा है कि कोई राज्य सुख भोग रहा है कोई दाने २ को मुहताज है, कोई रोगी है, कोई निरोगी है, कोई सुन्दर है, कोई कुरूप है कोई जन्म का अन्धा बहरा है किसी को कोढ़ हो रहा है यह सुख दुःख ही तो पुकार २ कर बतला रहे है कि यह कर्म फल मिल रहे है। अगर जीवों को सब कर्मो की याद रखने मे भलाई होती तो प्रभु सब मनुष्यों को याद रखाते भूलने मे ही जीवों का भला है याद रखने मे नहीं। अगर बीमारी के दुःख बने रहते तो अच्छे होने पर सुखों का आनन्द भी नहीं मिलता। इस संसार की रचना करने वाला बड़ा ज्ञानी है तभी तो पांच तत्वों से कैसी अद्भुत रचना की है अपने मन को धिक्कारा और हार लेकर राजा के पास पहुंचे कि मैं चोर हूं इन बेकुसूरों को जिनको पकड़ रक्खा है छोड़ दो इनका दण्ड मुझे दे दो। राजा विस्मय मे पड़ गया कि साधु ने ऐसा बुरा कर्म क्यों किया। साधु से कहा कि आप ऐसा बुरा काम नहीं

कर सकते मैं तलाश करांता हू कि कल आपने भोजन किसके यहां किया । तलाश से पता लगा कि सुनार के यहां भोजन किया कि जिसके लिये मशहूर है कि अपनी मां की नथ में से भी सुनार चुरा लेता है। सुनार के भोजन पानी तक में चोरी के संस्कार चले जाते हैं। तभी तो मनु जी ने जिनकी कमाई अच्छी नहीं उनका भोजन करना मना किया है। पहिले समय में भोजन पर ही बड़ा ध्यान रखा जाता था क्योंकि भोजन का शरीर और मन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। अब भोजन पर कोई विचार नहीं रखता तभी तो संसार में पाप बढ़ते जाते हैं। जिनकी कमाई ठीक नहीं उनके यहां का भोजन मत करो । तभी शास्त्रों में लिखा है कि—

जैसा खावे अन्न, वैसा बने मन ।

भारतवासियों इस कथा का मनन करो और अपने भोजन पर पूरा ध्यान रक्खो । देश रसातल को जा रहा है भोजन पर ध्यान न रखने से पाप बढ़ रहे हैं जब तक इस पर ध्यान नहीं दिया जावेगा । पाप कम न होंगे ।

———

कहानी नं० २६

धर्मात्मा क्यों दुःख पाते हैं ?

नारद ऋषि संसार में घूमते रहते हैं जहां जाते प्रजा शिकायत करती कि ईश्वर के घर में बड़ा अन्याय बढ़ गया है जो अच्छे आदमी हैं वह दुःख भोग रहे हैं पापी खूब मौज उड़ा रहे हैं जितने जो अधिक पाप करता है उतना ही अधिक सुख पा रहा है नारद जी सुनते सुनते घबरा गए उनको भी कोई जवाब देते नहीं बना और आखिर यह तय किया कि चल कर भगवान से इसका कारण पूछा जाय । संसार के लोगों से वायदा किया कि भगवान के पास जाकर इसका कारण पूछूंगा जो उत्तर मिलेगा वह तुम लोगों से कहूँगा नारद जी विदा लेकर स्वर्ग को चल दिए भगवान अन्तरयामी हैं नारदजी के प्रश्न का उत्तर देने के लिये एक ब्राह्मण का रूप बनाया कपड़े सब फटे हुवे थे बहुत टूटी हालत में थे नारद जी के साथ हो लिये नारद जी ने पूछा ब्राह्मण देवता कहां जा रहे हो ब्राह्मण ने कहा भगवान ने बड़ा अन्धेर मचा रक्खा है जो जितना पाप करता है कलियुग में वही ज्यादा सुख भोगता है। बेटे पोते धन हाथी घोड़े नौकर आदि से घर भरा हुआ है घर में स्त्री बड़ी सुन्दरी है यह अन्धेर क्या है धर्मात्मा सत्य वादी रोटी कपड़े को तरस रहे हैं नारद जी ने कहा ब्राह्मण देवता मैं भी भगवान से एक बात पूछने जा रहा हूं जहाँ जाता हूं सब यही प्रश्न मुझ से कहते हैं कि यह अन्धेर कैसा ? धर्मात्मा दुःखी और पापी सुखी । चलो अच्छा साथ हुआ रास्ता कट जावेगा रात को एक गांव में दोनों एक धर्मात्मा के घर ठहरे उस धर्मात्मा ने उन दोनों की बड़ी

[illegible] से उठे उस धर्मात्मा का धन जहा [illegible] तो अन्तरयामी रूप से [illegible] सन्दूक लेकर ब्राह्मण देवता चलते बने नारद जी [illegible] ने सोचा कि अच्छा हुआ कि इस दुष्ट से [illegible] न जाने क्या क्या उपद्रव मचाता [illegible] लगे कि ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो मेरी [illegible] मानने लगे धर्मात्मा ने कहा कि [illegible] मेरे कर्मो के साथ साथी थोड़ा ही है आप दिल मे विचार न [illegible] तो इस मे आप का क्या कसूर मेरे भाग्य में आप [illegible] और ब्राह्मण को बुरा भला कहते चल [illegible] में से एक ब्राह्मण देवता [illegible] निकले और नारदजी क्रोध के मारे उस से बोले तक [illegible] पकड़ने के साथ २ पानी [illegible] अपने मकान में नहीं ठहरने देता था जिसके [illegible] सुनाकर भगा देता वे कहते कि इन साधुओं ने ढिक कर रक्खा [illegible] नहीं भाया जाता नारदजी ने कहा कि भाई खाने को मत दो [illegible] तमाशा देखने और दु ख पहुचने [illegible] पूछते पूछते उसके घर गये पोल [illegible] में बैठ गये ब्राह्मण देवता भी वहीं आ बैठे इतने में धनपति घर मे से [illegible] में किसी काम को आये देखते हैं कि दो आदमी पोल मे बैठे है उनसे पूछा कि तुम कौन हो ? बिना पूछे मकान मे कैसे घुस आये [illegible] ने कहा कि सर्दी के मारे दुःख पा रहा हूं रात काटने के बाद चला जाऊंगा रात मे ठहरने की इजाजत दे दी जावे आप का बड़ा अहसान होगा। रोटी पानी कुछ नहीं मांगूंगा। धनपति एक दम गुम हो गये मकान के अन्दर कैसे आये सैकड़ों गालियां दी और धक्के देकर उनको निकाल दिया जब किसी ने न ठहरने दिया तब लाचार होकर नीम के नीचे पड़ गये ऐसी सरदी व दुःख में नींद कहां आती ? बारह बजे उस सन्दूक में से [illegible] जेवर अशरफी रुपया निकाल कर ब्राह्मण देवता ने उस धनपति की छत्त को तोड़ कर उस के घर में डाल दिया नारदजी ने दिल मे कहा कि यह तो पागल मालूम होता है जिस धर्मात्मा ने इतनी खातिर व सेवा की उसके यहाँ से माल चुरा लाया और जिस पापी ने धक्के देकर निकाल दिया और सैकड़ों गालियाँ दी उसके घर में छत्त तोड़ कर धन डाल दिया इसका साथ ठीक नहीं अब इस फिक्र मे नारदजी हो गये कि इसका साथ कैसे छूटे यह तो फिर साथ लग गया। सोचते सोचते दिन निकल आया यह सोचकर कि इससे बोलूंगा नहीं तो यह नाराज समझ कर स्वयं साथ छोड़ देगा बिल्कुल नहीं बोले सुबह नारद जी ब्राह्मण को वहीं छोड़कर चल दिये। रात को बड़े धर्मात्मा सच्चे आर्य राजा के घर ठहरे।

देखते क्या हैं वही ब्राह्मण देवता वहां आ पहुंचे। नारदजी घबराये कि दुष्ट पीछा नहीं छोड़ता आर्य राजा के घर बुढ़ापे में लड़का हुआ था। महाराज कुमार का लालन पालन बड़ी सावधानी से हो रहा था बारह बजे तक राजा साहब तथा नारद जी की धर्म चर्चा होती रही बारह बजे राजा सो गये महात्मा समझ कर उनको राजमल में जाने की रोक नहीं लगाई गई। एक बजे ब्राह्मण देवता उठे महाराज कुमार भी महल में सो रहे थे उनका गला दबा कर मार डाला और चुपके से नारद जी के पास आ लेटे। थोड़ी देर में राजकुमार को मरा देख कर राजमहल में हा हा कार मच गया। बुढ़ापे में ईश्वर कृपा से राजपुत्र हुये थे किस दुष्ट ने उनको मार दिया यह चर्चा सारे शहर मे हवा की तरह फैल गई जब नारद जी के कान में यह भनक पड़ी कि किसी ने महाराज कुमार का गला दबा कर मार दिया नारदजी डर के मारे राज महल से भागे वह देवता भी नारद जी के पीछे भगा शहर में तो नारद जी नहीं बोले शहर के बाहर पहुंचते ही डण्डा लेकर ब्राह्मण देवता के सामने हो गये कि दुष्ट मेरे साथ मत आ नहीं तो तेरा सिर फोड़ता हूं ब्राह्मण देवता ने उस रूप को छोड़कर चतुर्भुज रूप में नारदजी को दर्शन दिये कि नारद जी तुम्हारे प्रश्नों का ही उत्तर देने को तुम्हारा साथ पकड़ा है नारद जी हाथ जोड़ कर कहने लगे कि महाराज मैं तो आपके साथ रहने से कुछ भी नहीं समझा मुझे समझाओ कि धर्मात्मा के यहां से धन आपने क्यों चुराया फिर उस दुष्ट पुरुष जिसने अपने मकान में ठहरने तक नहीं दया और धक्के व गाली देकर निकालने वाले के घर मे छत फाड़ कर धन डाल दिया धर्मात्मा राजा की प्रार्थना पर बुढ़ापे में राज कवंर पैदा किया और फिर उसका गला दबा कर मार दिया. भगवान ने कहा नारदजी सुनो इस धन के अभिमान में मनुष्य क्या २ पाप करते हैं आप से छिपी बात नहीं है कि इस धन के इकट्ठा होने पर धन का अभिमान हो कर मनुष्य ईश्वर तक को नहीं मानते गरीबों पर क्या २ अत्याचार करते हैं धनाडय के घर जाकर देखो कि गरीबों के साथ कैसा व्यवहार हो रहा है मजदूर किस दुखी अवस्था में है गरजै यह है कि कहां तक धनवानों के अत्याचार सुनाये यह धन अच्छी चीज नहीं इसलिये जो मुझे प्यारे हैं उनके पास में जब धन से हानि देखता हूँ तब धन उससे ले लेता हूँ मनुष्य समझते है कि मैंने बड़ा अन्याय कर दिया जो धरमात्मा के यहां चोरी करादी या किसी काम में नुकसान करा दिया। अब तुम देखो जिसके पास से मैं ने धन चुराया है वह बड़ा धर्मात्मा था दुखियों के दुःख से दुखी हो उठता था इसका धन यतीम बच्चों के पालन में अपाहिज वा बेवाओं की मदद करने मे लगता था किसी को दुःख नहीं देता था मगर जब से धन बढ़ा इसे अभिमान ने आ घेरा इसने मेरे भक्त का जन्म बिगाड़ डाला इससे मैंने इसके घर से धन चुरा लिया मूर्ख समझते है कि मैंने अन्याय किया ऐसे अच्छे आदमी को दुःख दिया मगर बुद्धिमान जब विचार करेंगे तब उनको पता लगेगा अब लौटती बार उसके घर देखना कि जीवन मे कैसा परिवर्तन हुआ है। नारदजी ने कहा कि धर्मात्मा के यहां चोरी

का पता लग गया मगर दुष्ट के यहाँ वह धन छत फाड़ कर क्यों डाला भगवान ने कहा कि नारदजी अगर संसार मे मनुष्यों को कर्म फल न मिले तो संसार से शुभ कर्म उठकर अशांति फैल जावे जिस राजा के यहां दुष्टों को दण्ड वा सज्जनों को सुख पहुँचाने की व्यवस्था न होगी तो राज्य जल्द नष्ट हो जावेगा मेरे राज्य मे नियम है कि जो जैसा कर्म करे उसी के अनुसार उसको फल मिले खेती के दृष्टान्त से समझलो कि जैसा बीज बोता है वैसा ही फल पाता है इस मनुष्य ने पहिले जन्म मे बड़े दान पुण्य किये है उसका फल न दिया जावे तो शुभ कर्म कोई भी नहीं करे देखो जो मनुष्य खेती करके अन्न इकट्ठा करके रखले और फिर खेती छोड़ दे तो फिर क्या उस कमाई का अन्न छीन लेना चाहिये उत्तर यही होगा कि जिस मनुष्य ने तुम्हे और मुझे नहीं ठहरने दिया बरसात में और सर्दी के मौसम मे बाहर निकाल दिया यह पहिले जन्म मे बड़ा दानी था उसके फल से ऐसे घर मे जन्म मिला जहाँ संसार के सब सुख मिले अब उस धन के अभिमान मे भूल गया और पापों मे लग गया अब इसको मनुष्य जन्म अर्सा तक नहीं मिलेगा कभी २ शुभ कर्म अब भी कर देता है क्योंकि मनुष्य जन्म के कुछ कर्म ऐसे है जो मनुष्य जन्म, मिलने पर ही उन के फल मिलते है। इसके पहिले जन्म के शुभ कर्मों से यह सुख पा रहे है और इस जन्म में भी कभी शुभ कर्म कर देते है फिर मनुष्य जन्म मिलना भी दुर्लभ है इसलिये उस कर्म का फल इसी जन्म में देना पड़ता है ऐसे पापी बढते हुये और सुखी नजर आते है मगर वास्तव मे उनका बड़ा नुकसान हो रहा है सांसारिक लोग इस रहस्य पर ध्यान न देकर कहते है कि भगवान के घर मे बड़ा अन्धेर है पापी खूब फल रहे है जब ही तो शास्त्रों ने साफ बतला दिया कि पापी पिछले कर्मों से खूब बढते नजर आते है मगर शुभ कर्मों के खतम होते ही जड़ मूल से उसका नाश होता है। नारदजी इस धर्मात्मा को मोक्ष मिलने वाली है यह मोक्ष के दरवाजे पर पहुँच चुका है मालूम नहीं कि इसको क्यो पुत्र की इच्छा हो गई मैने मनमे प्रेरणा की कि सांसारिक पदार्थों से आज तक किसी को न शान्ति हुई और न होगी इस संसार के जाल मे मत फस मगर प्रेरणा का असर न हुआ मै अपने भक्तों की मांग कभी नहीं ठुकरा सकता यहां तक कि संसार के नियम तक को तोड़ देता हूँ इसकी इच्छा अनुकूल पुत्र पैदा कर दिया उसके मोह मे यह ऐसा फसा कि धर्म कर्म सब उठा कर रख दिये। हर समय इसका ही ध्यान करता रहता है। योग में बैठे समाधि लगाने को है पर राज कुमार रो पड़े समाधि सन्ध्या सब रखी रह जाती है।

मैने कई बार मन मे प्रेरणा की और यही उपदेश करने का मेरा नियम है अन्दर से बुरे कामो से बचने और शुभ कर्मों के करने की प्रेरणा कर देता हूँ जो नहीं मानता वही संसार रूपी दुःख सागर मे पड़ कर दुःखों मे फस जाता है मगर यह राजा मेरा भक्त था प्रेरणा पर जब नहीं माना तो इसकी बड़ी हानि देखी कि मोक्ष

सुख इसके हाथ से जाता है मैंने राजकुमार को इससे छीन लिया संसारिक मनुष्य कहेंगे कि मैंने बड़ा अन्याय किया धर्मात्मा राजा के एक ही पुत्र था वह भी मार दिया मगर वास्तव मे उस धर्मात्मा राजा के साथ अच्छा हुआ है नारदजी ने कहा कि राजा के साथ तो खैर आपने अच्छा किया मगर राजपुत्र को जो फिर जन्म का दुःख भोगना पड़ेगा भगवान ने कहा कि अज्ञानी इसको समझते है कि अगर मृत्यु खराब होती तो मै किसी को नहीं देता माता पिता कभी अपने बच्चों को दुःख नही देते मृत्यु तो पुराने कपड़े उतार कर नये कपड़े पहिनने के समान है संसार ऐसा कौन है कि पुराने कपड़ों के बदले नये कपड़े पहिनना पसन्द ना करेगा? दुःख तो जीवों को मृत्यु का होता है कि जिस काम के लिये यह मनुष्य शरीर मिला था वह काम अविद्या की वजह से भूल जाता है. मृत्यु के वक्त उस की आंख खुलती है अगर मनुष्यों को यह ज्ञान हो।

अगर इससे अच्छा मकान व सुख के सामान तय्यार है तो फिर कौन पुराने खराब मकान व वस्त्रों को छोड़ना नहीं चाहेगा देखो जहाँ का टिकिट लेकर मनुष्य रेल मे बैठता हैं जैसी चढ़ने मे जल्दी रहती है वैसी ही अपने मकान पर पहुँचने के बाद उतरने की जल्दी रहती है। इसलिये राजकुमार को इससे भी अच्छी जगह भेज दिया जिसके दोनों माता पिता ऋषि है शुभ कर्मों का फल यही है कि उतम विचार वाले माता पिता के घर जन्म मिल जावे नारद जी ने प्रणाम किया कि धन्य हे प्रभु! मै अविद्या मे पड़ गया था आप के यहाँ अन्धेर नहीं है।

—·—

कहानी नं० २७

बहुत गई थोड़ी रही, थोड़ी भी अब जाय।

बहुत गई थोड़ी रही, थोड़ी भी अब जाय।
कह नटनी सुन मालदेव मधुरा ताल बजाय॥

एक राजा बड़े कन्जूस थे धन खर्च हो जाने के भय से अपनी कन्या की भी शादी नहीं कर रहे थे राजकुमार भी उनकी कन्जूसी के कारण बड़े दुखी रहते थे। एक नट राज सभा में आया कि महाराज मै बड़ा अच्छा तमाशा करता हूँ मेरी नटनी नाचने व गाने में बड़ी चतुर है मेरा तमाशा कराया जाय आप का नाम सुनकर आया हूँ राजा बड़े कन्जूस थे तमाशे कराने में खर्च होता था इन्कार करने में भी राज्य प्रतिष्ठा गिरती थी यह कह कर टालते रहे कि अभी समय नहीं है। छः महीने गुजर गये न तो इन्कार ही करते थे और न खर्च के खयाल से तमाशा ही कराते थे। नट ने मजबूर होकर प्रधान मंत्री से कहा कि हुजूर छः महीने गृह से खाते

[illegible] करते हैं न तमाशा कराते हैं न इन्कार करते हैं आप [illegible] ने साफ उत्तर लिया लीजिये प्रधान मन्त्री ने सब बातें राजा [illegible] तो कई महीने हो गये अब इसको साफ उत्तर दे [illegible] देना चाहिये। प्रधान मन्त्री के कहने पर समय नियत हो गया [illegible] ने तमाशा करायी। ठीक समय पर तमाशा शुरू हुआ, नटनी ने [illegible] गाना और नाची। उसके गाने में बड़ा आकर्षण था एक साधु तप [illegible] रहा गया और वह भी तमाशे में आ गया और गाने व नाच पर [illegible] मन में यह धारणा करली कि तप छोड़ कर इसी नटनी के साथ [illegible]। मानना जन्म किसने देखा है कि जिसके भरोसे पर सारे सुख छोड़ [illegible] नटनी के गाने व नाचने से प्रसन्न हुये वे दिल खोल कर देना चाहते [illegible] राजा की तरफ से होने का रिवाज था राजा बड़े कन्जूस थे नाचने की [illegible] मगर कन्जूसी की वजह से इनाम कुछ नहीं दिया उस से दूसरे [illegible]। १० बजे रात से ४ बज गये बिचारी के पास एक पैसा भी नहीं [illegible] लोग देना शुरू कर देते तब तो इसका मन प्रसन्न रहता और नाच में भी [illegible] होकर नट ने दोहा कहा—जिसका मतलब यह था कि चार बज गये [illegible] गई एक पैसा भी नहीं मिला और तुम अब बाजा वगैरा उसी जोर [illegible] और बाजे के ऊपर मुझको नाचना पड़ता है इस से बाजा धीरे धीरे [illegible] ने दोहा सुन कर कहा।

दोहा

बहुत गई थोरी रही थोडी भी अब जाय ।
कह नटनी सुन माल देव मधुरा ताल बजाय ॥

अर्थात बहुत गई थोड़ी रही इसके लिये क्यों बदनामी कराती है तेरी शोहरत संसार में फैली हुई है उसमें बट्टा लग जावेगा मेरी राय नहीं कि कोई कमी गाने नाचने में की जावे थोड़ी देर में दिन निकलने वाला है अवरा मन इस दोहे को सुनकर साधु ने अपने ऊपर से कम्बल उतार कर नटनी को दे दिया और वहां से चल दिया। राजकुमारी ने गले में सोने का हार उतार कर नटनी के गले में डाल दिया। महाराज कुमार ने भी सोने के कड़े उतार कर नटनी को दे दिये राजा यह देख कर चकित हो गये कि यह क्या बात हो गई। मैंने कुछ भी नहीं दिया रिवाज के खिलाफ बिना मेरे दरयाफ्त किये राजकुमार राजकुमारी ने कैसे जेवर नटनी को दे दिये फौरन हुकम दिया कि नटनी गिरफ्तार की जावे नटनी ने कहा कि हुजूर मेरा क्या दोष है मैं ने तो किसी बात की याचना नहीं की राजकुमार सा० व महाराजकुमारी ने स्वयं ही इनाम दिया है इन से पूछ लिया जावे। महाराजकुमारी व राजकुमार सा० से पूछा गया उन्होंने कहा हमने अपनी इच्छा से इनाम दिया है नटनी दोषी नहीं है उसे छोड़ दिया जावे और हमें जो

चाहें वह सजा दें। राजा ने जेवर देने का कारण पूछा तो दोनों ने कहा कि पहिले साधु से पूछिये कि उसने कम्वल क्यों दिया। फौरन साधु की तलाश हुई थोड़ी दूर जाते ही साधु मिल गये उनको पकड़ कर सभा में पेश किया गया और कम्बल नटनी को देने का कारण पूछा साधू ने सब किस्सा कह सुनाया कि महाराज इस नटनी के गाने व नाचने का असर मेरे हृदय पर यह हुआ कि मैंने तप व योग में अपनी उम्र व्यर्थ खोना समझा मरने के वाद किसी को भी पता नहीं रहता कि पहिले जन्म मे उसने क्या क्या कर्म किये हैं और किस कर्म का क्या फल मिल रहा है अब मै नटनी के साथ रहूँगा। ताकि मुझे प्रति दिन गाना व नाच देखने का अवसर मिलता रहेगा किन्तु जब नट का दोहा सुना कि बहुत गई थोड़ी रही. अब क्यों बदनामी का कलङ्क लगाती है। मुझ को ज्ञान हुआ कि बहुत उम्र तो योग व तप में गुज़र गई थोडो उम्र वाकी है मैं इस भेष को क्यों कलङ्क लगाता हूँ ? संसार को विषयों से आज तक तृप्ति नहीं हुई जब तक यह सांसारिक भोग नहीं मिलते तब तक इनकी चाह बनी रहती है मिलने पर इस में आनन्द नहीं रहता आनन्द तो ईश्वर से मिल सकता है क्योंकि वह आनन्द स्वरूप है जीव के अन्दर आनन्द की कमी है उसकी तलाश मे जीव भटकता है और हर पदार्थ मे आनन्द ढूंढता है और मारा मारा फिरता है साँसारिक पदार्थों में आनन्द नहीं है। राजा ययाति ने हजारों वर्ष दूसरों की जवानी ले ले कर भोग भोगे कि भोग की इच्छा तृप्त हो जावे अन्त को वह भी इसी परिणाम पर पहुँचे कि भोगों से आनन्द नहीं मिलता बजाय तृप्ति के इच्छा भोगों की बढ़ती है अर्थात भोगों से तृप्ति नहीं होती भला मेरी तृप्ति नाच वा गाने से किस प्रकार हो सकती थी अविद्या ने मुझे आ दबाया था। भगवान ने कृपा की कि इस दोहे ने मेरी आँख खोल दी और मैंने तमाशा देखने के बदले में कम्बल दे दिया तब राजा ने अपने पुत्री व पुत्र से आभूषण देने का कारण पूछा लड़के ने उत्तर दिया कि मैं आप की कंजूसी से तंग आ गया था आज विचार करके मै पिस्तौल लेकर बैठा था जब सभा उठेगी तब शोर मचेगा और उस अशान्ति में मैं आप के गोली मार दूंगा और मरने पर राज्य भोगूंगा मगर इस नट के दोहे ने मेरी आँख खोल दी कि बहुत गई थोड़ी रही। क्यों कलंक का टीका लगाते हो तब मैंने सोचा कि आप की ५० साल की उम्र हो गई अब थोड़ी उम्र बाकी रह गई है अगर मैं पिता के गोली मारदूंगा तो इतिहास तक में मेरे खानदान को बट्टा लग जावेगा कि इस खानदान मे बाप को बेटे ने राज्य के लोभ से मार दिया इस देश में यह होता रहता है कि बेटे बाप को राज्य के लोभ से मार देते हैं पिता की आज्ञा से राम राज्य को छोड़ कर वन गये राज्य को गेंद बना कर राम भरत ने ठोकरों से मारा है उसी भारत का एक पुत्र पिता को गोली से मारता है जब कि दस पाँच साल उसकी उम्र बाकी है मृत्यु के बाद राज्य मुझे मिलेगा ही इसलिये मैंने कड़े उतार कर नटनी को दे दिये तब लड़की से हार देने का कारण पूछा गया राज कुमारी ने कहा कि स्वय आप खर्च के ख्याल से मेरा विवाह नहीं कर रहे थे मेरी उमर २४ साल की हो गई थी मजबूर होकर मैंने मंत्री के लड़के के साथ सभा समाप्त होने पर इस गड़बड़ी में भागने का

[illegible] कर लिया था मगर नट के उस दोहे ने मेरी आंखें खोल दी कि बहुत गई थोड़ी रही, अब क्यों कलंक का टीका लगाती है मैंने सोचा कि पिता जी की उमर बहुत हो गई [illegible] उमर बाकी है वह तो कन्जूसी के कारण अपने कर्तव्य को पूरा नहीं करते मगर [illegible] जाति व खानदान को बट्टा लग जावेगा और संसार में कहा जावेगा कि [illegible] की लड़की बिना शादी दूसरे लड़कों के साथ भाग जाती है। उस देश की नारी [illegible] का सिर ऊंचा किया है। यहा कि स्त्री जाति ने आदर्श कायम किया है [illegible] नहीं करूंगी कि माता की कोख लजा जावे एक पाप कर्म से इस नटनी ने [illegible] इसलिये मैंने इसे हार दे दिया राजा ने नटनी को छोड़ दिया और [illegible] किया और अपने को बहुत धिक्कारा साधु की बात का असर हो गया राजकुंवर को राज सौंप कर लड़की का स्वयंवर करके जंगल में जाकर तप करने लगे और जीवन को सार्थक बनाया कभी कभी जरासा उपदेश मनुष्य के जीवन को पलट देता है।

कहानी न० २८

माता का बच्चों पर प्रभाव

एक बड़े विद्वान व धनाढ्य पंडित जी के एक पुत्र बड़े धर्मात्मा थे वह विवाह नहीं करते थे और पूर्ण ब्रह्म चर्य रखना चाहते थे माता पिता की इच्छा थी कि लड़का किसी प्रकार विवाह करले जिससे उनका वंश चलता रहे, तीन ऋण में से एक यह ऋण भी मनुष्य पर रहता है कि पुत्र उत्पन्न करके संसार को कायम रखे। बहुत समझाया, उसके मित्रों से भी कोशिश कराई, मगर लड़का न माना और विवाह करने पर राजी न हुआ। पंडित जी उस नगर के राजा भी थे। प्रजा के दुःख सुखों का बड़ा ध्यान रखते थे। उनके पुत्र के सुपुर्द यह ड्यूटी थी कि रात में घूम कर यह देखा करें कि प्रजा को कोई कष्ट तो नहीं देता। वह लड़का रात को नगर में घूम रहा था एक मकान के पीछे पेशाब करने बैठा उस मकान में तीन लड़कियां बैठी बातें कर रही थी एक ने कहा कि मैं ईश्वर से यह चाहती हूँ कि मुझे पति विद्वान व सुन्दर मिले दूसरी ने कहा कि पति सुन्दर व विद्वान व धनी भी चाहती हूं बिना धन के ईश्वर भक्ति मुश्किल है, तपस्वी ही बिन धन के ईश्वर को याद करते हैं पेट की चिन्ता से गरीबी में ईश्वर याद नहीं आते। तीसरी लड़की ने कहा कि तू भी कुछ ईश्वर से मांग उस लडकी ने उत्तर दिया मैं अन्धी मुझ से सुन्दर व धनाढ्य पुरुष कैसे विवाह कर सकता है तुम्हारी प्रार्थना पूरी हो सकती है। मैं प्रार्थना करके क्या करूं अब मुझे यह आशा ही नहीं कि मुझे सुन्दर व धनाढ्य पति

मिले. स्त्री को इसी चीज की जरूरत होती है यह मुझे मिल नहीं सकती। लड़के ने उस अन्धी लड़की की यह बात सुनकर मन में कहा कि यह लड़की कितनी ईश्वर से निराश है ईश्वर के नजदीक यह तो बड़ी तुच्छ बात है वह तो अनहोनी बातें संसार में दिखा रहे हैं और मन में सङ्कल्प किया कि यद्यपि मेरा विवाह करने का विचार नहीं था मगर इस लड़की को बता दूं कि ईश्वर सब कुछ कर सकते है यह तुच्छ बात उस ईश्वर के नजदीक कुछ भी नहीं घर आकर अपने मित्रों के जरिये माता पिता तक यह बात पहुँचा दी कि मेरे माता पिता विवाह न करने से दुखी होते हैं कि हमारा वंश नहीं चलेगा । मैं विवाह इस शर्त पर कर सकता हूं कि सह देव ब्राह्मण की कन्या जो फलां मुहल्ले मे रहती है उसके साथ विवाह किया जावे। माता पिता इस खबर से बड़े खुश हुये फौरन सहदेव पंडित जी को बुलाया और कहा कि हमारा पुत्र आपकी कन्या से विवाह करने पर राजी हो गया है। उस लड़के के गुण आप जानते है कि कैसा सुन्दर व विद्वान है धन की कमी नहीं राजपुत्री तक से विवाह हो सकता है पहले तो वह विवाह से राजी नहीं होता था ईश्वर की लीला अपार है कि वह अब आप की कन्या से विवाह करने पर राजी हो गया हमने मालूम करके उससे कहा कि वह कन्या अन्धी है इस पर भी वह उसी कन्या से विवाह चाहता है आशा है कि आप भी राजी हो जावेंगे उन्होंने अपनी स्त्री की राय जानने की इच्छा प्रकट की और आकर अपनी स्त्री से सब हाल कहा उस को विश्वास नहीं आया कि राजपुत्र और अन्धी निर्धन कन्या से विवाह कैसे कर लेगे सहदेवजी ने सब बाते सुनाई कन्या की माता ने कहा कि फिर इस में मेरी राय की क्या जरूरत थी ऐसा सौभाग्य लड़की को मिलता तो फौरन शादी करदी जावे। ईश्वर कृपा से विवाह हो गया अन्धी ही हालत मे एक पुत्र भी पैदा हो गया वह लड़की मिलने आई और कहा कि हमने ईश्वर से मांगा तो हमें ऐसे पति नहीं मिले तेरे भाग्य अच्छे निकले कि तुझे विना मांगे सब कुछ मिल गया उसने भी ईश्वर को बडा धन्यवाद दिया लड़की की आंखों का इलाज बराबर हो रहा था बड़े बड़े डाक्टर आकर प्रयत्न कर रहे थे लड़की की भी यही प्रार्थना ईश्वर से थी कि मेरी आंखे ठीक हो जावें जिससे मे पति देव के दर्शन करलूं ईश्वर कृपा से आंखें ठीक हो गई अब सब प्रकार के आनन्द मिल गये उसके बाद २ पुत्र उस कन्या के और हुये जिसमे से एक को लट्टू रखने और दूसरे को तलवार का शौक था। उस की माँ ने पण्डित जी से इस का कारण पूछा कि बड़े लड़के व इसके स्वभाव में इतना अन्तर कैसे है पंडित जी ने ईश्वर की इच्छा कह कर बात टाल दी एक दिन त्यौहार का दिन था भोजन जब आया तो पंडित जी ने बड़े लड़के को अपने पास भोजन कराया और दोनों को अलग बैठाया उस की माँ के कहने पर भी साथ भोजन नहीं कराया लड़कों के सामने वह चुप हो गई अगले दिन तीनों लड़के पाठशाला चले गये उन के पीछे उनकी स्त्री ने जिद पकड़ ली कि जब तक इसका कारण नहीं बतलाओगे कि दो छोटे लड़कों को दूर बैठा कर क्यों भोजन कराया और बड़े लड़के को पास तब तक भोजन

नहीं करूंगी पण्डित जी ने बहुत कुछ समझाया कि इस के मालूम करने का हठ मत कर लिया हठ मशहूर है वह न मानी और भोजन करने की कसम खाली तब मजबूर होकर पण्डित जी ने कहा कि इस टूटी खाट पर पड़ना और मुझे ताले में बन्द करदें और जब लड़के रोटी खाने आवें तो मेरे लिये कहना कि मुझे मारा है इससे रोटी नहीं बनाई और दो चार बुरी बातें मेरे लिये भी कह देना और खबरदार तालो उसको मत दे देना इस तमाशे के बाद मैं तुझे कारण बतलाऊंगा। ऐसा ही किया गया एक लड़का आया कि माता जी रोटी दो उसने उनके पिता जी को २-४ बातें सुना दी और कहा कि मुझे मारा है इस रञ्ज से रोटी नहीं बनाई उस लड़के ने कहा कि पिताजी हमारी माता को मारने वाले कौन थे मेरी तलवार उठा कर लाओ आज बिना मारे नहीं छोड़ूंगा। उसकी मां ने बुरा भला कहा कि तेरे पिता जी के मारने को मैं तलवार लाकर दूंगी दुष्ट ! तब लड़का घर में गया और तलवार लेकर तलाश करने चल दिया दूसरे लड़के के आने और रोटी मांगने पर वही बात कही और लड़के के पिताजी को अपशब्द पहिले से कुछ अधिक कहे लड़के ने कहा कि मेरा दो सेर के वजन का लट्ठ ला पिता जी हमारी माता जी को मारने वाले कौन थे आज इस लट्ठ से उनकी खबर लूंगा। वह भी पिता जी की तलाश में चल दिये इतने में बड़ा लड़का आया उसने भी रोटी मांगी उसको भी वही उत्तर दिया और उसके पिताजी के प्रति अप शब्द ज्यादा कहे लड़का हाथ जोड़ कर माता जी के पैरों में गिर गया कि माता मुझे चाहे जितना दण्ड दे लो पर मेरे पिताजी के प्रति मेरे सामने अप शब्द मत कहो मैं इसे नहीं सुन सकता पुत्र का धर्म यही है कि अपने पिता का अनादर न होने दे इस पर उसकी माता ने जाच के लिये कि यह क्या बात है दो लड़के मारने को तैयार हैं और यह अप शब्द भी नहीं सुन सकता उसके पिता को गालियाँ देने लगी कि तेरे पिताजी ने मुझे मारा है और तू पिता की बुराई नहीं सुन सकता मेरे दुःख से दुःखी नहीं हुआ लड़का रोने लगा कि माता जी आप व पिताजी दोनों मेरे लिये पूज्य देव हैं मैं किसी की निन्दा नहीं सुन सकता आप भोजन न दें मगर पिताजी को आप अप शब्द न कहें यह कह कर भूखा चला गया बाद में दोनों लड़के आये। माता जी ! पण्डितजी इस वक्त नहीं मिले वरना हम उन्हें ठीक कर देते जब मिलेंगे तब देखा जायगा लट्ठ व तलवार रख कर पढ़ने चले गये ताला खोल कर उनकी स्त्री ने तीनों बच्चों के स्वभाव के फर्क का कारण पूछा तो कहा कि जब बड़ा लड़का हुआ तब तुम्हारी आँख ठीक नहीं थी बाद में आंख अच्छी हो गई इन के गर्भ के वक्त तुम्हारी निगाह लट्ठ व तलवार बांधने वाले मनुष्यों पर पड़ी वह तुमको अच्छे लगे थोड़ी देर टकटकी लगाकर देखा उसका असर बच्चों पर पड़ गया यह बतलाना मैं भूल गया था कि गर्भ में तुम को किन २ बातों की सावधानी रखनी चाहिये जिसका नतीजा मेरे सामने है जो भी शिक्षा देनी हो गर्भ में बच्चों को देना चाहिये उसका असर सारी उम्र होता है।

हुँमायूं जब राजमहल में पहुंचे तब बेगम साहिबा अपने पैर पर फूल खोद रही थीं हुमायूं के पूछने पर कहा कि जो बच्चा मेरे हो उसके पैर पर भी ऐसा फूल देखना

चाहती हूँ अकबर उस समय गर्भ मे था उस के पैर पर जब वह पैदा हुआ वैसा ही फूल खुदा हुआ था अमरीका में एक मेम साहब के काला रंग का बच्चा हो गया तहलका मच गया कि अंग्रेज के काला बच्चा कैसे हुआ उसके सदाचार पर शक खड़े किये गये। कि यह बच्चा किसी हब्शी से पैदा हुआ है। मेम साहिब सदाचारी थी एक कमीशन विशेषज्ञों का बैठा कि काला बच्चा कैसे हुआ जब तहकीकात शुरू हुई और जब मेम साहब का कमरा देखा गया तो उस में एक हब्शी की तस्वीर कमरे में सामने टँगी हुई मिली जिस पर रोज मेम साहब की नजर पड़ती थी नतीजा यही निकला की हब्शी का फोटू देखने से बच्चा हब्शी ही के रङ्ग का हुआ जिस रङ्ग का घोड़ा घोड़ी सामने आ जाता है वैसे ही रंग का बच्चा होता है सारथल ठिकाने के ठाकुर साहब घोड़े का वीर्य लेकर रंग मिला कर घोड़ी के अन्दर डाल देते थे वैसा ही बच्चा होता था ऐसा सारथल ठाकुर सा० ने मुझ से जिक्र किया। अभिमन्यु की माता को गर्भ काल ही में चक्र व्यूह रचने की कथा सुनाई थी अर्जुन ने, अर्जुन की स्त्री को नींद आ गई इससे व्यूह से निकलने की बात नहीं सुनाई महा भारत मे ऐसा जिक्र आया है कि आर्य इस विद्या को खूब जानते थे १६ संस्कार इसके साक्षी हैं जब ही भारत ने हरिश्चन्द्र राम आदि रत्न पैदा किये थे।

कहानी का सारांश यह है कि गर्भ की अवस्था मे जैसे माता के विचार होते है वैसा ही असर पड़ता है।

कहानी २६

सत्संग थोडी देर का ही भला

धर्म सिंह नामी गूजर के सात लड़के जवान थे। उसके पूर्वजों के समय से चोरी का पेशा होता था उसके लड़के भी चोरी करते थे धर्म सिंह का अन्त समय आया जान नहीं निकलनी थी बहुत दुःख पा रहा था। बुरे कामों का नतीजा मृत्यु के समय प्रकट होता है लड़के भी अपने पिता के दुःख से दुखी थे अचानक धर्म सिंह को होश हो गया और तुरन्त अपने लड़कों से कहा कि मेरा जीव तुमको उपदेश करने की वजह से अटका हुआ था ईश्वर ने कृपा कर दी। सुनो! अपने खानदान में पुराना पेशा चोरी का चला आता है। धर्म शास्त्रों मे चोरीको बुरा बतलाया है जान बूझ कर जो पाप लेता है उसका दण्ड भी अधिक मिलता है अनजान मे पापों का दण्ड मिलता तो है मगर कम मिलता है इसलिये तुम हरि कथा में कभी मत जाना क्योंकि हरि कथा में पापों से बचने और पाप न करने की शिक्षा दी जाती है। शिक्षा के बाद तुम पाप करोगे तो फिर दण्ड अधिक मिलेगा यह कह कर धर्म सिंह मर गया।

लड़के इस वसीहत का पालन बड़ी सख्ती से करते थे हरि कथा जहाँ होती हो उधर होकर कभी निकलते भी नहीं थे। एक दिन सब भाई रात मे चोरी को जा रहे थे

सामने मन्दिर में हरि कथा पढ़ी जा रही थी गली से इधर उधर जाने का रास्ता नहीं था पीछे लौटने लगे तो पुलिस के सिपाही गश्त करते हुये आ रहे थे मजबूर होकर कानों में उंगली डाल कर मन्दिर के सामने से जल्दी २ निकले रास्ते में बबूल का कांटा पड़ा था बड़े भाई के पैर में कांटा घुस गया कांटा निकालने को कान से हाथ निकालना पड़ा शीघ्र ही कांटा निकाल कर और कान में उंगली डाल कर भागा। भागते २ उसके कान में यह शब्द पड़ गये कि देवताओं की शरीर की छाया नहीं पड़ती आज सब भाईयों को बड़ा दुःख हुआ कि पिताजी के विरुद्ध हरि कथा कान में पड़ गई कई दिन तक अफसोस रहा आखिर कार मन को यह तसल्ली दी की जान पूछ कर हमने कथा नहीं सुनी कुछ शब्द कान में मजबूरी से पड़ गये इस में हमारा क्या दोष है सब भाइयों ने राज महल में बड़ी चोरी की और चोरी का माल तालाब में गाड़ दिया क्योंकि राजा की चोरी थी सारी पुलिस उस की बरामदगी की कोशिश में थी चोर रोज तालाब की तरफ जाकर वापस घर लौटा करते थे इनके मुहल्ले में एक वेश्या रहती थी उस को मालूम हुआ कि राजा की चोरी इन लोगों ने की है बड़े इनाम के बाद आधा राज्य दे देने की घोषणा हो गई वेश्या ने चोरों के घर कहा कि मुझे रात को स्वप्न आया है कि रात में तुम्हारे यहां देवी साक्षात आकर दर्शन देगी होशियार रहना चोर देवी के उपासक होते हैं वेश्या देवी का चतुर्भुज रूप बना कर हाथ में मशाल लेकर रात के १२ बजे चोरों के घर पहुँची और धमकाया कि इतनी बड़ी चोरी कर लाया मेरा हिस्सा अभी तक नहीं दिया मुझे सब हाल मालूम है सारा हाल खोल दूंगी चोर हाथ जोड़ कर पैर में पड़ गये कि देवी अभी हमने राजा के खौफ से माल नहीं बांटा बदस्तूर रक्खा है उसने कहा कि मुझे दिखाओ चोरों ने तालाब में माल पढ़ा हुआ बतला दिया तब उस ने कहा कि मेरा पूरा हिस्सा दिया जावे चोर पैर में पड़ गये कि देवी आप का हिस्सा कैसे ले सकते हैं आप की दया से हमारे सब काम सिद्ध होते है देवी जब चलने लगी और थोड़ी दूर पहुँची हाथ में उस के मशाल थी इस की रोशनी में उस देवी की छाया नजर आई चोरों ने कहा कि हमने कथा में सुना था कि देवतों की छाया नहीं पड़ती इसकी छाया पड़ती है यह देवी नहीं है फौरन जाकर उसे पकड़ लो और बांध कर घर में बन्द कर दिया कि आज इस वेश्या ने सारे कुटुम्ब को फांसी दिलाने के ढंग कर लिये थे हरि कथा की बात उस रोज न सुनते तो नाश का समय आ गया था भगवान ने बचा दिया सुबह हुई मन में सोचा कि पिताजी का यह कहना तो ठीक है कि जानने वाला अगर पाप करता है तो उसको अधिक दंड मिलता है अनजान को दंड कम मिलता है मगर हरि कथा ने आज सारे घर वालों की जान बचाली जरा सी हरि कथा सुनने का यह फल होता है तो जो जन हरि कथा सुनते हैं उन को मोक्ष जरूर मिलता होगा यह विचार कर राजा के पास हाजिर हुये और सारी कथा सुनाई और चोरी का माल पेश किया और कहा कि हम को दंड दीजिये हमने बहुत पाप किये हैं अगर हरि कथा न सुनते तो कभी नहीं बचते राजा ने सोचा कि यह चोर स्वयं माल ले आये मैंने इनको नहीं पकड़ा अपनी प्रतिज्ञा अनुसार आधा राज्य देना चाहिये राजा आधा राज्य देने लगे

तब उन मे से बड़े भाई ने कहा कि जिस हरि कथा ने जान बचाई उसी जरासी हरि कथा के फल से आधा राज्य मिलने लगा अगर हरि कथा ही हमेशा सुनूंगा और सतसंग करता रहूँगा तो दुखों से छुट जाऊँगा आधा राज लेने से इन्कार कर दिया और राजा से माफी माँग कर घर आये और वेश्या को आजाद करके स्वयं हरि कथा में रहने लगे और अपने जीवन को सफल बना लिया सच है कभी कभी थोड़े संत्सग से भी मनुष्य को बड़ा लाभ प्राप्त हो जाता है इसलिये संत्सग ही रहना चाहिये।

कहानी नं० ३०

द्वेष, द्वेष से नहीं प्रेम से शान्त होता है

एक राजा बडे धर्मात्मा थे उन की प्रजा बडी सुखी थी उस राज्य में कोई दरिद्र निर्धन नहीं था प्रजा बिना सन्ध्या व हवन किये भोजन नहीं करती थी सब प्रजा विद्या पढ़ी हुई थी व्यभिचारी मनुष्य कोई नहीं था। उस राजा का छोटा भाई बडा पापी दुष्ट था षडयंत्र रच कर उसने बडे भाई को कैद करना चाहा धर्मात्मा भाई राज पाट उसके लिये छोड कर रानी को साथ लेकर चल दिये और उसी शहर में छिप कर रहने लगे राजा जानते थे कि पापी भाई को राज्य छोड़ने से शान्ति न होगी उसको तब ही चैन आवेगा जब मुझको मरवा देगा। दुष्ट राजा ने खुफिया पुलिस तलाश को छोड़ दी दैवयोग से उस मुसीवत में धर्मात्मा राजा के पुत्र उत्पन्न हुआ यह सोच कर कि अगर मे पकड़ा गया तो मेरे साथ मेरे लड़के को भी दुष्ट मरवा देगा २-३ वर्ष का होने पर एक धोबी को लडका दे दिया रोज जाकर देख आता ८-१० साल का बच्चा हो गया किसी तरह दुष्ट राजा ने अपने भाई का पता लगा लिया और गिरफ्तार करा कर झूठा मुकद्दमा साबित करा कर फाँसी का हुक्म दे दिया जब राजा व रानी को गाड़ी में बैठा कर फाँसी देने ले जा रहे थे उसका लड़का गाड़ी के सामने होकर निकला उसको समझा रक्खा था कि राजा को पता लग जावेगा तो तुम को भी मरवा देगा राजा ने अपनी स्त्री से कहा कि मेरा लड़का इस वक्त मुझे मिले तो आखीर वक्त की नसीहत उससे यही करूं कि बेटा द्वेष, द्वेष से शान्त नहीं होता, द्वेष प्रेम से शान्त होता है। तुम भी द्वेष को प्रेम से शान्त करना सुधन्वा को अपने पिता की नसीहत मिल गई उसने बड़ा दुःख माना कि मेरे माता पिता जैसे देवताओं को यह राजा इस राज्य के लोभ से फांसी दे रहा है राज पाट यहीं रह जावेंगे पाप व पुन्य ही तो साथ जाता है कर्मफल मान कर मन को शान्त किया दोनों को फासी हो गई किसी तरह लाश मंगवा कर क्रिया कर्म किया।

सुधन्वा बंशरी बहुत अच्छी बजाता था फिर राज पुत्र था बहुत चतुर था, होनहार था राजा का हाथीवान उस धोबी के घाट पर हाथी को पानी पिलाने जाता था लडके

रा जा ने खजाने व गाड़े देगा धोबी से लड़का माँग लिया। अधर्मी राजा के नौकर भी अधर्मी होते हैं धोबी ने इन्कार किया तो धमकाया कि कोई झूठा मुकद्दमा लगाकर जेल भिजवा दूंगा नहीं तो लड़का दे दे विचारे धोबी ने घबरा कर लड़का दे दिया लड़का महाजन के यहाँ बंसी बजाता था एक दिन रात के दस बजे लड़का बंशी बजा रहा था राजा रानी ने बंसी सुनी और पसंद आगई महावत से लड़का ले लिया राजपुत्र होनहार था ही अपनी चतुरता से राजा के ऊपर अपना प्रभाव डाल लिया और बढ़ते बढ़ते प्रधान मन्त्री हो गया और राजा का बड़ा विश्वास पात्र हो गया। मगर मन में माता पिता के मारने का दुःख भरा हुआ था और दिल मे राजा से बहुत नाराज था दैव योग से एक दिन शिकार के पीछे दौड़ते हुये राजा व मंत्री जंगल में पहुँच गये बाकी साथी बिछुड़ गये दोपहर को गर्मी के कारण राजा घबरा उठा और बड़के वृक्ष के नीचे लेट गया हवा ठंडी लगने पर राजा सो गया उस वक्त सुधन्वा ने अपने माता पिता के फांसी देने का बदला लेने की ठानी तलवार म्यान में से निकाल कर राजा की गरदन के पास ले गया कि अचानक अपने माता पिता की बात याद आई कि मरते वक्त माता पिता शिक्षा दे गये हैं कि द्वेष द्वेष से शान्त नहीं होता द्वेष प्रेम से शान्त होता है सोचकर तलवार म्यान में रख दी मगर सुधन्वा कोशान्ति कहाँ मन में संकल्प विकल्प उठे कि अगर पापियोंको पाप का दण्ड न दिया जावेगा या यह बदला न लिया जावेगा तो सँसार में पाप बढ़ जावेंगे बहुत से मनुष्य बदले के भय से पाप नहीं कर सकते इस राजा को जरूर मार दिया जावे जिस पुत्र ने माता पिता के मारने वालों को दंड नहीं दिया उसके जीवन को धिक्कार है यह सोचकर फिर तलवार मियान से निकाल कर राजा के गले के पास ले गया फिर माता पिता की नसीहत याद आई कि माता पिता अपनी सन्तान को गलत उपदेश नहीं करते द्वेष बढ़ेगा फिर तलवार म्यान में रख ली फिर विचारों ने मजबूर किया और बुद्धि ने समझाया कि ऐसा मौका फिर न मिलेगा फिर तलवार निकाली मगर आखिर बड़ों की नसीहत समझ कर नहीं मारा इतने में राजा घबराकर उठा कि प्रधान मंत्री जी मैंने बड़ा भयानक स्वप्न देखा कि मेरे भाई का लड़का अपने बाप का बदला लेने के लिए बार बार मेरी गर्दन पर तलवार रख कर गर्दन काटना चाहता है सुधन्वा ने कहा कि राजा यह स्वप्न नहीं है मैं आपके भाई का लड़का हूँ और तमाम कहानी सुनाई कि मैं बार बार तलवार निकालता और आप की गरदन के पास जब तलवार पहुँचती तो अपने माता पिता की नसीहत याद आजाती कि द्वेष द्वेष से शान्त नहीं होत वरन प्रेम से शान्त होता है मैं तुमको इस वक्त भी मार सकता हूँ क्योंकि तुमसे बलवान हूँ मगर यह द्वेष कभी नहीं मिटेगा अगर मैं तुमको मार 'दूं' तो तुम्हारी सन्तान मेरी शत्रु रहेगी और फिर मेरी औलाद उनकी शत्रु बनी रहेगी उसको तुम्हारा वंश शत्रु मालूम पड़ेगा। इसलिए द्वेष प्रेम से शान्त होता है। राजा ने अपने कर्मों पर बड़ा पश्चात्ताप किया कि मैंने बहुत बुरा काम किया कि जो राज्य के लोभ से भाई व भौजाई को मरवा दिया कहीं संसार के भोगों से आज तक किसी को शान्ति हुई है ईश्वर से अपने पापों की क्षमा के लिए प्रार्थना करूं गा राज्य सुधन्वा को देकर सन्यास ले लिया और इस तरह हमेशा के लिए द्वेष का अन्त कर दिया।

कहानी नं० ३?

काम क्रोध आदि रोकने का उपाय

राजा गोपीचन्द जी की सालग्रह का दिन था तमाम शहर सजा हुआ था जगह जगह मंगलाचार हो रहे थे राजा गोपीचन्द जी के उबटन मला जा रहा था ऊपर छत पर उनकी माता के नेत्रों में से आँसू टपकते हुये नजर आये गोपीचन्द जी ने सोचा कि आज जिस का लडका राजा हो और उसकी सालग्रह की खुशी मनाई जा रही ऐसे समय में माता जी वजाय खुशी के रो कैसे रही है? तुरन्त माता जी के पास पहुँच कर पेरों मे पड़ गये और रोने का कारण पूछा गोपीचन्द जी की माता जी ने कहा कि यह संसार असार है कभी तेरे पिताजी की भी सालग्रह इसी धूमधाम से मनाई जाती थी। मगर आज उनका पता नहीं कि कहाँ गये इसी तरह तुम भी दुनियाँ में नहीं रहोगे संसार मे वड़े वड़े धर्मात्मा राजा हो गये कोई काल से नहीं वचता आज एक साल तुम्हारी उमर कम हो गई अज्ञानता मे इसकी खुशी मना रहे हो तुम्हारे पिताजी की याद आने से रोना आ गया गोपीचन्द जी के दिल पर वडी चोट लगी कि वास्तव मे कितना अज्ञानी हूँ कि उमर एक साल घट गई वजाय दुःख के खुशी मना रहा हूँ उम्र तो कम होती जाती है मृत्यु उतनी ही नजदीक आती जातीहै मातासे काल से वचने का ऊपाय पूछने लगे उन्होंने कहा कि वेटा पूरा ज्ञान इसका गुरु महेन्द्र नाथ वतला सकते है गोपीचन्द जी उसी समय गुरु जी के पास पहुँचे और उनसे भी यही प्रार्थना की गुरु जी ने कहा कि इस विद्या के लिये पहिले अभिमान को निकालना होगा राजा ने कहा कि मैंने अभिमान को निकाल दिया जब ही तो आप के पास आया हूँ उन्होंने कहा कि मैं जब मानूगा जब आप झोली डाल कर अपनी माता व रानियो से भिक्षा माँगोगे गोपीचन्द जी ने झोली डाल कर अपनी माता व रानियों से राज महल में जाकर भिक्षा मांगी सारे रनवास में रोने का कोहराम मच गया। माता रोती हुई आई और तीन दाने उनकी झोली मे डाल कर तीन शिक्षा दी।

(१) हमेशा किले मे रहना
(२) मखमल के गद्दे तकियों पर सोना।
(३) कई प्रकार के उतम भोजन करना।

माता की वाते सुनकर गोपीचन्द जी अचम्भे मे पड़ गये कि माता ने सन्यास की अवस्था मे यह कैसी शिक्षा दी यह वाते तो राजा के समय पूरी होती है हाथ जोड कर प्रार्थना की कि माता अपने पुत्र को गलत उपदेश नहीं करती मैं आज के उपदेश को नहीं समझा कि यह तीन वाते फकीरी मे कैसे पूरी कर सकता हूँ आप इस को समझा दें कि इन तीन वातों से आपका क्या प्रयोजन है तव उनकी माता जी

ने कहा कि बेटा किले में रहने से मेरा यह मतलब है कि संसार में काम क्रोध, लोभ, मोह आदि महा प्रबल शत्रु हैं। यह अपना धावा अकेले में बहुत करते हैं। इन से बचने का उपाय यही है कि तुम अकेले नहीं रहना सतसंग रुपी किले मे रहना ताकि तुम को यह शत्रु परास्त न कर सके इन शत्रुओं ने बड़े बड़े ज्ञानी महात्माओं का नाश कर दिया है विश्वामित्र की कथा संसार जानता है कि अप्सरा ने उनका तप कैसे भंगकर दिया और उनको पतित किया पुराणों मे उनकी कथा भरी पड़ी है इसलिए तुम सर्वदा सतसंग रूपी किले में रहना भोजन से मेरा यह अभिप्राय है कि जब तक खूब क्षुधा न लगे भोजन न करना बिना भूख ३६ प्रकार के भोजन भी स्वादिष्ट नहीं लगते जब तक भूख मजबूर न करे भोजन न करना गद्दी तकिये मखमल पर सोने से मेरा मतलब यह है कि जब तक जोर से नींद न आवे सोने की इच्छा न करना खूब नींद आने पर ढलों पर (पत्थरों के टुकड़ों पर) भी मखमल के गद्दों के समान नींद आती है वरना मखमल के गद्दों पर भी नींद नहीं आती यह समझा कर लड़के को विदा किया जो गुरु से शिक्षा दीक्षा लेकर संसार सागर से पार हो गये।

कहानी नं० ३२

शत्रु का कभी विश्वास मत करो

एक बरगद के पेड़ पर एक बिलाव रहता था और उसी पेड़ की जड़ में बिल बना कर चूहा रहा करता था इत्तिफाक से बहेलिये ने जानवर पकड़ने के लिये जाल बिछा दिया उसमें बिलाव फस गया चूहे को बड़ी खुशी हुई कि दुश्मन अब मार दिया जावेगा और हमेशा के लिये कण्टक कट जावेगा हर वक्त दुश्मन का साथ अच्छा नहीं होता चूहा खुशी में बे फिक्री के साथ मैदान में घूमने लगा घूमते २ वृक्ष से दूर निकल गया देखता क्या है कि एक तरफ बाज उसकी ताक लगाये हुये है पेड़ की तरफ भागना चाहता कि उधर उल्लू बैठा मिला वह भी चूहे को पकड़ लेता अब चिंता में पड़ गया कि जान कैसे बचे ? कोई उपाय नहीं सूझा यह बात समझ में आई कि बिलाव यद्यपि दुश्मन ज़रूर है मगर वह आपत्ति में फँसा हुआ जाल में आ गया है और मैं भी खतरे में पड़ गया इसलिये मित्रता कर लेनी चाहिये क्योंकि दोनों की अवस्था एकसी है बिलाव से कहा कि भाई तुम और मैं दोनों इस वक्त मुसीबत में हैं अगर तुम मुझको न मारो तो मैं तुम्हारे जाल के फंदे काट दूं तुम अपनी गोद में छिपालो ताकि उल्लू और बाज मुझ पर हमला न कर सकें बिलाव ने कहा कि मेरा जान बचा दोगे तो सारी उम्र तुम्हारा कृतज्ञ रहूँगा तुम शीघ्र मेरे पास आ जाओ मैं गोद मे छिपा लूंगा चूहा ने कहा कि याद रखना अगर मुझको मार दिया तो तुम भी जाल में फसे रह जाओगे और मार दिये जाओगे बिलाव ने कहा भाई कैसी बातें करते हो तुम तो मेरी जान बचाते हो और मैं ऐसा नालायक हो जाऊगा कि तुमको मार डूंगा ऐसा कभी नहीं होगा चूहा बिलाव के पास चला गया और अपने को

उसकी गोद मे छिपा लिया थोडी देर बाद बाज व उल्लू उड गये और इनके मेल को बड़े आश्चर्य के साथ देखा थोडी देर बाद बिलाव ने जल्दी मचाई और चूहे से कहा कि भाई जल्दी - जाल को काट दो ताकि मै पेड़ पर चढ़ जाऊ कृतज्ञ चुहे ने कहा कि भाई मै राज नीति जानता हूँ तुम्हारी और मेरी मित्रता इस वक्त दोनों मुसीबतमे है यह मित्रता जब तक रहेगी कि जब तक मुसीबत रहेगी कि बाद मे नहीं रह सकती मै तुम्हारा भोजन हूं तुम्हारी और मेरी मित्रता कैसी ? इसलिये जब तक बहेलिया न आवेगा तब तक मै हरगिज जाल नहीं काटूंगा बिलाव ने कहा भाई तुम कैसे अविश्वासी हो मेरी कसम का भी ख्याल नहीं करते भला जान बचाने से बडा उपकार और क्या हो सकता है तुम मेरी जान बचाओगे मै ही नही मेरी औलाद तक इस अहसान को याद रखेगी तुम जाल काट दो चूहे ने साफ इन्कार कर दिया ऐसे बेवकूफ और कोई होवे मै तुम्हारी बातो मे नहीं आ सकता मैंने राजनीति मे यही पढ़ा है कि दुश्मन के नीचे अपना हाथ नहीं दबाना चाहिये मे जाल काट दूं और तुम मुझ को मार दो मैं तुम्हारा क्या कर लूंगा अभी मार दोगे तो तुम भी नहीं बच सकते अपनी जान सबको प्यारी होती है। जान बच ने के लोभ से तुम मुझको नहीं मार सकते तुम कितना ही कहो मै जाल जब ही काटूंगा कि जब बहेलिया आजावेगा ताकि जान बचाने के लालच से तुम वृक्ष पर चढ़ जाओगे और मै बिल मे घुस जाऊंगा दोनों की जान बच जावेगी जब चूहे पर कुछ असर नहीं हुआ तो बिलाव चुप हो गया और कहा कि अब इस राजनीति ने संसार से विश्वास उठा दिया चूहे ने कहा कि दुनियाँ मे जो राजनीति नहीं जानते वह विश्वास कर लेते है राजनीति बड़ा गहन विषय है इस को महान विद्वान जानते है दुनियां मे तो भोले आदमी बहुत है तब ही तो धोखे मे रहते हैं भारतवर्ष विश्वास करने मे प्रसिद्ध है यहाँ सत्य का राज रहा है इसलिये दुसरों को भी सत्यवादी समझते हैं मगर समय बदल गया है जब ही तो न्याय दर्शन मे बतलाया है जैसे के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिये सत्यवादी से सत्य बोलो मगर झूठे का विश्वास न करके सत्य का व्यवहार करो जब ही तो वाकछल को बहस मे जगह दी गई है नास्तिक लोग ईश्वर को नहीं मानते इससे देश मे पाप बढ़ते है और संसार नरक बन जाता है नास्तिक को बहस में वाकछल आदि करके हराने और ईश्वर विश्वासी कराने मे कोई पाप नहीं बल्कि धर्म है।

जब बहेलिया बड़ के नीचे पहुँचा तो बिलाव घबराया कि मुझे पकड़ा चूहे ने बहेलिया को पास आते ही जाल काट दिया बिलाव पकड़ने के भय से फोरन वृक्ष पर चढ़ गया और चूहा दौड़ कर बिल मे घुस गया बहेलिया आश्चर्य मे पड़ गया कि कैसे बिलाव व चूहे की मित्रता कैसे हो गई जो चूहे ने बिलाव को बचा दिया। और बहेलिया जाल लेकर घर चला गया।

बिलाव ने अपने घर वालों को यह किस्सा सुनाया और कहा कि किसी प्रकार चूहे की दावत की जाय और इसकी अहसान उतारा जावे। बिलाव चूहे के घर पर आया

और उसके गुणानुवाद कह कर दावत का न्योता दिया चूहे ने कहा कि भाई मेरी राज-नीति इसकी इजाजत नहीं देती मित्रता बराबर वाले की ही हो सकती है । मेरी तुम्हारी मित्रता नहीं हो सकती इसलिए अब आप से सम्बन्ध बढ़ाना नहीं चाहता मैं आपकी दावत कबूल नहीं कर सकता । बिलाव ने कहा भाई मैं तुम्हारा अहसान किस प्रकार उतारूं तुम्हारे अहसान से दबा हुआ हूं अहसान का बदला न दिया जावेगा तो संसार में धर्म का नाश हो जावेगा सब मनुष्य ऋषि तो नहीं कि दूसरों की सेवा करना अपना कर्तव्य समझते हों । संसार में फल की इच्छा से मनुष्य दूसरों के साथ आदर उपकार करता है । जब ही तो तुलसीदास जी ने कहा है कि —

सुर नर मुनि की येही रीति

स्वारथ लाग करें सब प्रीति ।

जब ऋषि मुनि तक स्वार्थ से प्रीति करते हैं तो फिर दुनियाँ के मनुष्यों का क्या ठिकाना है इसलिए आपको मेरी दावत अवश्य स्वीकार करनी होगी और दुनियाँ भर की कसम खाऊँ कि आप के साथ किसी प्रकार का धोखा नहीं करूंगा चूहे ने कहा कि मैंने जो राज नीति पढ़ी है उसमें तो यही लिखा है कि दुश्मन का विश्वास नहीं किया जावे दुश्मन को धोखा देकर मारने में पाप नहीं पुण्य होता है आप मेरे पैदायशी दुश्मन है मैं आपका भक्ष्य हूँ आप अपने भोजन से दोस्ती करोगे तो भूखे मर जाओगे मैं भाई आपकी दावत में नहीं आऊंगा बिलाव ने कहा कि तुमने मेरी जान बचाई है मेरे घर वाले आपका बड़ा अहसान मान रहे हैं और आप के ऋणी है सब की इच्छा यही है कि आपको दावत दी जाय तुम चाहो तो कसम दिलादो कभी आपके साथ धोखा नहीं होगा मैं अकृतज्ञ नहीं हूँ चूहे ने कहा कि अहसान तो आप के साथ किया है आप के बाल बच्चे सब मुझे खा सकते हैं उनके साथ मैंने क्या अहसान किया है मैं कैसे विश्वास करूं कि वह मुझे छोड़ देंगे बिलाव ने कहा कि मेरे रिश्तेदार आप का अहसान मान रहे हैं इसलिए आपको कोई धोखा न देगा । चूहे ने कहा कि बच्चों का इकरार क्या ? कोई बच्चा आवेगा और मुझे चट कर जावेगा तुम्हारा मेरा साथ मिलना ही नहीं मैं ऐसे खतरे में क्यों पड़ूं आप और मैं दोनों मुसीबत में फंस गये थे स्वार्थ की मित्रता से दोनों की जान बच गई बस मामला खतम हो गया उसको बढ़ाना मेरे लिए बुद्धिमानी का काम नहीं है आपका कोई बच्चा मुझे खा गया तो मैं तो अपनी जान से हाथ धो बैठूंगा । उस वक्त आपकी दुहाई दूं तो मुझसे ज्यादा मूर्ख कौन होगा भाई मैं आपसे क्षमा चाहताहूँ जब चूहा किसी प्रकार राजी नहीं हुआ तो बिलाव ने एक दम चूहे पर झपट्टा मारा चूहा फौरन बिल में घुस गया और बिलाव से कहा कि देखो मेरी राजनीति सच्ची है अगर मैं राजनीति नहीं जानता होता और तुम्हारी बातों में आजाता तो कितना अनर्थ हो जाता ।

बच्चों कभी शत्रु का विश्वास न करना ।

कहानी नं० ३३

केवल मिथ्या भाषण ही नरक पहुंचाने के लिए पर्याप्त है ।

राजा युधिष्ठिर सत्य वादी हुए है । सत के तप से उनका रथ जमीन से सवा हाथ ऊपर चलता था । मगर लड़ाई मे जब गुरु द्रोणाचार्य जी ने पाण्डवों की फौज का संहार शुरु किया तो पाण्डवों को चिन्ता बढ़ी और सभा हुई कि द्रोणाचार्य जी को किस प्रकार मारा जावे तो भगवान कृष्ण ने कहा कि गुरु द्रोण जब तक हथियार नहीं डालेंगे तब तक उनका पुत्र अश्वत्थामा नहीं मारा जावेगा और अश्वत्थामा का मारना बड़ा ही दुर्लभ है उसका बड़ा इन्तजाम किया गया है अगर अश्वत्थामा नाम के हाथी को मार दिया जावे और फिर द्रोणाचार्य जी से कहा जावे कि अश्वत्थामा मर गया और इस धोखे मे वे हथियार डालदे तो मारे जा सकते है चुनाचे यही किया गया कि अश्वत्थामा नाम के हाथी को मार दिया गया । भगवान कृष्ण आदि ने गुरु द्रोण से कहा कि अश्वत्थामा मारा गया आप के प्रतिज्ञा के अनुसार हथियार डाल देने चाहिए गुरु द्रोण ने कहा कि सत्यवादी राजा युधिष्ठिर कहे कि अश्वत्थामा मार दिया गया तब मैं विश्वास करके हथियार डाल सकता हूँ लड़ाई के समय में और किसी पर विश्वास नहीं कर सकता महाराज युधिष्ठिर से कहा कि अश्वत्थामा हाथी लड़ाई मे मार दिया गया आप गुरू द्रोण के सामने जाकर यह कह दीजिए तब वह यकीन करेंगे सत्य बात के कहने में कोई पाप नहीं होता । युधिष्ठिर ने कहा कि अश्वत्थामा नाम का हाथी मरा है इससे गुरु द्रोणाचार्य धोखा खा जावेंगे कि उनका पुत्र मर गया मैं यह जाकर नहीं कहूँगा राज्य मेरे साथ नहीं जावेगा मगर कलंक का टीका मुझे लग जावेगा कि धर्म राज ने राज्य के लोभ में झूठ बोल दिया। भगवान कृष्ण ने समझाया कि हम झूठ नहीं बुलवाते आप यह कहदें अश्वत्थामा मर गया मुझे यह याद नहीं कि हाथी मरा या नर राज्य के लोभ से राजा युधिष्ठिर को धर्म से गिरा दिया । यह जानते हुए कि अश्वत्थामा हाथी मरा फिर भी यह कह दिया कि मुझे यह पता नहीं कि अश्वत्थामा हाथी मरा या आदमी युधिष्ठिर ने गुरु द्रोण के सामने जाकर यह कहा कि " अश्वत्थामा हतो " यह तो सुनने दिया पर उसके पश्चात शंख व बाजे बजा दिए ' नरो वा कुंजरो ' यह शब्द नहीं सुनने दिए गुरु द्रोण ने सत्य वादी युधिष्ठिर पर विश्वास करके कि उसका पुत्र मर गया हथियार फैंक दिये अर्जुन ने उस समय गुर के तीर मारकर गर्दन सिर से जुदी करदी इस झूठ का नतीजा सुनिए ।

पाँडवों ने यह निश्चय किया कि हिमालय में चलकर अब गल जाना चाहिए सब पांडव हिमालय को चल दिये रास्ते मे भीम गिरा द्रौपदी ने युधिष्ठिर से पूछा कि भीम पहिले क्यों मरा युधिष्ठिर ने कहा कि भीम को अपने पेट की चिन्ता रहती थी जो मनुष्य अपने पेट की चिन्ता रखते है वह इसी तरह मृत्यु को प्राप्त होते है अपने पेट की चिन्ता तो पशु भी करते है मनुष्य का धर्म है कि प्राणी मात्र का ध्यान रखे कभी इसमे भूल न करें दूसरे की भलाई करने मे अपनी उम्र को व्यतती करे ।

कहानी नं० ३४

कलियुग में स्वार्थ की प्रधानता ।

एक पंडितजी काशी से विद्या पढ़ कर घर आये शादी हो चुकी थी छोटी उम्र में विवाह आ हुआ उनका गौना बाकी था जो छोटी उम्र मे विवाह का पुछल्ला है वरना संस्कार में विवाह लिखा है गोने का शास्त्रों में जिक्र तक नहीं पण्डितजी ने ससुराल जाने की जिद की माता पिता ने इजाजत दे दी रास्ते में एक वन मे आग लग रही थी एक बड़ा सांप आग के लपटों में आ गया उसको भागने का रास्ता नहीं मिलता था सांप जलने वाला था कि पंडितजी ने देख लिया और बड़ी लकड़ी डालदी सांप उस लकड़ी पर चढ़ गया पण्डितजी ने सांप को आग से बाहर निकाल दिया बाहर निकल कर सांप ने कहा कि पण्डितजी मैं तुमको काटूंगा क्योंकि तुम ने मेरी जान बचाई है सांप को मौत खुद नहीं आती वह दूसरों के मारने से मर जाता है बडी मुश्किल से मेरी मौत आज आई थी आपने मुझे निकाल कर बचा लिया आज कल कलयुग है जिसमे किसी का अहसान नहीं माना जाता और भलाई का बदला बुराई मे मिलता है पण्डितजी ने कहा कि भाई मैंने तुम्हारे साथ भलाई की है अगर भलाई का फल यह मिलने लगा तो कलियुग में भलाई उठ जावेगी सांप ने कहा कि कुछ भी हो मै तो आपको जरूर काटूंगा क्योंक भलाई का बदला आज कल बुराई में मिलता है जब सांप किसी तरह न माना तो पण्डितजी ने कहा कि ३ दिन की मोहलत मुझे दे दो मैं अपनी औरत से मिल आऊं बेचारी फेरों की गुनहगार है अभी गौना भी नहीं हुआ आखिर समय में मैं उसको उपदेश कर आऊं सांपने तीन वचन लेकर पं० जी को नहीं काटा और समय वापसी का निश्चय कर दिया पंडितजी सुसराल पहुँचे मौत ने उनकी सारी खुशी धूल में मिला दी जिसको मृत्यु का हाल मालूम हो जावे फिर वह संसार के सुखो में नहीं फसता. न उसमे मन ही लगाता है ईश्वर की महान कृपा है कि हम मृत्यु को जानते हुये भूले रहते है वरना संसार में आनन्द व सुख को भोग ही नहीं सकते सुसराल ने बड़े उत्तम भोजन तैयार हुये और जवाई (दामाद) जी को भोजन परोसा गया मगर मौत के भय से मुँह के अन्दर भोजन नहीं जा सका थाल हटाकर कहा कि मुझे कोई भोजन अच्छा नहीं लगता आप कृपा करके मेरी स्त्री को साथ भेज दो गो गौना नहीं हुआ मगर मुझे उसकी जरूरत नहीं है आप इस रसम को तोड़ दें घर वालोंने विना गौना लड़की भेजना मन्जूर नहीं किया पंडितजी सॉपको वचन दे चुके थे पहले जमाने मे वानका बड़ा खयाल रखते थे कि वायदा झूठा नहीं हो जावे इस जमाने में कह देते है कि गाड़ी का पहिया व जुबान तो लौटती रहती है आज कल की राजनीति में सच को कोई महत्व नहीं दिया जाता लाभ को ध्यान मे रखा जाता है पं० जी सॉप के पास चल दिये ताकि ठीक समय पर पहुँच जावे मगर बार बार पीछे फिर कर देखा जाते थे कि आखीर वक्त मे अपनी स्त्री से बातें कर लूं इस पर्दे ने देश को बड़ी हानि पहुँचाई है स्त्री धामिक वृत्ति की थी उसने सोचा कि मेरे पतिदेव

पर कोई आपत्ति आई हुई है तब ही उन्होंने भोजन नहीं किया मुझे यह पुरानी मगर रस्म तोड़ देना चाहिये स्त्री अपने पति से भी कुछ बात चीत न कर सके यह सोचकर दूसरे दरवाजे से निकल कर उस रास्ते चली जिस रास्ते उसका पति गया हुआ था पति देव पीछे फिर कर देखते जा रहे थे अपनी स्त्री को आते हुये देखकर ठहर गये स्त्री के पहुंचने पर सारी बात सांप की सुनाई और आखीर वक्त अपना बतला कर कहा कि देवी तेरा मेरा साथ इतना ही ईश्वर ने रखा था मैं तेरी कोई सेवा नहीं कर सका। तू फेरों की गुनहगार है हिन्दू धर्म में स्त्री को विधवा होने से बढ़ कर कोई भी दूसरा दुःख नहीं होता मगर सब कर्मो के फल है इसमें किसी का दोष नहीं तू मेरे अपराध क्षमा करना और अच्छी तरह रहना अच्छा हुआ कि आखिर वक्त में मिल गई वरना मरते समय यह दुःख रहता कि आखीर समय में अपनी स्त्री से न मिल सका यह कह कर स्त्री से वापिस लौटने को कहा उसने कहा कि हिन्दू स्त्री अपने पति के साथ सती होती है मैं सती नहीं तो कम से कम पहिले साप मुझ को काटेगा तब आपको काट सकता है पण्डित जी ने बहुत कुछ समझाया जब उनकी स्त्री किसी तरह नहीं मानी तो वह भी साथ होली सॉप देवता बैठे हुए पंडितजी का इन्तजार कर रहे थे। पंडित जी ने कहा कि महाराज मैं तैयार हूं अब आप काट लीजिए मेरी स्त्री से मिल आया हूँ सॉप काटने को चला उसकी स्त्री आगे आ गई और कहा कि सॉप देवता मेरे पति ने जान बचाई है कोई बुराई आपके साथ नहीं की इसके बदले में आपको नहीं काटना चाहिये कलियुग में धर्म वैसे ही बहुत कम हो गया है कोई किसी के साथ भलाई भी नहीं करेगा। सांप ने कहा कि आज कल कलियुग है यहाँ अहसान के बदले में बुराई होती है मैं काटता हूं कलियुग का धर्म ही पूरा करता हूं मैं किसी तरह भी बिना काटे नहीं रहूंगा तब स्त्री ने कहा कि तुम मुझे काटलो हिन्दू स्त्री विधवा हो कर महान दुःख पाती है आप मुझे भी इस दुःख से छुड़ादो या मेरे पति को भी छोड़दो सॉप ने कहा कि यह गाय जो जा रही है अगर यह फैसला करदे कि मुझे नहीं काटना चाहिये तो मैं छोड़ सकता हूं हिन्दुओं में गाय को माता माना जाता है उसकी स्त्री यह वायदा कराकर जब तक मैं न आऊं काटना मत तब वह गाय के पास गई और उसको सब किस्सा सुना कर पूछा कि मेरे पति ने सांप की जान बचाई उसको बदले में काटना नहीं चाहिये गाय ने कहा कि तुझे पता नहीं कि कलियुग मे कोई अहसान नहीं मानता तू पागल हो रही है सॉप अवश्य काटेगा अपने घर जा यह सुन कर रोने लगी की यह क्या इन्साफ है कि जो आपने यह फैसला दिया। गाय ने कहा रोओ मत पहले मेरी कहानी सुनो कि कलियुग में क्या हो रहा है यह कसाई जो मुझे काटने ले जा रहा है और इस गॉव के पटेल ने दो रुपये में कसाई को बेचा है यह पटेल गरीब था दो रुपया में मुझे कायन हाउस से नीलाम में खरीद लाया था इस वक्त मेरे वंश से पटेल के घर में करीब सौ गाय बैल, केरड़ा, केरडी होंगे खाद या मवेशियों से माला माल हो गया अब

मै बुढ़ी हो गई दूध देने के लायक अब मैं नहीं रही बेकार समझ कर दुष्ट ने दो रुपये मे कसाई को मे बेचा है अगर मैं मरती भी तो ४) या ५) का चमड़ा उसको मिलता मगर यह सोचकर कि जाने कितने वर्षों में मरेगी और चारा चरेगी सिवाय कसाई के और मुझे कौन लेता मनुष्य इतना स्वार्थी हो गया कि मुझ से इतना फायदा पहुँचने पर भी कसाई को दो रुपये मे बेचा है तुम देखती नही हो जब तक गाय दूध देती है तब तक चारा वा बांट देते है जब दूध देना बन्द कर देती हैं तो फिर चारा देना भी बुरा लगता है जहां गाय को पहिले समय मे हिन्दू माता कहकर पूजा करते थे आज उनकी सन्तान मुझको बोझा जानकर कसाई को दे रहे हे बोल देवी इस देश का नाश कैसे न होगा। बेटी तू घर जा। सांप बिना काटे नही मानेगा। वह रोती हुई आई सांप ने पूछा कि गाय ने क्या न्याय किया। स्त्री ने कहा कि आपने ऐसी गाय के पास भेजा जो मनुष्य से बहुत नाराज है क्योंकि पटेल ने उसका अहसान न मानकर कसाई को बेच दिया है यह कोई इन्साफ नहीं है न्याय तो नि:स्वार्थी लोग कर सकते है। सांप काटने चला फिर स्त्री ने कहा कि पहिले मुझे काटलो फिर मेरे पति को काटना। सांप ने कहा कि तुमने मेरे साथ कोई भलाई नहीं की आज कल तो कलियुग है जो भलाई करने पर भी बुरा बदला दिया जाता है। उस स्त्री ने कहा कि यह कोई अन्याय तो नहीं है सांप ने कहा कि अच्छा जा बड़ का पेड़ जो सामने है इससे न्याय कराले अगर यह कह देगा कि मुझे नहीं काटना चाहिये तो नहीं काटूंगा जब तक जवाब न लावेगी मैं कदापि नहीं काटूंगा। स्त्री बड़ देवता के पास गई और अपनी सब कथा सुनाकर पूछा कि जान बचाने वाले पंडित को सॉप को क्या काटना चाहिये बड़ ने कहा कि बेटी संसार में कहां भूली फिरती है तुझे पता नहीं कि आज कल कलियुग है कोई अहसान नहीं मानता सांप जरूर काटेगा यह न्याय सुनकर स्त्री रोने लगी कि दुनिया में क्या हो गया कोई इन्साफ करने वाला ही नहीं रहा। बड ने कहा कि बेटी रो मत पहिले मेरी कहानी सुन ले फिर कहना कि मैंने ठीक कहा या नहीं। बड़ ने अपनी कहानी शुरू की कि आज बंजारे मेरे नीचे से उठकर गये तीन दिन हुये इतनी वर्षा हुई कि पानी ने आँख नहीं खोली मैने पत्ते से पत्ता मिलाकर वर्षा से उनकी रक्षा की जब बादल नहीं रहे तब उस अहसान को भूल गये और पेड़ पर चढ़ कर सारे पत्ते काटकर ठून्ठा कर दिया। उनको यह भी ख्याल नहीं हुआ कि यह पेड़ बड़े अच्छे मौके पर हैं सैकड़ों मुसाफिर साया में बैठकर सुख का अनुभव करते है उनको कष्ट होगा वास्तव में मनुष्य बड़ा स्वारथी है अपने आराम के सामने किसी की परवाह नहीं करता। बता बेटी उन बंजारों को ऐसा करना चाहिये था। जमाना ही स्वारथी हो गया है वह तो सांप ही है स्त्री रोती हुई आई। साँप ने कहा अब तो तूने दो जगह न्याय करा लिया न्याय मेरे पक्ष मे हुआ अब मुझे काटने दे।

सांप काटने चला स्त्री आगे आ गई और फिर वही कहा कि पहिले मुझे काटलो फिर मेरे पतिदेव को काटना यह कोई न्याय नहीं है जो इन दोनों ने किया इस न्याय

से मुझे शान्ति नहीं हुई। सांप ने कहा कि अच्छा यहां पास ही कुऐ के घेरे में गीदड़ पड़ा है वह जो न्याय कर देगा वह मुझे पसन्द होगा अगर गीदड़ कह देगा कि नहीं काटना चाहिये तो नहीं काटूंगा।

तब स्त्री गीदड़ के पास पहुँची और कहा कि मेरा न्याय करो। गीदड़ ने कहा कि पहिले मुझे बाहर निकाल दे फिर न्याय करूँगा उसने गीदड़ को कुए से बाहर निकाल दिया तब गीदड़ ने हाल पूछा उसने सब कहानी सांप के बचाने व काटने आदि की कह सुनाई और कहा कि देखो जान बचाने का यह फल दिया जाता है कि सॉप मेरे पति को काटने को तैयार है कृपा करके पूरा विचार करके फेसला देना। गीदड़ ने बहुत विचार करने के पश्चात यही फैसला दिया कि कलियुग मे अहसान नहीं माना जाता है। तू कर्म फल समझ कर घर जा और मन को शान्त कर। स्त्री फूट २ कर रोने लगी गीदड़ ने कहा कि देवी रोमत मेरी कहानी सुनने पर तुझको शांति हो जावेगी और अपनी कहानी इस तरह शुरु की।

मैने एक सवार को जाते देखा घोड़ी ग्याभन थी जिस राज्य मे मैं जा रहा था वहां बड़ा अंधेर था। न्याय का नाम तक नहीं था मैंने सवार का रस्ता काटा जिससे मेरा मतलब यह था कि इस राज्य मे मत जा वह नहीं माना फिर मैंने ऐसा ही किया मगर उसने कुछ परवाह नहीं की और चला गया। एक कुम्हार के घर पर रात्री मे ठहरा। रात को उसकी घोड़ी व्याह गई बछेरी दी। कुम्हार रात मे उठा बच्चा देखकर नीयत बदल गई और बछेरी को घर मे बॉधलिया सुबह को सवार उठा तो घोड़ी का रात मे व्याह जाने का पता लगा बच्चा कुम्हार के घर बधा था उसे खोल कर लाना चाहा कुम्हार आड़े फिर गया और बच्चा नहीं लाने दिया सवार ने समझाया कि भाई यह घोड़ी रात को व्याही है उसका बचा है तुम इसको केसे रोकते हो कुम्हार ने कहा कि बचा मेरा है तुमको नहीं ले जाने दूंगा सवार ने पूछा कि तुमारे पास यह बचा कहां से आया झूंठा झगड़ा क्यों करते हो कुम्हार ने कहा कि मेरा आवा व्याया है उसका यह बचा है सवार ने कहा कि भला कहीं आवे भी व्याहते हैं आवे मे तो बरतन पकाये जाते हैं लेकिन कुम्हार ने एक न सुनी सवार ने आस पास के लोग इकट्ठे किये और सब किस्सा उन्हे सुनाया पड़ोसियों ने भी कुम्हार को समझाया कि एक परदेशी के साथ ऐसी बेईमानी क्यों करते हो बच्चा देदो कुम्हार ने एक न सुनी बचा देने से साफ इनकार कर दिया तब लोगों ने कह दिया कि भाई तुमको राज मे अर्जी देनी चाहिये इसकी नीयत बदल गई है।

सवार ने मजिस्ट्रेट के यहाँ अरजी दी कि मेरी घोड़ी रात को व्याही थी उस बचे को कुम्हार नहीं लाने देता बचा कुम्हार से दिला दिया जाय अरजी के पेश होते ही मजिस्ट्रेट ने हुक्म दिया कि पहिले इस बात का सबूत पेश करो कि तुमारी घोड़ी ग्याभन थी वह रात को व्याई है और उसका यह बचा है। सवार ने कहा कि हुजूर

मैं परदेशी आदमी हूँ परदेश में किस गवाह को लाऊं बच्चा देख लिया जाय कुम्हार के पास घोड़ी तक नहीं उसका बच्चा कैसे हो सकता है मजिस्ट्रेट भी अकल के पूरे थे। बिना किसी विचार के दरख्वास्त खारिज करदी कि बिना सबूत कुछ भी नहीं हो सकता सवार बिचारा बहुत दुखी हुआ यह सोच कर कि राज मे अन्धेर है आगे जाऊंगा तो कहीं घोड़ी को नहीं छीन ले घोड़ी गृह की जावेगी उसी गॉव से घर की तरफ वापस लौट पड़ा रास्ते मे फिर गीदड़ ने आगा काटा और कहा कि भले मानस मैंने पहिले ही आगा काटा था कि इस राज मे अन्धेर है इसमे मत जा लेकिन तूने कोई ध्यान नहीं दिया ऐसे शगुनों को माना जाता है जो शगुनों को मानते हैं उनको हानि लाभ भी पहुंचता है सवार ने कुम्हार की सब बेईमानी गीदड़ को सुनाई और मजिस्ट्रेट की बुद्धिमानी का हुक्म भी सुनाया गीदड़ ने कहा कि तुम वापिस चलो फिर मजिस्ट्रेट को अर्जी दो वह फिर सबूत माँगेगा और पूछेगा कि गवाह कौन है फिर तुम कह देना कि गीदड़ गवाह है मजिस्ट्रेट कहेगा कि गीदड़ जानवर है वह गवाही दे सकता है तुम यह कह देना कि यह तो ठीक है कि गीदड़ गवाही नहीं देते लेकिन दुरभाग्य से आप जैसे मजिस्ट्रेट हो गये जो घोड़े के ग्याभन होने का व बच्चा होने का पहिले सबूत माँगते हो परदेश मे गवाह कहां से लाऊं आपको यह जाँच करना चाहिये कि जब कुम्हार के पास कोई घोड़ी नहीं है और मेरी घोड़ी रात को ब्याई है कुम्हार कहता है कि आवा ब्याहा है और उससे यह बच्चा पैदा हुआ है यह कितना अन्याय हो रहा है कि कुम्हार जबरदस्ती मेरे बच्चे को नहीं ले जाने देता और राजसे इस अन्याय को नहीं रोका जाता। गीदड़ की यह बात सवार के समझ मे आगई और गीदड़ को बहुत प्यार से अपने सामने घोड़ी पर बैठा लिया और जाकर फिर दरख्वास्त दी मजिस्ट्रेट ने फिर वही सबूत माँगा। सवार ने ऊपर लिखा जवाब दिया तब मजिस्ट्रेट की आँख खुली और फौरन कुम्हार को तलब किया गया और पूछा गया कि यह बच्चा तुम्हारे पास कहां से आया जब तुम्हारे पास घोड़ी नहीं है तब कुम्हार ने कहा कि हुजूर मेरा आवा ब्याहा है इस जवाब को न मान कर बच्चा सवार के सुपुर्द कर दिया गया बच्चे को लेकर सवार चलता बना गीदड़ ने कहा कि मुझे कचहरी में छोड़दिया लुक छिप कर आ रहा था कि कुत्तों ने देख लिया और पकड़ने को दौड़ पड़े अगर इस भेरे मे आकर न गिरता तो आज मौत आ गई थी देखो संसार कितना स्वार्थी होगया कि जब तक सवार का स्वार्थ था तब तक घोड़ी पर बिठाकर मुझे लाया और जब स्वार्थ निकल गया तो वहीं कचहरी मे छोड आया और गॉव से बाहर तक नहीं निकाला वास्तव मे संसार बड़ा स्वार्थी हो गया है जब तक मतलब रहता है तब ही तक बात करता है काम निकलने पर कोई बात तक नहीं करता तू घर जा सांप तो बिना काटे नहीं छोड़ेगा लड़की बहुत दुखी हुई और रोते हुवे साँप को गीदड़ का जवाब सुना दिया साँप काटने के लिये जब चलने लगा तो लड़की फिर सामने आई उसने कहा कि आप मुझे तो काटते नहीं और मेरे पति को मेरे सामने काटने जाते हो यह क्या अन्धेर है मैं किसके

[illegible] मेरे पास धन बहुत है इस बाँबी के नीचे [illegible] ने कहा कि अभी को कौन खाने देगा [illegible] डिबिया तुझे दे देता हूँ जिसके ऊपर भी एक चुटकी [illegible] ने कहा कि डिबिया को देखलूं कि इसमें [illegible] ने कहा कि देखले। डिबिया खोल कर चुटकी भर ली और [illegible] काटने को चला तो लड़की ने वह चुटकी [illegible] कि आपसे ज्यादा मेरा दुश्मन कौन होगा जो मेरे पति को काट रहे [illegible] बुद्धिमान लड़की ने अपने पति की जान [illegible] और संसार के सारे सुख भोगे।

[illegible] संसार स्वार्थी बहुत हो गया अपने स्वार्थ से ही [illegible]।

कहानी नं० ३५

शान्ति का उपाय

करोड़ी मल लुधियाने के बड़े धनाढ्य आदमी थे कारोबार बड़े पैमाने पर था मिल भी उनका खुला हुआ था धनाढ्यों के अकसर देखा जाता है कि औलाद नहीं होती और खास कर राजपूताने में तो बहुत से घराने देखने में आते हैं कि जो मुतबन्ना रख कर नाम चलाते हैं। सेठ करोड़ी मल जी ने कई विवाह किये आखिरी विवाह से ४५ साल की उम्र में एक लड़का हुआ धन की तो कमी थी ही नहीं लड़के का लालन पालन बहुत अच्छी तरह हो रहा था डाक्टर तक सेठ जी ने रख छोड़े थे लड़का १२ या १३ साल का हो गया जगह २ जगह से सगाई आने लगी दैव योग से एक दिन लड़के की तबियत खराब हो गई बहुत कुछ दौड़ धूप की गई सिविल सर्जन तक बुलाये गये लेकिन लड़के की हालत गिरती ही गई और रात के बारह बजे लड़का मर गया कोहराम मच गया सेठ करोड़ी मल दान पुण्य भी बहुत करते थे लेकिन दान पुन्य ने भी कोई सहायता नहीं की और बुढापे में पुत्र शोक का दाग लग गया सुबह को सारा शहर इकट्ठा हो गया और सेठ जी को समझाना शुरु किया लेकिन किसी की शिक्षा का कोई असर नहीं हुआ।

मृत्यु का इलाज किसी से न हो सका चक्र वर्ती राजा तक मृत्यु से न बचे अगर मृत्यु का इलाज होता और जिन्दगी रुपयों से खरीदी जाती तो अमीर आदमी तो कभी दुनियाँ में मरते ही नहीं सब लोगों ने सेठजी को समझाया कि सिवाय सब्र के कोई दूसरा रास्ता नहीं लेकिन सेठ जी पर कोई असर नहीं हुआ इष्ट मित्र मुश्किल से लाश

को घर मे से निकाल सके और जाकर दाह संस्कार किया अगर सेठ जी को न पकड़ा जाता तो वह भी चिता मे कूद पड़ते संस्कार के बाद मुश्किल से सेठ जी को घर पहुँचाया और पूरी निगरानी रखी कि कहीं सेठ जी आत्महत्या न करले।

दूर दूर के रिश्तेदार शोक मनाने आये और सबने ही सेठ जी को समझाया कि यह ससार असार है अब रोने पीटने से कुछ नहीं हो सकता सब्र करना चाहिए लेकिन सेठजी पर कोई असर नहीं हुआ सेठ करोड़ी मल जी के घनिष्ट मित्र सेठ परमानन्द जी को जब यह समाचार मिला वह भी समझाने के लिए आये उन्होने यह किस्सा सुन रक्खा था कि सेठ जी पर किसी के समझाने का असर नहीं होता उन्होंने जाते ही सेठ करोड़ीमलजी से कहा कि सेठ साहब आपने मेरा रुपया अब तक नहीं भेजा यह ठीक है कि आप को पुत्र वियोग का दुःख हो रहा है लेकिन दुनियाँ मे काम ऐसे दुखों से रुक नहीं सकते मैं आज ही अपना रुपया लेकर जाऊंगा सेठ करोड़ी मल जी यह सुनकर हक्के बक्के रह गये कि सेठ परमानन्द जी मेरे पुराने मित्र हैं मुझसे इनका बड़ा अच्छा व्यवहार रहा है और मुझसे प्रेम भी करते हैं कई लाख तक का माल इनका मेरे यहां आया है कभी ताकीद तक नहीं की अब तो सिर्फ हजार या दो हजार रुपया बाकी होगा वक्त मे जब कि मेरे इकलौते पुत्र को मरे दो तीन दिन हुए हैं लोग हम दर्दी करने आ रहें हैं सेठ परमानन्द बजाय ढाढस के रुपये की ताकीद कर रहा है यह क्या मामला है।

सेठ करोड़ीमल ने कहा कि परमानन्द जी मेरे बात समझ मे नहीं आती कि इस मौके पर इस थोड़ी रकम के लिए आप कैसे ताकीद कर रहे है सेठ परमानन्द ने कहा कि देखो सेठ जी जब तक आपकी नीयत साफ थी तब तक लाख रुपये रहने पर भी मैंने कभी ताकीद नहीं की लेकिन अब आप की नियत मे फर्क आ गया है अपना रुपया आप पर बाकी नहीं रख सकता सेठ करोड़ी मल ने कहा कि तुमने कैसे जाना कि मेरी नीयत मे फर्क आ रहा है और मैं लोगों का रुपया मारना चाहता हूं मेरा तो ख्याल है कि मैं दस बीस लाख रुपये पर भी नीयत नहीं बिगाड़ सकता क्या आप उदाहरण बता सकते हैं कि मैंने किस का रुपया मार दिया है या किसी का रुपया मार देने की नीयत की हो सेठ परमानन्द ने कहा कि भाई नीयत का अन्दाजा खाली रुपयों से ही नहीं लगता अगर किसी की अमानत को न दे या देकर रोने लगे तो क्या तुम उसको यह कहोगे कि उसकी नियत साफ है सेठ किरोड़ीमल ने कहा कि ऐसा कभी भी नहीं हुआ कि मैंने किसी की अमानत न दी हो या देने पर रंज किया हो तब सेठ परमानन्द ने कहा कि सुनो सेठजी जिस लड़के के मरने का तुम इतना शोक कर रहे हो वह लड़का तुमको किसने दिया था अगर तुम यह कहो कि मेरा लड़का था और मेरे घर पैदा हुआ था तो जिस माता के गर्भ से लड़का पैदा हुआ उसको तो गर्भ मे यह भी नहीं मालूम था कि लड़का है कि लड़की देखो तो गर्भ मे नाक कान आदि शरीर की विचित्र रचना कौन करता है सेठ करोड़ीमल ने कहा कि भाई इसको सब ही जानते हैं कि पैदा करने वाला परमात्मा है तब सेठ परमानन्द जी ने कहा कि लड़का किसने दिया था तब सेठ किरोड़ी मल ने

[illegible] करते हैं। इस पर सेठ परमानन्द जी ने कहा कि अब बतलाओ कि जिसकी चीज है वह ले जाए तो बुद्धिमान आत्मा को क्या बुरा मानना चाहिए। सेठ करोड़ी मल चुप हो गये। तब परमानन्द ने कहा कि जब आपका रंज करना क्या उस बात की [illegible] नहीं कि आप की नीयत में फर्क आ गया है। फिर मैं आप जैसे आदमियों पर [illegible]।

सेठ जी। इतना सुन कर लज्जित हुये और सेठ परमानन्द को धन्यवाद दिया कि आप ने मेरे रुपये वापस ला दिये तब सेठ परमानन्द ने कहा कि मैं रुपयों की ताकीद करने नहीं आया था मैं तो आपका मित्र हूँ ऐसे समय में तो दुश्मन भी रुपया नहीं मांगते सिर्फ यह समझाने आया था कि संसार के सब पदार्थ उस प्रभु के हैं उसी ने सारे संसार की रचना की है और कर्मों के अनुकूल फल सब को वही देने वाले हैं जब भी वह अपनी चीज लेना चाहें तो उसके लेने पर किसी बुद्धिमान को बुरा नहीं मानना चाहिये।

तब ही तो यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के पहिले मंत्र में ईश्वर ने यह उपदेश दिया है कि संसार के सारे पदार्थों में ईश्वर ओत प्रोत हो रहा है और सब जीवों के कर्मों के अनुरूप पदार्थ देता है इसलिये अधर्म से किसी की चीज लेने की इच्छा मत करो।

कथा नं० ३९

ग्रहों का रहस्य

भारत वर्ष कभी सारे देशों का गुरु था जैसे दिन के बाद रात और रात के बाद दिन आता है सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख आता है उसी प्रकार सृष्टि का नियम यह है कि जो वस्तु ऊंची शिखर पर पहुंचती है वह नीचे गिरता है। वही हाल भारत का हुआ जब यहां पर विद्या का प्रचार था तो न कोई दिशा सूल जोगनी को मानते थे व राहु केतु व शनिचर को मानते थे लेकिन जैसे अविद्या बढ़ती गई वैसे ही भारत में दुःख आने शुरू हो गये। जब निस्वार्थ राजा होंगे। तब संसार में सुख की वर्षा होती है और जब स्वार्थ बढ़ जाता है तब नाना प्रकार के रोग व दुःख बढ़ जाते हैं आज भारत अगर स्वतन्त्र होता तो अपनी सन्तानों को अच्छी शिक्षा दिलाने का प्रबन्ध करता भारत गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ है। इसलिये यहां पर दुःख ही दुःख नजर आते हैं भारत की अज्ञानता का नमूना सुनिये।

राजा राम मोहन बड़े धनाढ्य और धर्मात्मा थे प० नीलकण्ठ बनारस से आये हुये थे। जब वह राजा से मिलने गये तो राजा ने अपना जन्म पत्र दिखा कर पूछा कि महाराज देखिये मेरे ग्रह कैसे हैं। पं० जी ने जन्म पत्र देख कर कहा कि राजन् आपको ढ़ाईसाल का शनिचर लगा है। राजाने पूछा कि इस का फल क्या होता है प० जी ने कहा कि पैरों की तरफ से शनिचर आया है इसलिये यह दुःख ही देगा। यह सुन कर राजा को चिन्ता हुई और मन्त्रियों से सलाह ली कि शनिचर के कोप से कैसे छुटें मंत्रियों ने समझाया कि राजन् आप देखते नहीं कि आज कल की गवर्नमेन्ट कहां शनिचर को मानती है दिशासूल

कहानी नं० ३७

दृढ़ विश्वास का फल
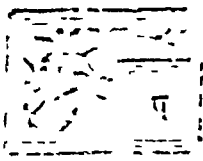
[illegible] पहिले समय में अमेरिका में यह नियम था कि अगर कोई नीग्रोजाति के मनुष्य जान से मार दे तो मारने वाले को फाँसी की सजा नहीं देते थे।

एक मजदूरनी बीमार हो गई, मजदूरी सात रोज में मिलती थी जिस दिन मजदूरी तकसीम होने का दिन था किसी कारण वह मजदूरनी मजदूरी लेने न जा सकी और न किसी को भेज सकी चार पांच दिन बाद जब उसको खर्च की ज्यादा जरूरत हुई तो उसने अपनी लड़की जिसकी उम्र आठ साल की थी वह भेजी और कहा कि दफ्तर में जाकर मेनेजर साहब से कहना कि मेरी मांने कहा है कि मुझे खर्च की सख्त जरूरत है मेरी चढ़ी हुई मजदूरी देदी जाय मैनेजर साहब किसी से बातें कर रहे थे। बीच में एक नीग्रो लड़की का इस तरह से पैसे मांगना मेनेजर साहब को बुरा लगा और उन्होंने झिड़क कर कह दिया कि आज नहीं तो मजदूरी नहीं मिलती लड़की थोड़ी देर चुप चाप खड़ी रही और थोड़ी देर बाद मैनेजर साहब से फिर कहा कि मेरी मां बीमार है उसे दवाई के दाम देने हैं और दवाई वाला बिना दाम लिये आगे को दवाई नहीं देता इस वास्ते मेरी मांने कहलाया है कि आपकी बड़ी महरबानी होगी अगर मेरी चढ़ी हुई मजदूरी देदी जाय।

मैनेजर साहब ने फिर धमकाया कि तुमसे मना कर दिया कि आज पिछली मजदूरी नहीं मिलेगी मगर तुम नहीं गई और यहीं खड़ी हो फौरन चली जाओ। लड़की वहीं खड़ी रही मैनेजर को यह बात बहुत ही बुरी लगी और कहा कि लडकी तुम सुनती नहीं हो मैं दो मरतबा मना कर चुका लेकिन जाती नहीं हो और यहीं खड़ी हुई हो। क्या तुम्हारी मौत आगई है।

लड़की ने कहा कि मेनेजर साहब मेरी माँ ने कहा है कि पैसे लेकर ही आना बिना पैसे लिए मत आना। नीग्रो जाति की एक लड़की के ये शब्द साहब बहादुर को बहुत ही बुरे लगे। गुस्से में भरकर कुर्सी से खड़े हो गये। मेज पर जो छुरा रक्खा हुआ था उसको मारने के लिए उठा लिया। लड़की बजाय भागने के यह कहती हुई मैनेजर साहब की तरफ चली नहीं मैनेजर सा० मैं बिना पैसे लिए हरगिज नहीं जाऊंगी और यह शब्द गुस्से में भरकर कहे। मैनेजर साहब गुस्से में भरे हुए छुरा लेकर लड़की की तरफ आरहे थे जब लड़की के पास पहुँचे तो लड़की ने दमक कर कहा कि मैनेजर जी मेरी माँ की मजदूरी आपको इसी वक्त देनी होगी आप समझते क्या हैं।

लड़की के यह शब्द सुनकर मैनेजर सा० के हाथ मे से छुरा छूटकर नीचे गिर पड़ा और पैन्ट की जेब से निकाल कर दाम लड़की के हाथ में दे दिये लड़की दाम लेकर चली गई।

इस बात का तहलका मच गया कि एक नीग्रो जाति की ८ साल की लड़की ने बजाय डरने के किस तरह हिम्मत दिखलाई। मैनेजर साहब मारने के लिए जो छुरा ला रहे थे उनके हाथ से कैसे गिर गया और बजाय मारने के मजदूरी कैसे दे दी।

मैनेजर साहब भी आश्चर्य मे थे बड़े २ विद्वान इकट्ठे हुये और इसका कारण मालूम करना चाहा तो सब विद्वान इस नतीजे पर पहुँचे कि लड़की के इस दृढ़ विश्वास का ही असर हुआ कि वह मजदूरी लेकर ही गई जो मनुष्य दृढ़ विश्वास के काम करेगा उसमें जरूर सफल होगा। इस कहानी का सारांश यह है कि दृढ़ विश्वास में बड़ी शक्ति है दृढ़ विश्वासी मनुष्य कभी नाकामयाब नहीं होता।

कहानी नं० ३८

सबको जी कहकर पुकारो

स्वर्गीय पं० गोविन्द प्रसाद साहब सन १९८३ में कोटा स्टेट में रेवेन्यू कमिश्नर थे बड़े ही उदार हृदय और हर एक की मदत करने वाले थे जो कोई भी उनका नाम सुनकर कोटा आजाता उसको मुलाजमत दिला देते थे और जो कोई किसी कारण वश वापिस जाता तो उसको अपने पास से आने जाने का खर्चा देते थे। अपनी भूल को फौरन मंजूर करने वाले महान पुरुष थे संसार में ऐसे मनुष्य कम हैं जो अपनी भूल को स्वयं स्वीकार करलें। लेखक उस वक्त निजामत चेचट में मोहर्रिर पेशी नायब नाजिम था हाथिया खेड़ी गांव के कुँवर मदनसिंह जी मालका काम सीखने निजामत चेचट में आये हुये थे मेरे पास काम सीखते थे एक दिन उन्होंने मुझे एक तहरीर लिखी कि मुझे सब कुंवर मदनसिंह जी कहकर पुकारते है लेकिन आप कुँवर नहीं लगाते मेरी इसमें मान हानि है। इस तहरीर की चर्चा फैलते-फैलते नाजिम सा० तक पहुँच गई उन दिनों दौरे में स्वर्गीय प० गोविन्द प्रशाद सा० रेवेन्यू कमिश्नर आये हुये थे। नाजिम सा० ने मजाक के तौर पर इसका जिक्र रेवेन्यू कमिश्नर सा० से कर दिया। शाम को भोजन करते समय रेवेन्यू कमिश्नर साहब नें हँसते हुये उस तहरीर का जिक्र मुझ से किया और कहा कि महाराज सिंह जो वाणी की वजह से लोगों को नाराज करदे यह गलती दुनिया में सबसे बड़ी मानी जाती है। जो सब उनको कुवर मदन सिंहजी के नाम से पुकारते हैं तो तुम फिर उनको कुँवर क्यों नहीं कहते ? इस विषय मे उन्होंने दो नीचे लिखी कहानी सुनाई:—

(२) एक थानेदार [illegible] में मिलने आये तो मैंने उन से पूछा कि थानेदार जी आप अपने अफसरों से भी लड़ते रहते हो और हाथ भी तुम्हारा खुला हुआ है यानी तुम रिश्वत भी लेते हो फिर भी तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचता इस पर थानेदार जी ने कहा कि मैं किसी को भी तू कारा नहीं देता सब को जी कहकर पुकारता हूँ यहाँ तक कि मेरा हाली (नौकर) घसीटा जो है उसको भी घसीटा जी कहकर पुकारता हूं कभी घसीटा नहीं कहता इसलिये मुझ से कोई नाराज नहीं है और सब लोग प्रेम करते हैं।

किसी कवि ने सच कहा है कि "वशी करण एक मंत्र है तजदे वचन कठोर" अगर मनुष्य चाहता हो कि मेरा कोई शत्रु न हो और सब मुझसे प्रेम करें तो सब को जी कह कर पुकारो गलती मालूम होने पर उसको उसी वक्त सुधारता हूँ इसलिये नहीं छोड़ता कि किसी की निगाह पड़ेगी। बस यह दो गुण हैं कि जिस की वजह से मैं रिश्वत लेते हुये भी अपने अफसरान से लड़ पडता हूँ।

ऐसे गलती कभी मत छोड़ो कि इस पर किसी की निगाह नहीं पड़ेगी गलती मालूम होने पर उसको सुधार देना चाहिये। इसके बाद राजा मानसिंह की कहानी सुनाई।

राजा मानसिंह जी बड़े बहादुर व शूरवीर राजा हुये हैं बहादुर सिंहजी राजपूत बड़ी शत्रुता रखते थे। एक रोज सभा में राजा मानसिंहजी ने कहा कि देखो मंत्रियो बहादुर सिंहजी बिना कारण ही मुझसे शत्रुता रखते हैं। इस पर उनके मंत्री ने कहा कि हुजूर यह बहादुर बड़ा ही खराब व नीच आदमी है जो आप जैसे नेक व धर्मात्मा राजा से द्वेष रखता है इस पर राजा मानसिंह जी ने अपने मंत्रियों से कहा कि वे मनुष्य बहुत मूर्ख कहलाते हैं जो अपनी जबान से दूसरों को अपना शत्रु बना लेते हैं तुम लोगों ने तो इस विचार से मेरे दुश्मन का नाम बहादुर कह कर लिया कि मैं इससे खुश होऊँगा लेकिन तुमने दो बड़ी भूलें की हैं पहिली भूल यह है कि तुम्हारी आदत ऐसी खराब पड जायगी कि जिसकी वजह से तुम सभ्य नहीं कहलाओगे। दूसरी गलती यह है कि जब बहादुर सिंहजी यह सुनेंगे कि तुम ने भरी सभा में इस तरह नाम लेकर पुकारा तो वे तुम्हारे शत्रु हो जायेंगे।

संसार में वह मनुष्य बड़े नादान कहलाते हैं जो बिना कारण दूसरों को नाराज कर देते हैं इसलिए हमेशा याद रक्खो कि दूसरों को हमेशा जी लगाकर बोलो तू तड़ाक से कभी मत बोलो।

मुझे इस कहानी से बड़ा लाभ हुआ जो कोई भी इस पर अमल करेगा वह इससे लाभ उठावेगा और संसार में उसके कोई शत्रु न होंगे।

कहानी नं० २६

" मृत्यु समय से पहिले नहीं आती "

सन् १९१६ के पश्चात जब युद्ध समाप्त हो गया तो एक जहाज में फ़ौज आ रही थी किसी जानवर ने जहाज के ऐसी टक्कर मारी कि जहाज़ में एक बड़ा भारी छेद होगया और उसमें धीरे धीरे पानी भरने लगा जब जहाज् के डूबने का समय आया तो तीन मुसाफिर एक तख्ते पर बैठकर समुद्र मे कूद पड़े। थोड़ी देर बाद जहाज् डूब गया और वे तीनों बच गये। दैवयोग से पानी मे तख्ता तैरता हुआ समुद्र के किनारे पर जा लगा परन्तु किनारे इतने ऊँचे थे कि मनुष्य उस पर चढ़ने में असमर्थ थे तब उन तीनों मुसाफिरों को बड़ा दुख हुआ कि अब भूखों मर कर तड़प-तड़प कर जान् देनी होगी। सात दिन तक उनके पास जो खाना था उसको खाते रहे। जब खाना समाप्त होगया तो तीनों बड़ी चिन्ता में पड़ गये। इतने मे बड़े जोर की आँधी की आवाज् सुनाई दी तीनों चारों ओर देखने लगे थोड़ी देर पश्चात क्या देखते है कि एक अजगर पानी पीने समुद्र की ओर जा रहा है लेकिन अजगर इतना बड़ा था कि उसका बड़ा हिस्सा पहाड़ पर था पानी पीने के बाद उस अजगर ने इन मनुष्यों की ओर मुंह फेरा और उन मनुष्यों मे से एक को निगल गया और वापिस चला गया दूसरे दिन फिर पानी पीने आया इन दोनों आदमियों ने अपनी दोनों आँखें मीचलीं और प्रार्थना करने लगे कि हम दोनों को साथ ही निगल जाय लेकिन अजगर ने एक ही आदमी को खाया और चला गया-बचे हुए आदमी को बड़ा रंज हुआ की एक दिन भूखा तड़पना पड़ेगा- तीसरे दिन अजगर हंसमामुल फिर आया उस मनुष्य ने आंखे बंद कर ईश्वर से प्रार्थना करनी प्रारम्भ करदी होश हवास अगर ठीक रहे तो मृत्यु के समय ईश्वर बहुत याद आता है और उस प्रभू की लीला तब ही याद आती है। सुखों मे मनुष्य प्रभु को भूला रहता है सच है- दुख में सुमरन सब करे, सुख मे करे न कोय। सुख में सुमरन जो करे, तो दुख काहे को होय।

थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के पश्चात आँखों पर से हाथ हटा कर उस मनुष्य ने अजगर की ओर देखा तो अजगर का मुँह पानी में था- उसने सोचा पानी पी रहा है और तुरन्त आँख बंद करली थोड़ी देर तक फिर प्रतीक्षा की जब अजगर ने नहीं खाया तो उसके मन में सन्देह हुआ कि अजगर उसे क्यों नहीं खाता और वह पानी मे से मुँह क्यों नहीं निकालता? उसने ताली पीटी लेकिन अजगर ने कोई हरकत नहीं की थोड़ी देर बाद वह अजगर के पास गया तो क्या देखता है कि उसका कोई मुँह तोड़ कर लेगया यह देखकर उसे बड़ा ही रंज हुआ कि अब तड़फतड़प कर मृत्यु होगी।

इस प्रकार वह दो दिन तक भूखा पड़ा रहा तीसरे दिन सुबह उठकर क्या देखता है कि अजगर की खाल उतर कर गिरगई और उसकी हड्डी सीढ़ी के समान होगई। उस मनुष्य ने उस सीढ़ी पर जोर लगाकर देखा कि वह गिरती है या नहीं जब सीढ़ी नहीं गिरी तो उन सीढ़ियों पर चढ़ गया भूख से अत्यन्त व्याकुल था, पास ही एक साधु तप

रह गया। वह उसके पास वह गया और अपनी दुख भरी कथा कह सुनाई साधु ने सुनकर उसे ढाढ़स बंधाया और हाथ मुंह धोने व स्नान करने को कहा। कमजोरी के कारण उस मनुष्य की अवस्था ठीक न थी। ज्यों त्यों करके उसने हाथ मुंह धोय तथा स्नान किया और साधु से भोजन के लिये प्रार्थना की।

साधु ने धनी में से एक फल निकाला और पत्थर पर उसे झाड़ दिया। इतने स्वादिष्ट चावल उसने अपनी उम्र में कभी न खाये थे। साधु ने उसके घर बार का पता पूछा और कहा कि तुम थके हुए हो अतः सो जाओ ऐसी नींद आई कि सुबह जब आंख खुली तो अपने को काशी के मंदिर में पाया। मंदिर को देखकर वह चकित रह गया और साधु से बिछुड़ जाने का उसे बहुत रंज हुआ और ऐसा वैराग्य पैदा हुआ कि घर पर न जाकर वन की ओर चल दिया और उसको ईश्वर पर विश्वास हो गया कि वास्तव में समय से पहिले मृत्यु नहीं होती वह तलाश करते करते चित्तौड़ के पहाड़ पर आकर तप करने लगा।

७-८ वर्ष बाद चार युवक रास्ता भूल कर उस साधु की कुटी पर पहुँच गये। साधु ने अतिथि सत्कार करा और उन्हे अपने यहां ठहराया। युवकों ने शंका समाधान में ईश्वर के अस्तित्व में शंका की और कहा कि इन साधुओं ने देश को रसातल में पहुंचा दिया है। मूर्खों की झूंठी कहानी घड़ २ कर बहका रक्खा है। तब उस साधु ने अपनी बीती कहानी सुनाई और कहा कि बताओ किस शक्ति ने मेरे जीवन की रक्षा की और मुझको साधु तक पहुँचाया जिसने योग बल से मुझे काशी तक पहुँचा दिया बिना कारण के कोई कार्य नहीं होता जिस कार्य का कर्म नहीं मालूम होता उसको मनुष्य इत्तफाक बनाकर अपनी शाँति कर लेते है। समझ में नहीं आता कि घड़ी को देखकर मनुष्य क्यों नहीं कहता कि यह अपने आप बन गई है? इसलिये कि उसके पुरजे इस ढंग से जमाये गये हैं कि बड़ी सुई एक घन्टे में ६० मिनिट और छोटी एक घन्टे में ५ मिनिट चलती है। यह नियम बनाने वाले का पता दे रहा है फिर सूर्य चन्द्र और नक्षत्र को नियम से चलते देखकर मनुष्य कैसे कह देते है कि सृष्टि स्वयं बन गई है।

इस अद्भुत रचना से ही ईश्वर की हस्ती का प्रमाण मिलता है। उस साधु ने युवकों को समझा कर उनकी शंका मिटाई। युवक वहाँ से चल दिये।

कहानी नं० ३०

"धन से मनुष्य माया मोह में फँस जाता है"

युधिष्ठिर महाराज सभा मे विराजे हुए थे भगवान कृष्ण भी मौजूद थे सारे विद्वान भी सभा मे सम्मिलित थे उस समय दो व्यक्तियों ने दरख्वास्त दी- मामला यह था कि मालिक मकान ने अपना मकान बेच दिया था खरीदार ने जब मकान को बनाना

शुरू किया और पुराना भाग गिराया तो दीवार मे रक्खा हुआ खजाना निकल आया खजाने को देखकर वह मकान मालिक के पास पहुँचा और कहा कि भाई तुमसे जो मकान लिया है उसमे खजाना निकला है वो खजाना आपका है आप चलकर ले आओ मालिक मकान ने उत्तर दिया कि भाई यह खजाना तो तेरे भाग्य का नहीं है। जब मैं मकान बेच चुका तो खजाने पर मेरा कोई हक नहीं रहा अतः मै अधर्म का रुपया नहीं ले सकता खरीदार ने कहा कि मैंने मकान की कीमत स्थान व हालत समय को देखते हुए दी है जो वाजिब थी खजाना तुम्हारे बड़े बूढ़ों का रक्खा हुआ है इसलिये मैं अधर्म का रुपया नहीं लेना चाहता। दोनों मे बहुत वाद विवाद हुआ पंचायते हुई लेकिन दोनों का तसल्ली बख्श फैसला नहीं हुआ अंत मे युधिष्ठिर महाराज के यहाँ अरजी पेश हुई और उन्होंने दोनों की युक्तियां सुनीं। धर्मराज भी दोनों की युक्ति सुनकर असमंजस में पड़ गये क्या न्याय करें। वर्तमान काल होता तो खजाना राज में ले लिया जाता। युधिष्ठिर ने भगवान कृष्ण से पूछा कि योगीराज इस मामले का क्या न्याय किया जाय भगवान कृष्ण बड़े राजनीतिज्ञ थे उन्होंने मुकद्दमे की तारीख ६ माह की डालदी और आधा आधा धन दोनों के पास अमानत रखदिया और समझा दिया कि ६ माह बाद इसका फैसला होगा आज फुरसत नहीं। न्यायाधीश ने जाकर उस लाखों की सम्पत्ति को आधा आधा बांट दिया और अमानत की रसीद लिखवाली।

ता० मुकर्रर पर दोनों फरीक हाजिर थे और दर्शक गण भी बहुत संख्या में आये थे कि देखें धर्मराज क्या निर्णय करते हैं। समय पर फरीकैन को आवाज पड़ी दोनों उपस्थित थे खरीदार ने उपस्थित होते ही कहा कि कुल धन पर तो मेरा हक है। क्योंकि मालिक मकान मुझको अपना हक बेच चुका है। मालिक मकान ने कहा कि यह सच है कि मैं अपना मकान बेच चुका लेकिन खरीदार ने मौके की जमीन पत्थर चुने की कीमत दी है मो मुझे पता न था कि मेरे बड़े बूढ़े इसमे खजाना रख गये है। लेकिन न्याय धर्म दृष्टि से यह धन मुझे मिलना चाहिये।

युधिष्ठिर व सभा सद सब आश्चर्य मे पड़ गये कि ६ माह पूर्व जो व्यक्ति इस धन पर अपना हक नहीं बता रहे थे आज कैसे बतलाने लगे।

युधिष्ठिर ने भगवान कृष्ण से इसका कारण पूछा भगवान कृष्ण ने उत्तर दिया कि इस धन को माया नाम इसीलिये दिया गया है कि धन के इकट्ठे होने पर माया मोह के चक्कर में मनुष्य पड़ जाता है और फिर वह न्याय व हक को नहीं देखता। सचमुच धन मनुष्य को धर्म से गिराता है धन से वही लाभ उठा सकते हैं जो धन मे अहंकार बुद्धि न करें जहां उसको अपना माना वहीं बुद्धि में फर्क आ जाता है भगवान कर्म फल के अनुसार हर मनुष्य को धन सम्पत्ति देते है जो मनुष्य इसको दूसरों की सेवा में लगा देते हैं वे इसके दोषों से बच जाते हैं। ६ माह के अन्दर ही इन दोनों की बुद्धि पर इस धन ने माया का ढकना लगा दिया जब ही इस धन को अपना बताने लगे

[illegible] पूर्व ऋषी धन को अपना नहीं बना रहे थे ईसामसीह ने जब ही यह लिखा है कि सुई के नाके में से ऊँट निकल जाय यह तो सम्भव हो सकता है लेकिन यह तो असम्भव है कि धनाढ्य मनुष्य जो धन में अहंकार बुद्धि रखते हों वह धर्मात्मा पुरुष हों।

धन रखना या कमाना पाप नहीं है पाप तो इस भाव में है कि धन को अपना समझ लेना आवश्यकता से अधिक जो धन हो वह गरीब बालकों के पालन पोषण में अनाथिओं की सेवा में, रोगियों की सेवा सुश्रुषा में व विद्याध्ययन में व्यय होना चाहिये जो व्यक्ति इस धन से ठीक कार्य लेते हैं वे आवागमन से छूटकर मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं।

कहानी का सारांश यह है कि धन आजाने से मनुष्य माया मोह में फस जाता है और फिर हक व नाहक का निर्णय नहीं कर सकता- भगवान कृष्ण ने यह उपदेश देते हुये दोनों को आधा आधा धन दे दिया और समझा दिया कि इसके मोह में न फसना

कहानी न ४१
" यक्ष के पांच प्रश्नों का उत्तर "

महाराज युधिष्ठिर जब वनवास में थे, तो एक दिन उनको वन में प्यास लगी भीम से पानी लाने को कहा भीम वृक्ष पर चढ़ गये और दूर तालाब में पानी देखा तालाब पर जब पहुँचे तो उनको भी प्यास लगी हुई थी और उन्होंने पानी पीना चाहा अन्दर से आवाज आई कि भीम इस तालाब में वही पानी पी सकता है जो मेरे चार प्रश्नों का उत्तर दे देगा जो उत्तर न देकर पानी पीएगा वह मर जाएगा भीम ने नजर दौड़ाई लेकिन प्रश्न कर्ता कोई दिखाई नहीं दिया और अपने कानों का भ्रम समझ कर पानी पी लिया। पानी पीते ही भीम बेहोश होकर गिर गये और थोड़ी देर पश्चात उनका शरीरान्त हो गया। कुछ देर प्रतीक्षा करने के बाद अर्जुन को पानी लेने भेजा गया उसका परिणाम भी वही हुआ जो भीम का हुआ था। इसी प्रकार नकुल सहदेव गये और जब कोई भी वापिस पानी लेकर नहीं लौटा तो स्वयं युधिष्ठिर महाराज तालाब पर गये तो क्या देखते हैं कि चारों भाई मरे पड़े हैं प्यास से व्याकुल थे पानी पीने के लिये जब बढ़े तो वही आवाज कि अब तुम्हीं शेष रहे हो। ऐसी भूल मत कर बैठना कि बिना मेरे प्रश्नों का उत्तर दिये बिना पानी पीलो और तुम भी मर जाओ अगर प्रश्नों का उत्तर दे दोगे तो हर प्रश्न पर एक भाई जीवित हो जावेगा।

युधिष्ठिर महाराज ने कहा कि प्रश्न करता मेरे समक्ष आयें जब में उत्तर दूं। इस पर एक जटा जूट धारी ऋषि पानी में से निकला और निम्नलिखित चार प्रश्न किये।

(१) संसार में आश्चर्य की क्या बात है ?
(२) संसार में धर्म क्या है ?
(३) संसार में सुखी कौन है ?
(४) आपस मे बैठ कर किस प्रकार की बातें करनी चाहिये ?

राजा युधिष्ठिर ने पहले प्रश्न के उत्तर में कहा, हे यक्षराज ! मेरी राय में आश्चर्य की यही बात है कि अपने सामने बहुत से महानुभाव मर गये, अपने संबन्धी इस संसार से विदा होचुके। अपनी उम्र भी प्रतिदिन घट रही है शरीर रूपी कढ़ाई मे आयु पक रही है। कढ़ाई के नीचे रात व दिन रूपी लकड़ी छाने जल रहे हैं। बारह मास रूपी चक्र इस उम्र को घोट रहे है लेकिन मनुष्ययह समझे हुए हैं कि हम हमेशा रहेंगे. साल गिरह की खुशियां मनाई जाती है माता पिता बच्चों की उम्र बढ़ने पर खुशी करते हैं कि हमारा बच्चा बड़ा होता जा रहा है। लेकिन यह कोई नहीं सोचता कि प्रति दिन उम्र कम हो रही है इससे अधिक क्या आश्चर्य की बात होगी कि उम्र तो कम हो रही है मृत्यु समीप आती जा रही है लेकिन मनुष्य यह सोचते हैं कि उम्र बढ़ रही है।

यक्षराज उत्तर सुनकर खुश हुए और कहा कि इन चारों भाइयों में से जिसको कहो जीवित कर दूं युधिष्ठिर ने सहदेव को जीवित कर देने को कहा यक्षराज ने कहा कि राजन! पता नहीं कि तुम शेष प्रश्नों का उत्तर दे सकोगे या नहीं अत. बजाय सहदेव के अर्जुन को जिन्दा करवाओ वह ऐसा पराक्रमी धनुर्धारी है कि लड़ाई में सबको अकेला जीत सकता है युधिष्ठिर ने कहा कि आपकी राय तो ठीक है लेकिन मेरी दो मातायें थी एक कुन्ती दूसरी माद्री कुन्ती का मैं मौजूद हूँ माद्री का सहदेव है अगर मैं शेष प्रश्नों का उत्तर न दे सका और अर्जुन को जीवित करालूं तो फिर मेरी माता का नाम न रहेगा राज पाट तो फिर मिल सकते है लेकिन धर्म छूट जायगा तो उसका पाप कभी न मिटेगा अतः मै आपकी राय मानने को तैयार नहीं।

संसार मे मेरे इस कर्म से यह धब्बा हमेशा के लिये लग जायगा कि धर्मराज युधिष्ठिर ने ही सगे व सौतेले का अन्तर रखलिया फिर दूसरे व्यक्ति क्यों न रक्खेंगे मैं ऐसा कोई कार्य नहीं कर सकता जो दूसरे लोगों के लिये गलत रास्ते पर चलने का उदाहरण मिल जाय बड़ों की नकल छोटे किया करते हैं अत कृपा करके मुझे गलत रास्ते पर न लगावें। यक्षराज ने परीक्षा लेने के लिये धर्मराज से कहा कि तुम्हारी युक्ती तो ठीक है मगर समयानुकूल ही कार्य करना बुद्धिमानी है। एक छोटे से पाप के मुकाबले में यह बड़ा पुण्य होगा कि दुर्योधन जैसा पापी युद्ध मे मर जाय अतः एक बार पुनः मै जोर देता हूं कि तुम अर्जुन को ही जीवित करवाओ।

युधिष्ठिर ने कि संसार मे मेरे इस कार्य से बड़ी हानि पहुँचेगी और फिर सौतेले भाई के साथ दुनियाँ के लोग भाई के समान व्यवहार नहीं करेंगे। यह सच है दुर्योधन

दुष्ट राजा है और उसके मारने में पुण्य भी होगा लेकिन जब तक यह सृष्टि चलती रहेगी संसार के मनुष्यों को कहने के लिये उदाहरण मिल जायगा कि जब युधिष्ठर जैसे महानुभाव ने सगे और सौतेले भाई का अन्तर रक्खा है तो हम किस गिनती में हैं इसलिये मैं ऐसा उदाहरण नहीं छोड़ सकता आप तो कृपा करके सहदेव को ही जीवित करिये ताकि हमारी दोनों माताओं का नाम चलता रहे।

यक्षराज बहुत प्रसन्न हुए कि युधिष्ठर तुम्हें धन्य है कि तुम कभी धर्म से नहीं गिरे मैं तुम्हारी परीक्षा ले रहा था तुमने वही कार्य किया जो वास्तव में एक धर्मात्मा को करना चाहिये मैं तुमसे इतना प्रसन्न हूं कि तुम चारों भाई जीवित करा सकते हो। युधिष्ठिर ने अधर्म से चारों भाइयों को जीवित कराना मंजूर नहीं किया और सहदेव को जीवित करालिया।

दूसरे प्रश्न के उत्तर में कहा कि धर्म के लक्षण बड़े ही कठिन हैं कोई कहता है कि धर्म जो वेदों में लिखा है वह है लेकिन इसके अर्थों में बड़ा मत भेद है एक शब्द के कई अर्थ होते हैं अतः मनुष्य चक्कर में पड़ जाता है कोई कुरान बाइबिल की बातों को धर्म बताता है कोई पुराणों को धर्म बताता है गरज है कि धर्म मे बड़ा मत भेद है अत. मेरी राय में धर्म वही है कि जो मनुष्य अपने लिये चाहता हो वही व्यवहार दूसरों के साथ करना चाहिये यानी अपना सा सुख दुःख दूसरों का भी समझना चहिये। इस प्रश्न से भी यक्षराज प्रसन्न हुए और दूसरा भाई जीवित कर दिया।

तीसरे प्रश्न के उत्तर में कहा कि जिस पुरुष के ऊपर ऋण न हो रोजी के लिये सफर न करना पड़ता हो फिर चाहे पत्ते खाकर रहजाय उससे सुखी दुनियाँ में कोई नहीं है ऋण बड़ी बुरी चीज है इसकी चिन्ता मे लाखों मनुष्य घुल घुल कर मर रहे हैं और दुःख पा रहे हैं अतः हर मनुष्य को चाहिये कि वह ऋण न बढ़ने दे इस प्रश्न के उतर से भी यक्षराज प्रसन्न हुए और तीसरा भाई जीवित कर दिया।

चौथे प्रश्न के उत्तर में कहा कि जब सभी संसार के कार्यों से निबट कर बैठो और बात चीत आरम्भ करो तो इसी पर विचार करो कि हम कौन हैं संसार में क्यों आये हैं क्या कर रहे हैं क्या करना चाहिये जो मनुष्य इन बातों पर विचार करते रहते हैं और अपने जीवन को सुधारते रहते हैं वहीं मनुष्य संसार सागर से पार हो जाते हैं।

देखो प्रतिदिन उम्र कम हो रही है पता नहीं कब मृत्यु आ जाय कब ससार से चल ना पड़जाय इसलिये जब कभी खाली बैठो तो इन्हीं बातों पर विचार किया करो। चौथे प्रश्न को भी सुनाकर यक्षराज प्रसन्न हुए और चारों भाई जीवित हो गये।

इस कहानी को जो भी मनुष्य विचार पूर्वक पढेंगे और मनन करने के पश्चात अपने जीवन को उस पर ढालेंगे वे दुःखों से पार हो जावेंगे।

कहानी नं० ४२

"भारत में अतिथि सत्कार"

जब कभी इस देश में आर्य्यों का राज्य था उस समय ५ यज्ञ हर एक को प्रति दिन करने पड़ते थे उन यज्ञों में अतिथि सत्कार भी एक यज्ञ था, समय पर सब अतिथि उठने ईश्वर प्रार्थना करते देव और अतिथि यज्ञ करते थे समय होने पर अतिथि गृहस्थों मे पहुँच जाते थे विष्णुदत्त और उनकी पत्नी ब्राह्मण जाति के बड़े धर्मिष्ठ थे धर्मात्मा पुरुषों के पास धन दौलत नहीं रहती उनका गौरव निर्धनता मे ही होता है दो दिन में विष्णुदत्त के यहाँ खाना बना एक स्त्री दूसरा पुरुष तीसरा अतिथि का किया गया विष्णुदत्त अतिथि की प्रतीक्षा में बाहर खड़े होगये इतने मे दुर्वासा ऋषि पधारे विष्णुदत्त ने भोजन की प्रार्थना की दुर्वासा ऋषि भोजन करने अंदर पधारे पति पत्नी ने मिलकर ऋषि के पैर धोये और बड़े प्रेम पूर्वक अतिथि सत्कार के लिये जो भोजन था भेंट किया। ऋषि कई दिन के भूखे थे उस भोजन से उनकी तृप्ति नहीं हुई और अधिक भोजन माँगा उस समय पति पत्नी मे यह झगड़ा उठा कि कौनसा भाग ऋषि को दें क्योंकि पति अपना भाग देना चाहते थे किन्तु पत्नी अपना भाग देने का हट कर रही थी वह कहती थी कि मैं घर बैठी रहती हूँ मुझे भोजन की चिन्ता मे बाहर नहीं जाना पड़ता आप दो दिन के भूखे हैं यदि आपको भोजन नहीं मिला तो आप कल किस प्रकार भोजन की खोज मे यात्रा करेंगे। पति कहते थे विवाह के समय मैंने यह प्रतिज्ञा की थी कि मेरे रहते तुम कष्ट न उठाने पाओगी इसलिये यह कैसे सभव है कि मैं भोजन करलूं और तुम भूखी रहो इसलिये अतिथि को मेरे ही भाग का भोजन देना पड़ेगा- वाद विवाद मे युक्तियों की कमी होती ही नहीं अंत मे पति देवता ने यह कह कर पत्नी को शान्त किया कि तुम्हें मेरी आज्ञा जो धर्म युक्त हो मानना ही चाहिये और इस प्रकार पत्नी को अपना भाग बचाने पर विवश कर स्वयं का भाग ऋषि को दिया किन्तु वह भी खाकर ऋषि की क्षुधा शान्त न हुई उस समय स्त्री फूल के समान खिल गई और कहा कि आप तो मुझे इस उत्तम कर्म में साथी बनाना नहीं चाहते थे किन्तु ईश्वर को यह मंजूर न था कि आप ही इस पुण्य के भागी हों बड़ी प्रसन्नता पूर्वक अपना भाग ऋषि के संमुख रख दिया ऋषि भोजन करके पधार गये। जब दोनो घर मे बैठे तो अपने भाग्य की सराहना करने लगे कि आज हमारा जीवन धन्य है जो भूखे रह कर भी अतिथि धर्म निभाया।

यह था भारत का अतिथि सेवा का आदर्श आजकल के गृहस्थों की यह हालत है कि जब कोई अतिथि आजाता है तो सबसे पहले घर की स्त्री ही दस बात बनाती है और भोजन भी अगर कराती है तो बहुत बे दिली के साथ जैसी नीयत वैसी बर्कत वाली मिसाल प्रत्यक्ष नजर आरही है पहले जमाने मे जब गृहस्थी अतिथि को देखकर प्रसन्न हो जाते थे तब थे देश धन धान्य से पूरा जब तक इस देश की स्त्रियाँ सच्ची देवी नहीं बनेंगी तब तक देश का सुधार नहीं होगा- अतिथि सत्कार से घर में कमी नहीं

आती इसलिये सबको चाहिये कि जब कोई अतिथि आवे तो देखते ही प्रसन्न होजावे और अपने हाथों से उसके पैर धोवे पहले अतिथि को भोजन कराकर फिर सब गृहस्थी भोजन करे और बाद में उनसे उपदेश लेना चाहिये।

कहानी नं० ४३

कामदेव का जीतना कठिन है।

एक समय नारद जी भगवान से मिलने गये बातों २ में नारद जी की जबान से यह बात निकल गई कि मैंने तपस्या करके काम देव को जीत लिया है और अब कामदेव मुझ पर आक्रमण नहीं कर सकता और न सता सकता है। भगवान ने नारद जी से कहा नारद जी ! कामदेव आज तक किसी से जीता नहीं गया जो उसका साधन करते हैं वहीं इससे बच सकते हैं नारद जी ने कहा कि भगवान अभिमान करना तो अच्छा नहीं है लेकिन वास्तव में मैं कामदेव को जीत चुका हूँ। भगवान इस पर हँस पड़े और बात को टाल दिया।

नारद जी लौटकर कैलाश पर्वत पर पुनः तपस्या करने लगे। २-४ माह पश्चात् भगवान ने एक बहुत सुन्दर स्त्री का रूप बनाकर १६ वर्ष की अबला बनकर नारद जी की कुटी के पास आकर रोना प्रारम्भ कर दिया। स्त्री के रोने की आवाज़ सुनकर नारद जी की समाधि टूटी दिन छिप चुका था भयानक जानवर बोल रहे थे - नारद जी अबला के पास आये और कहने लगे कि बेटी ! तुम क्यों रो रही हो ! और इस भयानक जंगल में इस समय कैसे आगई ? अबला ने कहा मेरे पतिदेव कहीं रास्ता भूल गये और मुझसे बिछुड़ गये। मैं भी रास्ता भूल गई और आपकी कुटी के पास आ निकली इस भयानक जंगल को देखकर मेरा मन घबरा उठा।

आजकल के जमाने में मनुष्य जाहिर में तो बेटी २ करते हैं और फिर बाद में उनकी नीयत बदल जाती है। इसलिये मुझे मनुष्य जाति पर विश्वास नहीं है। मुझे डर है कि रात मेरी किस प्रकार कटेगी। नारद जी ने उस अबला को बहुत सान्त्वना दी और कहा कि मेरी कुटी पक्की है। उसकी तुम अन्दर से सॉकल लगा देना और रात को किसी के कहने से भी मत खोलना। वास्तव में मनुष्य इस मामले में काबिल विश्वास नहीं है। तुमने ठीक ही कहा कि पहले मनुष्य बेटी तक कह देते हैं और बाद को नीयत बदल देते हैं। लड़की ने इस बात की प्रतिज्ञा कराके कि मैं सॉकल नहीं खोलूगी और उसने अन्दर जाकर साकल चढ़ादी।

रात के मध्यतक नारद जी के मन में संकल्प विकल्प उठते रहे अन्त में मन ने सात्विक बुद्धि को दबा दिया और नारद जी ने जाकर अबला को आवाज दी साँकल खोल दो। अबला ने सॉकल खोलने से इनकार कर दिया और कहा कि तुम कौन हो और इतनी रात में क्यों आये। कामदेव बुद्धि को हर लेता है- नारद जी ने आवाज

बदल कर कहा कि मैं तुम्हारा पति हूँ तुम्हें तलाश करता २ यहां आ पहुँचा। अवला ने कहा कि प्रथम तो आपकी आवाज मेरे पति से नहीं मिलती और फिर ससार मे बहुत चालाकी हो रही है किसी मनुष्य को इस मामले मे विश्वासपात्र नहीं समझा जाय। मै इतनी रात में अपने पति के लिये भी साँकल नहीं खोल सकती। नारद जी ने ताख समझाया लेकिन अवला ने साँकल खोल कर दी ही नहीं बुद्धि पर ऐसा पर्दा पड़ा कि नारद जी छत पर चढ़ गये और कहने लगे कि साँकल खोल दो वरना मै छत तोड़ दूंगा अवला ने फिर भी साँकल नहीं खोली।

नारद जी ने छत तोड़ दी और अन्दर कूद पड़े भगवान ने अपना असली रूप प्रकट किया और नारद जी से कहा कि बात पर अभिमान करते थे कि मैंने कामदेव को जीत लिया है। नारद जी कामदेव का जीतना बिना उसका साधन किये हुए नियमों के कोई व्यक्ति नहीं जीत सकता केवल नियमों के पालन करने से ही मनुष्य कामदेव के उत्पात से बच सकता है मनुष्य को ब्रह्मचारी बनना हो उसको चाहिये कि आठ बातों पर अमल करना चाहिये।

(१) स्त्री पुरुष को एकान्त मे कभी न बैठना चाहिये।
(२) कामदेव उत्पन्न करने वाली कथाये कभी न सुनना।
(३) मादक पदार्थों का सेवन कभी न करना।
(४) स्त्री के किसी खास अग पर ध्यान न देना।
(५) उपस्थ इन्द्री को हाथ से न छूना।
(६) सोने से पूर्व ठंडे पानी से पैर धोना और ईश्वर प्रार्थना करना।
(७) पृथ्वी पर या तख्त पर सोना गद्दे पर नहीं।
(८) कभी अकेले न रहना साथी हमेशा साथ रखना।

कहानी नं० ४४

मृत्यु को सदा याद रक्खो

क समय युधिष्ठिर महाराज सभा मे विराजमान थे और मनुष्यों का न्याय कर रहे थे इतने मे एक व्यक्ति ने आकर दरख्वास्त दी कि मुझे रामदास ने मारा है- युधिष्ठिर महाराज ने दरख्वास्त पढ़कर कहा कि आज तो मुझे तुम्हारे इस मुकद्दमा करने का अवकाश नहीं है कल सुनूँगा।

वह आदमी तो सुनकर चला गया लेकिन भीम सभा में उठकर नाचने लगा सारे सभासद आश्चर्य्य में पड़ गये और एक दूसरे का मुंह देखने लगे। युधिष्ठिर भी चकित

ने नाचे कि भीम को क्या हो गया जो सभा में नाच रहा है अन्त में युधिष्ठिर महाराज से लोगों ने नाचने का कारण पूछा युधिष्ठिर ने कहा कि मैंने बहुत सोचा लेकिन मुझे स्वयं भी इसका कारण समझ में नहीं आया कृपया आप लोग भीम से इसका कारण पूछिये- बहुत पूछने पर भीमने नाचना बंद किया और बोले कि यह तो आप लोग भी जानते हैं कि मेरे भाई धर्मराज युधिष्ठिर इतने सत्यवादी हैं कि इनका रथ का पहिया भी पृथ्वी से ऊपर धर्म के बल पर चलता है। मृत्यु ऐसी चीज है जिसका कुछ ठिकाना नहीं जो जाने कब मनुष्य को निगल ले। अभी आप लोगों के सामने सत्यवादी युधिष्ठिर ने फरमाया कि मैं तुम्हारा मुकद्दमा कल सुनूंगा- जिसका दूसरे शब्दों में यह अर्थ है कि मेरे भाई कल तक अवश्य जीवित रहेंगे तो क्या ये कमखुशी की बात है जो मृत्यु एक ठोकर का बहाना करके हर क्षण मनुष्य के सिर पर सवार रहती है चौबीस घन्टे के लिये तो मेरे सत्यवादी भाई इसके चंगुल से बच गये आपही बताइये यह नाच उठने की बात नहीं है।

युधिष्ठिर महाराज ने लज्जा से सिर झुका लिया और प्रतिज्ञा की कि आज से आज का काम कल पर न छोड़ूंगा, और यदि आवश्यकता से ऐसा करना पड़ा तो कहूँगा कि यदि ईश्वर की ऐसी इच्छा हुई तो कल इस कार्य्य को करूँगा। कहानी शिक्षा देती है कि मृत्यु को भीम के समान सदा याद रखो।

कहानी नं ४५

" मनुष्य भोजन से नहीं प्रेम से प्रसन्न होता है "

एक समय अकबर बादशाह ने बीरबल से पूछा कि मनुष्य भोजन करने से प्रसन्न होते हैं या प्रेम से? मुख्य चीज इसमे से क्या है? बीरबल ने कहा मेरी समझ मे तो मुख्य प्रेम है भोजन गौण है बादशाह इस उत्तर से संतुष्ट नहीं हुए बोले नहीं केवल बातों से कोई प्रसन्न नहीं होता भला भूखे का पेट केवल मीठी बातों से कैसे भर सकता है। बीरबल बड़ा बुद्धिमान था उसने अपनी बात सिद्ध करने के लिये दो चार माह बाद बादशाह की दावत नये बेगम सा० के की और छत्तीस प्रकार के व्यन्जन तैयार कराये। बादशाह खाना खाकर बड़े प्रसन्न हुए और खाने की बड़ी प्रशंसा की- जब सब खाना खा चुके तो बीरबल ने बेगम साहिबा से कहलवाया कि आप भोजन कर ही चुकी अब घर पधारें। यह सुनते ही बेगम साहिबा को बहुत गुस्सा आया कि क्या हम इसके घर रहने आये थे जो इसने इस प्रकार हमारी बेइज्जती की और तुरन्त गुस्से मे भरी हुई घर चली गई जब बादशाह घर पहुंचे तो खाने की बड़ी प्रशंसा करने लगे बेगम साहिबा लाल हुई बैठी ही थीं सुनते ही उबल पड़ीं कि वाह आपने हमे वहां खूब बेइज्जत कराने भेजा उसने हमसे कहलवाया

कि अव खाना खाचुकी घर जाइये क्या मैं उसके घर रहने गई थी या खाने की भूखी थी और भी दो चार जली कटी सुनाई। वादशाह को भी वीरवल की यह हरकत वहुत वुरी लगी उन्हें भी इसपर वड़ा क्रोध आया।

दूसरे दिन जव नियमानुसार सभा मे वादशाह को वीरवल ने सलाम किया उन्होंने मारे क्रोध के अपना मुंह फेर लिया वीरवल ने उस तरफ जाकर सलाम किया तो वादशाह ने दूसरी तरफ मुंह घुमा लिया तव वीरवल वोला जहाँपनाह मुझ से नाराज हैं मैं जानता हूँ वेगम साहिवा ने मेरी शिकायत की है, किन्तु आप शायद भूले न होंगे कि आपने फरमाया था कि भोजन मुख्य है प्रेम नहीं। क्या कल कोई मेरे खाने मे त्रुटि थी कल तो जहाँपनाह खाने की वड़ी प्रशंसा कर रहे थे तो खाने की कमी इस अप्रसन्नता का कारण हो ही नहीं सकती इसका कारण केवल वेगम साहिवा से यह कह देने का ही है कि भोजन कर लिया पधारिये यह असभ्यता का व्यवहार जो वेगम साहिवा के साथ किया वह उनकी वेइज्जती करने की नीयत से नहीं वह तो आपसे ज्यादा मेरे लिये काविले इज्जत है उनकी नाराजगी सहन करने की शक्ति भी मुझ मे नहीं केवल यह सिद्ध करना था कि जिस भोजन में प्रेम न हो वह कितना ही उत्तम क्यों न हो उससे मनुष्य प्रसन्न नहीं हो सकता। मुझे आशा है मेरा अपराध हुजूर क्षमा करेंगे और वेगम साहिवा से भी क्षमा करावेंगे।

यह वात प्रत्येक मनुष्य को ध्यान में रखना चाहिये कि भोजन प्रेम युक्त हो वरना उसका कोई महत्व नहीं रहता।

कहानी नं० ४६

अहंकार ही दुःख की जड़ है।

रामपुर नगर मे ब्रह्मदत्त नामक ब्राह्मण वहुत ही निर्धन था यहां तक कि उसके खाने तक का भी ठिकाना नहीं था एक दिन उसकी स्त्री नें कहा कि कुछ दिनों के पश्चात हम माता और पिता वनने वाले हैं उस दशा में घर का खर्च और भी वढ़ जावेगा अच्छा है यदि आप परदेश जाकर थोड़ा धन उपार्जन कर लाये तो भविष्य में हम अपना जीवन सुख पूर्वक व्यतीत कर सकें। पति को भी यह राय पसंद आई वह जीविका की खोज में निकल पड़ा किन्तु दुर्भाग्य वश वह ऐसी जगह जाकर फंसा कि १२-१३ वर्ष तक लौटा ही नहीं।

इधर इनके जाने के कुछ ही दिन वाद पुत्र उत्पन्न हुआ और मां उसका ज्यों त्यों करके लालन पालन करने लगी जव लड़का वड़ा हुआ तो माँने उसके पिता का सव हाल सुनाया कहा कि वेटा • अपने पिता की खोज करके लाओ पुत्र भी पिता के

दर्शनों के लिये उत्सुक था सुनते ही चल पड़ा संयोग वश इन्हीं दिनों ब्रह्मदत्त को घर लौटने का विचार उत्पन्न हुआ और वह घर की ओर चल पड़ा।

एक रात्री को दोनों पिता पुत्र एक ही सराय मे ठहरे दोनों एक दूसरे से अपरिचित थे और पास ही की कोठरियों मे ठहरे हुए थे संयोग से रात को पुत्र के पेट मे दर्द हुआ और वह सारी रात दर्द से छटपटाता और रोता रहा। यद्यपि ब्रह्मदत्त पास ही की कोठरी मे ठहरा हुआ था किन्तु उसने भी आकर नहीं पूछा कि बच्चे तुम्हे क्या कष्ट है उल्टा बड़बड़ाता रहा कि यह दुष्ट कहाँ से आ मरा शोर मचा रहा है सोने नहीं देता जब सुबह तक लड़के का रोना चिल्लाना कम न हुआ तो ब्रह्मदत्त क्रोध से भरा हुआ सराय की भटियारन के पास गया जाकर कहा तूने किस दुष्ट को ठहरा लिया जिसने सारी रात हमे सोने नहीं दिया भटियारन ने हाथ जोड़कर निवेदन किया महाराज जब यह आया था तब तो भला चंगा था अचानक ही उसके दर्द उठ गया इसमे मेरा क्या दोष ब्रह्मदत्त बड़बड़ाता अपने कमरे की ओर चला रास्ते मे लड़के का कमरा पड़ता था उसने पूछा लड़के तुम कहाँ से आये हो लड़के ने उत्तर दिया कि मैं रामपुर से आया हूँ अपने गाँव का नाम सुनकर ब्रह्मदत्त को कुछ दिलचस्पी व सहानुभूति हुई कि यह मेरे ही गाँव का है फिर उसकी जाति पूछी यह जान कर और भी खुश हुआ कि यह भी मेरी जाति का है अत मे उसने उसके पिता का नाम व हाल चाल पूछा और यह जानकर कि वह उसी का पुत्र है दुःख से व्याकुल होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा और दुःख करने लगा कि ओहो मैं कितना दुष्ट हूँ जो मेरा पुत्र सारी रात दुःख से छटपटाता रहा और मैं आराम से सोता रहा।

इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि दुःख का कारण अहंकार (मेरा) है जब तक यह पता नहीं था कि वह उसका पुत्र है उस लड़के के दुःख से दुखी नहीं हुआ बल्कि लड़के को ही भला बुरा कहता रहा यहां तक कि भटियारन को भी बातें सुनानी पड़ी लेकिन ज्योंही पता लगा कि उसका ही यह पुत्र है तो दुःख के सागर मे पड़ गया। आप लोग प्रत्यक्ष देखते हैं कि सैकड़ों आदमी मरते और पैदा होते हैं। लेकिन जिनमे अपना अहंकार पैदा नहीं होता उनके मरने जीने का कोई असर नहीं होता। असली कारण दुःख का मेरा पन ही है। मनुष्य अविद्या से मेरापन पैदा कर लेता है। इसीलिये संसार दुखी सुखी होता है विद्वान कुल संसार को मेरा पन यानी अहंकार न मान कर दुःख-सुख से बच जाते हैं।

कहानी नं० ४७

दोस्त दुश्मन की जनक–जबान

रस्तू ने हकीम लुकमान से कहा कि कल मेरे सब दोस्त तुम्हारे यहाँ खाना खाने आयेंगे। अतः तुम उत्तमोत्तम भोजनों के साथ दुनियाँ में जो सर्वश्रेष्ठ गोश्त हो पकाना। लुकमान ने सिर झुकाकर आज्ञा का पालन किया दोस्त उत्सुकता से दूसरे दिन की बाट जोहने लगे कि देखें दुनियाँ का सर्वश्रेष्ठ माँस क्या है। अगले दिन जब खाना सामने आया तो उन्होंने देखा कि बड़े उत्तम २ भोजन परसे रक्खे हैं और एक अत्यन्त सुन्दर तश्तरी रेशमी रुमाल से ढ़की हुई रक्खी है और कहा गया कि इसी मे दुनियां का सर्व श्रेष्ठ मांस रक्खा हुआ है। मित्रों ने उत्सुकता से अपने रुमाल उठाये तो क्या देखते है कि हर एक तश्तरी मे ज़बान कटी हुई रक्खी है। देखते ही अरस्तू की आंखें क्रोध से लाल हो गई और उन्होंने लुकमान से कहा कि आज तुमने बड़ी बेइज्जती की। क्या तुम्हें यही सबसे अच्छा माँस मिला? जो तुमने मेरी दावत को मिट्टी में मिला दिया। लुकमान ने नम्रतापूर्वक कहा कि मेरी राय मे दुनियाँ का सर्वश्रेष्ठ माँस यही है। यह सुनते ही अरस्तू की आँखे लाल हो उठी और उन्होंने कहा कि कल संसार का सबसे खराब माँस बनाना और अपने दोस्तों से कहा कि आज के कष्ट के लिए क्षमा करें और आप कल फिर आमंत्रित हैं। दोस्त बड़े उत्सुक हुये कि देखें संसार का सबसे खराब गोश्त क्या है।

दूसरे दिन उसी प्रकार उत्तमोत्तम भोजनों के साथ सुन्दर रेशमी रूमाल से ढ़की हुई सुन्दर तश्तरी आई। पूछने पर पता चला कि इसी के अन्दर संसार का सबसे बुरा मांस रक्खा हुआ है रुमाल हटाते ही अरस्तू की आँखों में खून उतर आया क्योंकि उसने देखा कि आज फिर तश्तरी में जबान कटी हुई रक्खी है। मित्र आश्चर्य से लुकमान का मुँह ताकने लगे। अरस्तू ने अत्यन्त कठोर शब्दों मे लुकमान से पूछा यह तुम्हारा कैसा भद्दा मज़ाक है। कल जिस मांस की गिनती तुमने सर्वश्रेष्ठ मांस में की थी आज वही दुनियाँ का सबसे खराब मांस हो गया।" लुकमान ने सर झुकाकर कहा श्रीमान! यदि सच पूछाजाय तो जबान से अधिक उत्तम और इससे अधिक निकृष्ट कोई पदार्थ हो ही नहीं सकता। देखिये जब मनुष्य मृदुवाणी बोलते हैं और सच्चा उपदेश इस वाणी से करते है तो संसार मे सुख व शाँति मिलती है। लेकिन अगर इसी वाणी से किसी को गाली दी जाए या कठोर वचन कहा जाय तो संसार में कलह और लड़ाई झगड़े उत्पन्न हो जाते हैं। इसीलिए वाणी से उत्तम कोई पदार्थ नहीं है जब इससे उल्टा काम लिया जाए तो यही कलह और रंज का कारण हो जाता है। मनुष्य को चाहिए कि इस वाणी को पवित्र करे और कभी असत्य व कटु भाषण न करे ताकि संसार में सुख शाँति कायम रहे।

कहानी नं० ४८

"मृत्यु को सदैव याद रखो"

महाभारत के पश्चात महाराज युधिष्ठर को राज्य करते हुये कई वर्ष व्यतीत हो गये। युधिष्ठिर ने विचारा कि अब संसार को छोड़कर तप करना चाहिए सब भाइयों से सलाह मशवरा किया वो सब भी राजा युधिष्ठिर से पूर्ण सहमत हो गये। हिमालय पर्वत पर तप करने की तजवीज पास हो गई। पांचों भाई हिमालय की ओर चल दिये। हिमालय में बरफ अधिक पड़ता था। द्रौपदी उस ठंड को सहन न कर सकी और गिर पड़ी और प्राण छूट गये। उस पर भीम ने युधिष्ठिर से पूछा कि द्रौपदी के मरने का क्या कारण है। युधिष्ठिर ने कहा कि यह पांचों पतियों के साथ समान व्यवहार नहीं करती थी बल्कि अर्जुन को अधिक प्यार करती थी। इसका धर्म था कि पाँचों के साथ समान व्यवहार करती। ऐसा न करने से यह गति इसकी हुई। जो मनुष्य समान व्यवहार नहीं करते उसका परिणाम यही निकलता है।

थोड़ी देर पश्चात सहदेव भी गिरे। भीम ने इनके गिरने का कारण पूछा। युधिष्ठिर ने कहा कि इनको पशु चिकित्सा का पूरा ज्ञान था लेकिन उस ज्ञान को इन्होंने दूसरों को नहीं बताया। जो मनुष्य स्वार्थ वश अपने ज्ञान को दूसरों पर प्रकट नहीं करते और छिपाते हैं उसका यही परिणाम होता है।

इसके बाद नकुल गिर गये। भीम के पूछने पर उत्तर दिया गया कि नकुल को अपनी सुन्दरता का अभिमान था। सुन्दरता कभी कायम नहीं रह सकती। वृद्धावस्था में यह कायम नहीं रहती जरासी क्षण भंगुर वस्तु पर किस बात का अभिमान किया जाए। अभिमान का परिणाम यही होता है जो नकुल का हो रहा है।

कुछ आगे चलकर अर्जुन भी बरफ में गिरपड़े और गल गये। भीम ने अर्जुन के गिरने का कारण पूछा। धर्मराज ने कहा कि गाण्डीव धनुष पर इसको बड़ा विश्वास था। संसार के पदार्थों पर जो मनुष्य विश्वास करते हैं वे बड़ी भूल करते हैं। जितना विश्वास इसने गान्डीव पर किया अगर उतना विश्वास भगवान पर करता तो इसकी यह दुर्गति नहीं होती। मनुष्य को साँसारिक वस्तुओं पर विश्वास नहीं करना चाहिए। यह सब क्षण भंगुर हैं।

कुछ देर बाद भीम भी गिरे। उन्होंने अपने गिरने का कारण पूछा धर्मराज ने कहा कि भीम तुम्हारे अन्दर बड़ा दोष यह था कि तुम अपनी ही चिन्ता करते थे। संसार के दुखों पर ध्यान नहीं देते थे यह तो पशुवत धर्म है। पशु अपने पेट के सिवाय और किसी की चिन्ता नहीं करते और निर्बलों से अपने पेट भरने को छीन लेते हैं। तुमने

मनुष्य जन्म को सफल नहीं बनाया। मनुश्य कहते ही उसे हैं जो मनन करते हैं। मनन करने पर यही नतीजा निकलता है कि मनुष्य दूसरों के लिए कर्म करे। अपना पेट तो कुत्ते और पशु भी भर लेते हैं।

थोड़ी दूर आगे चलने पर युधिष्ठिर के साथ एक कुत्ता हो लिया। आगे चलकर एक विमान ऊपर से उतरा और उसमे से एक देवता उतरे और कहा युधिष्ठिर तुम बड़े धर्मात्मा हो। तुम्हारे लिए भगवान का हुक्म है कि विमान में बिठाकर ब्रह्मलोक में पहुँचाया जाए। युधिष्ठिर ने कहा कि मेरे साथ यह कुत्ता भी है। इसको विमान मे बिठाया जाए। लेकिन कुत्ते को बैठाने से इन्कार कर दिया गया कि सदेह आप ही ब्रह्मलोक में जा सकते है क्योंकि आपने बड़े तप यज्ञ किये है। कुत्ते के ऐसे कर्म नहीं है जो यह ब्रह्मलोक में जाए युधिष्ठिर ने कहा कि यह कुत्ता मेरी शरण मे आ गया है। अगर यह विमान में नहीं बैठ सकता तो मैं भी नहीं बैठ सकता। युधिष्ठिर को बहुत समझाया कि ब्रह्मलोक मे सदेह कोई नहीं जा सकता केवल आप ही ऐसे धर्मात्मा हुये जिनके लिये यह विमान आया है कुत्ते के कारण आप ऐसा शुभ अवसर क्यों छोड़ते है। लेकिन युधिष्ठिर किसी तरह भी कुत्ते के बिना जाने को राजी नहीं हुये। कुत्ते के रूप में भगवान स्वयं उपस्थित थे। उन्होंने युधिष्ठिर की पूरी परीक्षा कर ली कि अब युधिष्ठिर धर्म से कदापि नहीं डिग सकता तब अपना असली रूप प्रकट करदिया और कहा कि युधिष्ठिर तुम्हें धन्य है जो तुमने अपने धर्म और कर्त्तव्य को नहीं छोड़ा

जो मनुष्य अन्त समय तक धर्म और कर्त्तव्य का पालन करते हैं और किसी लालच मे नहीं फँसते वहीं संसार मे नाम पैदा करते है।

कहानी नं० ४९

"व्यर्थ की बातों पर झगड़ा न करो"

एक समय की बात है कि श्वसुर और जँवाई खेत में हल जोत रहे थे। बातों बातों ही मे यह जिक्र चल पड़ा कि रामपुर यहाँ से कितने कोस होगा ससुर कहता था कि ३ कोस है और दामाद कहता था कि २ कोस है। ससुर साहब बिगड़ पड़े कि वाह एक कोस मुफ्त ही मे कम कर रहा है। दामाद और भी बिगड़ कर कहने लगा कि वाह एक कोस फिजूल ही मे बढ़ा रहे हो। बात ही बात में झगड़ा इतना बढ़ा कि दोनों ने लट्ठ निकाल लिए और एक दूसरे का सिर फोड़ने को तैयार हो गये। दैवयोग से उसी समय लड़की रोटी लेकर आ पहुँची और उसने लड़ाई का कारण पूछा तो मालूम हुआ कि रामपुर गांव के फासिले पर ससुर ३ कोस और जवांई दो कोस बताते हैं। लड़की बड़ी बुद्धिमती थी उसने तुरन्त अपनी झोली पिता के सामने फैला दी और कहने लगी कि आपने मेरी शादी मे इतना दहेज दिया यहाँ तक कि मुझे भी

दे डाला। वहां आप से एक कोस नहीं दिया जाता यह कोस ही दे डालो और इस प्रकार झगड़े का अन्त हुआ। दोनों आपस मे मिल गये। मूर्ख मनुष्य बिना कारण ही झगड़ा कर बैठते है। बुद्धिमान मनुष्य बड़ी बातों मे भी झगड़े को टाल देते है। मूर्ख मनुष्य बात का बतगड़ कर लेते है।

———c———

कहानी नं० ५०

हृदय से साधु बनो

एक बहरुपिये ने किसी राजा के सामने अपने कार्य दिखाये और इस बात की इच्छा प्रकट की कि उसको अच्छा इनाम मिलना चाहिए राजा ने उत्तर दे दिया कि जब तक तुम ऐसा रूप बनाकर मुझे धोखा न दोगे जिससे वास्तव मे मनुष्य धोखा खा सकते हैं। मै इनाम न दूँगा। बहुरूपिये ने बड़े २ रूप बदले और चाहा कि राजा धोखे मे आ जाए लेकिन राजा बड़ा चतुर था वह धोखे मे नहीं आया। बहरुपिया परेशान हो गया। राजा की प्रतिज्ञा थी कि धोखा दे देने पर १०००) रुपया इनाम दिया जावेगा। लाचार होकर बहरुपिये ने साधू का रुप बनाया और एक तालाब के पाल पर दरख्त के नीचे बैठकर तप करना शुरु कर दिया। एक नये साधु को देख कर शहर वाले साधु के पास आने लगे प्राचीन समय में इस देश मे साधु का बड़ा मान होता था और यह भेष बहुत ही पुजता था। साधु ने किसी की तरफ भी ध्यान नहीं दिया और मौनव्रत लेकर ईश्वर का भजन करने लगा। ५-७ दिन मे सारे शहर मे धूम मच गई कि एक बड़ा साधु तपस्वी तालाब के किनारे आया हुआ है। न किसी से बोलता है न किसी की तरफ आँख उठाकर देखता है। बड़े २ सेठ साहूकार व उनकी स्त्रियें उतम २ भोजन लेकर उनके पास पहुंची लेकिन साधु ने आँख उठाकर भी नहीं देखा न किसी का भोजन ही ग्रहण किया। सब शहर वालों को यकीन हो गया कि महात्मा निर्लोभी और तपस्वी है। न किसी से बोलते है न कोई याचना करते हैं। धीरे धीरे यह खबर राजा को भी लगी कि कि एक महात्मा तपस्वी तालाब के किनारे बैठे हुये है। छ सात दिन हो गये न भोजन करते हैं न बोलते है। मौनव्रत ले रक्खा है। राजा ने १००० असर्फि व भोजन व उत्तम वस्त्र लेकर अपने मंत्री को भेजा कि क्या वास्तव मे यह साधु महात्मा है। जमाना बिगड चुका था सत्य तपस्वी साधु नहीं मिलते थे। मंत्री सब सामान लेकर साधु के पास पहुँचा और साधु के सामने खड़े होकर प्रार्थना की कि महाराज कुछ भोजन कीजिए' कई दिन आपको भूखे रहते हो गये है। धन की आवश्यकता हो तो राजा ने बहुत सी अशर्फिया भेट में भेजी है। महात्मा ने बिलकुल ध्यान न दिया। न आँख खोलकर मंत्री की तरफ देखा। १५, २० मिनट तक मंत्री ने जवाब का इन्तजार किया। जब कोई उत्तर न मिला तो सब सामान जाकर राजा के सामने रख दिया और कहा कि वास्तव

में साधु निर्लोभी है व तपस्वी हैं। राजा के दिल मे उत्कण्ठा हुई कि ऐसे महात्मा के दर्शन तो जरूर करने चाहिऐ। पहले राजा की रानियाँ वहुत सा धन लेकर गई लेकिन साधु ने उनकी वात पर भी ध्यान न दिया। निराश होकर वह भी यह कहकर वापिस आ गई कि यह महात्मा तो संसार के लोभों से परे है। आखीर में राजा लाखों रुपयों का धन तथा भोजन लेकर साधु के पास पहुंचे और उनके सामने रखकर कहा कि महाराज मेरे राज्य मे आप वहुत दिनों से भूखे बैठे हो मैं रोज भोजन करता हूँ। मुझे पाप लगता है। अगर कोई इच्छा हो तो लाखों का धन आपके सामने रक्खा हुआ है। इसे ग्रहण कीजिए या और इच्छा हो तो आज्ञा कीजिए। उसको पूरा किया जावे लेकिन साधुने आँख तक न खोली। १५.२० मिनिट तक राजा हाथ जोड़े खड़े रहे लेकिन साधु न वोले। आखिर को राजा ने कहा कि यह महात्मा तपस्वी व निर्लोभी है अहो भाग्य है मेरा जो ऐसे महात्मा के दर्शन हुए। यह कह कर सव धन लेकर वापिस चल दिया। थोड़ी दूर गये होंगे कि साधु अपने आसन से उठकर दौड़ा और राजा के पैर पकड़ लिए कि महाराज मैं वही वहरुपिया हूँ कि जिसने धोखा देने का वायदा किया था और आप धोखा खाकर यह कहते हुये वापिस चल दिये हो कि वास्तव में यह साधु तपस्वी निर्लोभी है। अव हस्व वायदे १000) रुपया इनाम दिलवाइये राजा ने हँसकर कहा कि तुम कितने मूर्ख हो जो मैं लाखों का धन लेकर भेट करने पहुँचा उसे कवूल न करके १०००) के लिए मेरे पैर आ पकड़े।

वहरुपिया ने कहा कि महाराज मैं मूर्ख नहीं हूं मैं लाखों का धन उस वक्त ले सकता था लेकिन इसका यह परिणाम निकलता कि संसार में साधु की प्रतिष्ठा नहीं रहती। इसलिए मैने अपने वेश को कलंकित नहीं किया। अगर मैं आपके धन को कवूल कर लेता तो साधु महात्माओं पर से मनुष्यों का विश्वास हट जाता। लोग यही समझते की साधु के रूप मे कोई वहरुपिया धोखा देने वाला न हो अव साधु को देखकर कोई यह शंका नहीं करेगा कि साधु के रूप में वहरुपिया तो नहीं है। राजा इस उत्तर को सुनकर वहुत प्रसन्न हुये और काफी इनाम दिया। भारत वर्ष मे जव यह देश उन्नति पर था तव इस वात का पूरा ध्यान रक्खा जाता था कि ऐसा काम न करो कि जिससे देश या जाति कलंकित हो जाए। ईश्वर वे दिन इस देश के फिर लाए कि जव इसके प्रत्येक नर-नारी इस बात का ध्यान रखने लगें कि ऐसा वे कोई काम न करें जिससे देश या जाति वदनाम हो अपने वच्चों के दिल में यह भाव पैदा करें जव ही देश की उन्नति होगी।

कहानी नं० ५१

" ईश्वर बिना बुलाए किसी के यहां नहीं जाते "

महाभारत का युद्ध समाप्त हो गया था। पांचो पान्डव, द्रोपदी व भगवान कृष्ण आपस मे बैठे हुये बाते कर रहे थे। द्रौपदी ने कहा कि महाराज कृष्ण आप भी खराब आदमी हो। मेरी कितनी बेइज्जती दुर्योधन ने की। दुःशासन रजस्वला की हालत मे खींचकर सभा मे लाया और रानपर से कपड़ा हटाकर अप शब्द कहे लेकिन आपको जरा भी दया न आई और मेरी सहायता नहीं की। जब मुझको नंगा करने के लिए चीर खीचना शुरू किया और मैने दुखी होकर मर्म भेदी शब्दों में प्रार्थना की तब कहीं आपका दिल पसीजा और मेरी मदद की। भगवान हँसते हुये बोले कि द्रोपदी प्राणीमात्र के अन्दर कोई न कोई कमी रहती है। क्या करूं एक कमी मेरे अन्दर भी है। द्रोपदी ने पूछा कि वह क्या कमी है। भगवान ने कहा कि बिना बुलाए मै किसी के घर नही जाता जब कोई मुझे याद करता है और मुझसे मदद चाहता है फिर मै देर नही लगाता हूं। मै तो दूसरे के दुखों को देखकर दुखी हो उठता हूं और अपने मन मे कहता हूं कि देखो दुनियाँ भूल से कितना दुःख उठा रही है। मुझे याद नहीं करते और दुखी होता हूँ। इस कमी के कारण कि बिना बुलाए मैं किसी के घर नहीं जाता संसार के दुखों के साथ मैं भी दुख उठाता हूँ। देखो! द्रोपदी जब सभा मे तुम्हारे साथ अत्याचार हुआ। मैं उस अत्याचार को देखकर दुखी हो रहा था। तुमने सबसे पहले धृतराष्ट्र, भीष्म, गुरु द्रोणाचार्य आदि से सहायता माँगी। जब दुर्योधन का अन्न खाने से उनकी बुद्धि पर परदा पड़ा और उन्होंने तुम्हारी कोई सहायता नहीं की तब तुमने अपनी बुद्धि से मदद ली और सभा मे अपना दावा पेश करके कौरवों को निरुत्तर करना चाहा और उन्होंने तुम्हारी मदद नहीं की तब तुमने सभा सदों से मदद की प्रार्थना की। वहाँ से भी निराश होकर पाण्डवों से कहा। जब वह भी मदद न कर सके और तुम सब तरफ से निराश हो गई तब तुमने मुझे याद किया। मै तो छटपटा रहा था कि कब द्रोपदी मुझे याद करे और मैं सहायता को पहुँचूं। तुम्हारे याद करते ही मै मदद को पहुँच गया। द्रोपदी इसमें तुम्हारा अपराध नहीं संसार ही इस माया जाल में फँसा हुआ है। सब ज्ञान रखते हुए भी लोग मुझपर विश्वास नहीं करते और उसके कारण वे दुख पाते रहते हैं। और मै उनके दुखों को देखकर दुखी होता रहता हूँ। लेकिन अपने ऐब के कारण दुखी हूं कि बिना बुलाए किसी के घर नहीं जाता हूँ। मुझे इसका इन्तजार नहीं करना चाहिये कि कोई मुझे बुलाए। मनुष्य प्रत्यक्ष बातों पर विश्वास रखते है और मनुष्य साँसारिक पदार्थों से अपने दुख दूर करना चाहते है। इसलिए उनकी मदद चाहते है। देखो जब कोई बीमार हो जाता है तो पहले अच्छे २ वैद्य डाक्टरों से इलाज कराते है लेकिन जब आराम नहीं होता और निराश हो जाते हैं तब मुझे याद करते है। विश्वास के अन्दर वास्तव मे बड़ी शक्ति है, जो इसकी शक्ती मालूम कर लेते हैं वे दुखों से बच

जाते है। जो भी मुझ पर विश्वास रक्खेंगे और मेरी सहायता माँगेंगे उनको मैं दुखों से दूर कर देता हूँ। मगर मैं क्या करूँ कोई मुझे याद ही नहीं करता और मैं अपनी आदत से लाचार हूं।

सच है हर मनुष्य के जीवन में ऐसी घटनाएँ घटी हैं कि जब उन्होंने सब तरफ से निराश होकर उस प्रभू का ध्यान किया और उससे मदद माँगी तो उसने उनके दुखों को दूर कर दिया और मदद की। इस पर भी मनुष्य प्रभू को भूल जाते हैं। प्रभू के भंडर मे किसी प्रकार की कमी नहीं है। कमी तो हमारे अन्दर है जो उस प्रभू को भूलकर संसार मे दुख पा रहे है "यथा राजा तथा प्रजा" वाली कहावत सच्ची है। आज संसार मे लोग प्रभू को भूल गये। घड़ी को देखकर यह विश्वास नहीं करते कि यह बिना किसी के बनाए बन गई। लेकिन इस सृष्टि की रचना को देखकर कि जिसमे सूर्य चन्द्र नक्षत्र अपनी परिधि के अन्दर घूम रहे है किस समय सूर्य उदय होता है और अस्त होता है? मनुष्य ईश्वर को भूल जाता है। पहले मनुष्य के बच्चे होते हैं। फिर बढ़कर जवान होते हैं। अन्त को बुड्ढे होकर मर जाते है। चकवा चकवी को देखो कि रात मे उनका विछोह हो जाता है और सुबह को आकर मिल जाते हैं। मैंने खुद ने नि० दीगोद रियासत कोटे में चकवा चकवी को देखा कि वे दिन छिपते ही अलग हो जाते है। दोनों किनारों पर बैठ जाते है और रात भर बोलते रहते है और दिन उगते ही शामिल हो जाते है। वह कौनसी शक्ति है जो रात को इनको नहीं मिलने देती क्या ये उड़ना नहीं जानते? उड़कर दूसरे किनारे पर नहीं जा सकते? नहीं, प्रभू की अद्भुत लीला इसमे दीख रही है। उसके नियम कितने अटल हैं जो प्राणी मात्र को नियमों मे चलना पड़ता है। इन नियमों को देखकर फिर भी मनुष्य अविद्या से यह समझते हैं कि सृष्टि का रचयिता कोई नहीं है। प्रकृति से बनी हुई सृष्टि है। भला, प्रकृति मे यह अद्भुत रचना कहाँ? जो सृष्टि की रचना से पता चल रहा है। ईश्वर वह दिन फिर लाएगा जब यहां मनुष्य आस्तिक होंगे और ईश्वर पर विश्वास करेंगे तब यह भारतवर्ष सुख व शान्ति का घर होगा।

कहानी नं० ५२

"उल्लू का बैठना अप शकुन नहीं"

एक गांव के ऊपर उल्लू बैठने लगा। गांव वालों ने सोचा कि गाँव पर कोई बड़ी आपत्ति आने वाली है। इस उल्लू को यातो उड़ाया जाय या मारा जाए। उल्लू पक्षी बड़ा चतुर होता है। गाँव वालों ने बहुत ही प्रयत्न किया लेकिन उल्लू मार मे नहीं आया। उल्लू भी परेशान हो गया और दिल मे सोचने लगा कि गाँव वाले अपने कर्मों पर तो दृष्टि नहीं डालते

[illegible] रहते हैं। वरन, मेरे पीछे पड़े हुये हैं इनको शिक्षा देने की जरूरत है। जिस गांव या घर पर उल्लू बैठने लगता है उसके लिए यह सोचा जाता है कि कोई न कोई आपत्ति आने वाली है आपत्ति का कारण अपने खराब कर्म हैं। लेकिन उल्लू के बैठने का कारण गलत बना लेते हैं।

कुछ अर्से के बाद हंस व हंसनी उस वृक्ष पर बैठे और बसेरा लिया कि जिस पर उल्लू भी बैठा करता था। जब सुबह को हंस व हंसनी उड़कर जाने लगे तो उल्लू ने उनको रोका। हंस ने रोकने का कारण पूछा। उल्लू ने कहा कि यह हंसनी मेरी स्त्री है। तेरे साथ नहीं जा सकती। हंस इस बात को सुनकर दंग रह गया कि भाई उल्लू की स्त्री उल्लन होती है। हंसनी तुम्हारी स्त्री कैसे हो सकती है। हंसनी देखने में बड़ी सुन्दर होती है लेकिन उल्लू ने एक न मानी और कोई दलील उसने न सुनी। मजबूर होकर हंस ने कहा कि भाई तुम तो न्याय की बात नहीं करते और जबरदस्ती करते हो जो तुम्हें न करना चाहिए। तुम पंचायत से इस बात का फैसला करवा लो कि हंसनी मेरी स्त्री है या नहीं।
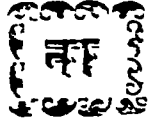
उल्लू इस बात पर राजी हो गया क्योंकि वह जानता था कि गांव के लोग बड़े अन्यायचारी हैं। न्याय धर्म को जानते ही नहीं कि यह किस चिड़िया का नाम है। इस गाव वालों को ही पंच बनावेगा। पचायत जुड़ी। हस ने पंचों से कहा कि मै और मेरी स्त्री ने रात को इस दरख्त पर बसेरा किया था। सुबह को जब जाने लगे तो यह उल्लू आड़े फिर गया कि हंसनी को नहीं जाने दूंगा यह तो मेरी स्त्री है। इसको बहुत कुछ समझाया की उल्लू की स्त्री उल्लन होती है हंसनी उसकी स्त्री कभी नहीं हो सकती लेकिन मानता ही नहीं। पंचायत इसका न्याय करे। गॉव वालों ने भी हंसनी कभी न देखी थी। हंसनी बड़ी सुन्दर थी इसको देखकर गांव वाले चकित हो गये। गांव वालों ने एक दूसरे की तरफ देखकर इशारा किया कि यह हस तो परदेशी है हंसनी को लेकर चला जायगा फिर ऐसा सुन्दर पक्षी देखने को नहीं मिलेगा। उल्लू गांव के पेड़ पर बैठता है और उड़ाने से भी नहीं उड़ता। इसके हंसनी रह जायगी तो गॉव वालो को भी देखने को मिल जायगी। सलाह मशवरा करने के बाद पंचायत ने फैसला दे दिया कि हंसनी उल्लू की स्त्री है हंस की स्त्री नहीं है। हंस को पचायत के इस फैसले पर बड़ा दुःख हुआ। पंचायत के लिए कहते हैं कि जहॉ पच होते हैं वहॉ परमेश्वर होता है। जब पंच ही अन्याय कर रहे हैं तो इस गॉव का नाश क्यों न होगा। हंस मन को मसोस कर उड़ गया और हसनी को छोड़ गया। हंसनी भी बड़ी दुःखी हुई। करीब एक मील जब हंस निकल गया। उल्लू जोर से उड़ा और हंस को पकड़ लिया और उसने कहा कि भाई तुम मेरे साथ वापिस चलो और अपनी हंसनी को साथ ले आओ। मुझे तो तुम्हें यह बात दिखानी थी कि इस गांव के मनुष्य कितने अत्याचारी है कि हंसनी को उल्लू की स्त्री बता कर उसके सुपुर्द कर दी। इतना अन्याय? हंस वापिस आया और हंसनी को साथ ले लिया। उस वक्त उल्लू ने हस से कहा कि अब मैं इस गॉव के

सिवाने पर बैठने लगा तो गाँव वालों ने पंचायत की कि गांव के सिवाने पर उल्लू बैठता है। पहले तो उड़ाने की कोशिश की जाय न उड़े तो मार डाला जाए वरना गाँव पर बड़ी विपत्ती आने वाली है। गोया गांव पर आपति का कारण उल्लू का बैठना है। गाँव वाले अपने कर्मों को नहीं देखते। आपत्ति तो बुरे कार्यों का परिणाम है। जो गाँव वाले इतना खुला अन्याय कर सकते है कि हंसनी को उल्लू स्त्री बता दे। ये दिन भर मे न जाने क्या २ पाप करते होंगे और पाप न करे तो आपत्ति आ ही नहीं सकती। मनुष्य को अपने कर्मों के ऊपर ध्यान देना चाहिए दूसरों पर आरोप नहीं लगाना चाहिए।

—?—

कहानी ५३ नं०

" भगवान भक्त के वश में "

नारद जी एक समय भगवान से मिलने चले। रास्ते मे एक धनाढ्य ने उनका बड़ा सत्कार किया। भोजन के बाद जब नारद जी ने उपदेश किया और उसके बाद कहा कि मेरे लायक कोई सेवा हो तो कहो धनाढय ने कहा कि महाराज आपकी कृपा से संसार के सब सुख मिले हुए हैं संतान न होने से इस बात का दुःख है कि यह धन लावारिस मे. राज्य मे चला जयगा और पितृऋण बना रहेगा। आप भगवान के पास जा रहे हैं। मेरे लिए भी भगवान से पूछना करना कि मेरे भाग्य मे सन्तान है या नहीं। किसी पुत्रेष्टि यज्ञ आदि से हो सकती है या नहीं।

नारदजी यह वायदा करके कि वे भगवान से जरूर पूछेंगे चले गये। कुछ अर्से बाद ब्रह्मलोक में पहुँचे और भगवान के दर्शन किये। कुछ दिन ठहरकर जब चलने लगे और सांसारिक लोगों के प्रश्न पूछ चुके तब इस धनाढ्य पुरुष की भी याद आ गई और भगवान से प्रश्न किया कि इस धनाढय के भाग्य में सन्तान है या नहीं। भगवान ने चित्रगुप्त से पूछा उसने कह दिया कि इस धनाढय के भाग्य मे सन्तान नहीं है। कारण पूछने पर चित्रगुप्त नें बता दिया कि पहले जन्म में इस धनाडय ने एक हिरणी का बच्चा मार दिया। हिरनी ने श्राप दे दिया था कि तुम्हारे संतान नहीं होगी। नारदजी ने लौटकर उस धनाढ्य से सब हाल कह दिया। धनाढ्य का यह व्रत था कि साधू महात्मा कोई उस गाँव मे आवे उसे अवश्य भोजन कराया जावे। चार पांच साल के बाद दैवयोग से एक भगवद्भक्त उस गाँव मे आए। धनाढ्य ने अपने स्वभाव के अनुकूल भगत जी को भोजन कराया। भोजन के बाद भक्त ने कहा कि मैंने तुम्हारा भोजन किया है इसके बदले में एक बात जो भी तुम्हारी इच्छा हो मांग लो वह मै दे दूंगा। धनाढ्य ने कहा कि सारे संसार के पदार्थ ईश्वर ने मुझे दे रक्खे हैं। किसी बात की

कमी नहीं है और जिस बात की कमी है उसे आप पूरा नहीं कर सकते। इसलिए मैं कुछ माँगना नहीं चाहता। भक्त ने कहा कि आप बतलाओ तो सही आपको किस बात की इच्छा है मैं उसे पूरा करने की कोशिश करूँगा। धनाढ्य ने कहा कि जिस बात को भगवान ने मना कर दिया उसे आप कैसे पूरा कर सकते हैं मुझे एक पुत्र की इच्छा है। मैंने नारद जी के द्वारा दरयाफ्त करा लिया और उत्तर मिल गया कि पहले जन्म में मैंने हिरनी का बच्चा मार दिया था। हिरनी के श्राप से इस जन्म में मेरे लड़का पैदा नहीं हो सकता। भगवान से कोई बड़ा नहीं है। भक्त ने कहा कि यह बात है तो मैं अपने तप के बल से तुम्हें यह आशीर्वाद देता हूँ कि तुम्हारे चार पुत्र हों। यह कर अन्तर्ध्यान हो गये। इसके एक साल बाद एक पुत्र हुवा इस तरह हर दो साल के बाद पुत्र होता रहा। दस बारह साल बाद नारदजी फिर घूमते हुए उस धनाढ्य के यहाँ आ निकले। चार पुत्र धनाढ्य के यहाँ खेलते देखकर नारदजी ने पूछा कि ये पुत्र किसके हैं? धनाढ्य ने हाथ जोड़ कर कहा कि महाराज ये चारों पुत्र आपके ही हैं। नारदजी को विश्वास नहीं आया कि सच बताओ वास्तव में पुत्र किसके हैं धनाढ्य ने फिर यही उत्तर दिया कि महाराज आपके बाद एक भक्त आ निकले मैंने उनकी सेवा की। उन्होंने वर माँगने के लिए कहा। मैंने कहा कि जिस बात की मुझे इच्छा है उसे आप पूरा नहीं कर सकते बाकी सारे पदार्थ भगवान के दिये हुये मौजूद हैं। भक्त ने कहा कि ऐसा कौनसा पदार्थ है जिसे मैं नहीं दे सकता। मैंने कहा कि मेरे संतान नहीं है जिसे आप नहीं दे सकते क्यों कि भगवान से मैंने पुछवा लिया है। इस प्रकार उन्होंने एक के बदले में चार पुत्र होने का आशीर्वाद दे दिया और अन्तर्ध्यान हो गये। इसके बाद आप की कृपा से ये चार पुत्र हो गये हैं। यह जानकर नारदजी को बड़ा दुःख हुआ कि भगवान् मुझे दुनियाँ के सामने झूठा बनाना चाहते हैं और उसी वक्त क्रोध में भरकर भगवान् के पास चले गये।

भगवान दोपहर के वक्त आराम कर रहे थे। लक्ष्मीजी पैर दबा रही थी। नारद जी की खबर सुनते ही भगवान प्रसन्न हो गये और उनको अपने आराम के कमरे में बुला लिया। नारद जी क्रोध से लाल हो रहे थे। देखते ही भगवान से कहा कि यह बात तो बड़ी बुरी है जो आप मुझे मृत्यु लोक में झूठा बतलाना चाहते हैं। जिस धनाढ्य के लिए आपने कहा था कि इसके संतान नहीं होगी और उसे आप लगा हुआ है। उसी के चार लड़के खेलते हुये देखकर आ रहा हूँ। भगवान समझ गये। नारद जी के क्रोध को शान्त करने के लिए लक्ष्मी जी को ठन्डे पानी से नारद जी के पैर धोने की आज्ञा दी बाद को उनको स्नान कराया गया और भोजन से निवृत होने के बाद भगवान ने नारद जी से कहा कि इन चार पुत्र होने का कारण शाम को बताऊँगा कि ये चार पुत्र कैसे हो गये आप शान्त हो जाइये। नारदजी को मीठी बातों से शान्त कर दिया। शाम को भगवान् नारद जी को साथ लेकर वायु-सेवन के लिये चल पड़े। थोड़ी दूर चलने के पश्चात् नारद जी को बड़े जोर की भूक लगी और उन्होंने भगवान से कहा कि भूख के मारे चला नहीं जाता। कुछ खाने का प्रबन्ध कीजिएगा। रेगिस्तान

होने की वजह से उस जंगल मे कोई दरख्त भी नहीं था। कुछ दूर पर एक साधु की कुटी नजर आई। भगवान् नारद जी को कुटी पर ले गये। कुटी पर एक साधु तप कर रहे थे। भगवान् ने साधु से कहा कि नारद जी बहुत भूखे है। क्या आप भोजन का प्रबन्ध कर सकते है। साधू अतिथियों को देखकर बहुत ही प्रसन्न हुआ कहा कि महाराज आप ज़रा देर विराजें मै अभी भोजन का प्रबन्ध करता हूँ। साधु के पास भोजन का सब सामान था केवल लकड़ियों की कमी थी। साधु ने पैरों पर पुराने कपड़े को लपेट लिया और घासलेट का तेल डालकर दियासलाई से आग जलाई। साग बनाने के बाद पूरी उतारना शुरू की, इस बीच मे साधु से भोजन की ताकीद की क्यों कि नारद जी भूख से व्याकुल हो रहे थे। साधु कह रहे थे कि महाराज अब पूरी उतरनी शुरू हो गई है भोजन तैयार है। भगवान नारद जी को लेकर कोठरी मे गये तो क्या देखते है कि साधु बड़े प्रसन्न चित्त भगवान का भजन करते हुये पूरी उतार रहे है और पैर चूल्हे मे जल रहा है। भगवान घबरा उठे कि साधु यह क्या कर रहे हो अगर आपके पास लकड़ी नहीं थी तो आपने पैर क्यों जलाया। मुझसे कहते मे लकड़ी का प्रबन्ध करता। साधु ने कहा कि भगवान मेरे सोभाग्य से ही आप अतिथि आ गये है। ऐसे अतिथियों की सेवा के लिए मेरा तन भी चला जाय तो मुझे दुःख न हो। यह तो मामूली पैर जल रहा है जो दो चार महीने मे ठीक हो जाएगा। भगवान ने कहा साधु तुम्हें धन्य है जो अतिथि सत्कार के लिए यह त्याग किया है। तब भगवान ने नारद जी से कहा कि नारद जी, भला बतलाओ तो सही कि ऐसे भक्तों की बात मैं किस तरह काट सकता हूँ। यह आपके प्रश्न का उत्तर देने के लिए मैं आपको साथ ले आया था। इस भक्त ने उस धनाढ्य को चार पुत्र होने का आशीर्वाद दे दिया। हालाँकि धनाढ्य के भाग्य मे सन्तान नहीं थी लेकिन मैं अपने भक्तों की बात नहीं टाल सकता चाहे उसमें मेरा सृष्टि नियम ही क्यों न बिगड़ जाए। भगवान ने नारद से पूछा कि तुम ही कहो, कि जो भक्त इस प्रकार के त्याग कर सकते है क्या उनकी बात टाली जा सकती है! नारद जी भगवान के पैरों पर गिर पड़े और कहने लगे कि आपका कहना सच है "भक्त के वचनों मे भगवान बँधे हुये हैं। भक्त के लिए अपने सृष्टि नियम को भी तोड़ देते है। भगवान ने फौरन भक्त का पैर आग से निकाला और उसे ठीक कर दिया और इस दुःख के लिए भक्त से क्षमा चाही।

सच है भगवान भक्त के वचनों मे बँधे हुये है और उसके कहने को कभी नहीं टालते।

कहानी न० ५८

" अभिमान न करो "

एक राजा बड़े योगी थे और वह पांच हथियार बाँधकर करवे की खिड़की में से रोज निकलते थे और उसके बाद अपने पुरोहित से पूछते कि पुरोहित जी मेरे समान तुमने कोई ऐसे योग के करतब दिखाने वाला देखा है। पुरोहित जी खुशामदी थे वे प्रशन्सा के बतौर कहते कि अन्नदाता मैंने ऐसा कोई मनुष्य नहीं देखा जो ऐसी अद्भुत लीला करके दिखादे। राजा प्रसन्न होकर एक अशर्फी रोज दिया करते थे। राजाओं को बिगाड़ने वाले ऐसे ही खुशामदी लोग होते हैं। दैवयोग से पुरोहित जी को बाहर जाना पड़ा और अपने पुत्र को इस नौकरी पर बोल कर अच्छी तरह समझा गये कि मैं जल्दी ही तीन चार रोज में आ जाऊँगा। तुम सुबह ही राजमहल में पहुँच कर राजा करवे की खिड़की में पाँचों हथियार बाँध कर निकल आवें और कहें कि मेरे समान कोई मनुष्य देखा है। तो यही उत्तर देना कि राजा मैंने ऐसा व्यक्ति न तो कोई देखा है और न हो सकता है एक असर्फी रोज मिलेगी उसे घर ले आना। चार पांच दिन तक तो पुरोहित का पुत्र अपने पिता की आज्ञा पर अपने मन के खिलाफ अमल करता रहा लेकिन लड़के को यह खुशामदी वचन कहते हुये दुःख होता था। वह सोचता था कि संसार में किसी को अभिमान नहीं करना चाहिए क्योंकि प्रभु की सृष्टि ही अद्भुत रचना से भरी हुई है। कोई मनुष्य इस बात का दावा नहीं कर सकता कि इससे आगे कोई तरक्की नहीं हो सकती। उसके पिता को कोई काम लग गया। आने में देर लगी। राजा ने हस्ब मामूल अपने करतब दिखाये और पुरोहित के पुत्र से पूछा कि कहो, मेरे सामान कोई मनुष्य ऐसा देखा जो ऐसे अद्भुत करतब दिखाए। लड़के से आज न रहा गया और उसने कह दिया कि महाराज सन्सार में हर विद्या में एक से एक बढ़कर पाये जाते हैं। आपको इस पर अभिमान न करना चाहिए। खुशामदी लोग खुशामद करके राजाओं की आदत इतनी बिगाड़ देते हैं कि वे सच्ची बात सुन भी नहीं सकते। राजा को पुरोहित के पुत्र की यह बात बहुत बुरी लगी। और इनाम देने के बदले उसे अनादर के साथ महल से निकलवा दिया और कहा कि मुझे जब ही मुंह दिखाना कि जब कोई मुझसे बढ़कर करतब दिखाने वाला मिल जाए। लड़का घर पहुँचा इतने में उसके पिता भी आगये और जब उन्होंने उस रोज की अशरफी उससे तलब की तब उसने सब समाचार सुना दिया। एक अशरफी रोज का घाटा मामूली बात न थी। माता-पिता दोनों रुष्ट हो गये और उसको घर से बाहर निकाल दिया और कहा कि अपना मुंह तब ही दिखाना जब कोई राजा से ज्यादा करतबी मिल जाए। भला सचाई की कदर लालच के सामने कहाँ हो सकती है। लड़का मन मारकर घर से निकल गया। शहर से बाहर एक बाग था। लड़का उसमें बैठ गया और चिन्ता में डूबगया। देखता है कि मालन फूल

तोड़ २ कर डलिया में डाल रही है और डलिया अपने आप मालन के साथ चल रही है। थोड़ी देर में मालन ने माली को आवाज दी कि पानी का धोरा टूट गया है तुम आकर बन्द कर जाओ। माली ने कहा कि मुझे फुरसत नहीं है तुम्हीं धोरा बन्द करदो। मालन ने भी फुरसत न होने का कारण बताया इस पर क्रोध मे आकर माली ने अपने लड़के की गरदन काटकर उस धोरे पर रखदी पानी बहना बन्द हो गया जब शाम हो गई तो तब उसने गरदन उठाकर उसके धड़ पर रखदी। लड़का जिन्दा हो गया और तीनों घर को रवाना हो गये। उस वक्त पुरोहित के लड़के ने सोचा कि यहां जरूर कोई जादू है और रहकर देखना चाहिए कि वास्तव मे बात क्या है। पुरोहित का लड़का भी इसके पीछे हो लिया जब माली मालन ने पूछा कि तुम कौन हो तो लड़के ने जवाब दिया कि मैं अमुक देश के पुरोहित का लड़का हूँ। मां बाप ने मुझे घर से निकाल दिया है। माली उसे अपने घर ले गया और अच्छी तरह रक्खा। माली के एक जवान लड़की थी उनका विचार पुरोहित के लड़के के साथ उसकी शादी करने का हुआ लेकिन कहता कोई नहीं था एक दिन मालिन ने माली से कहा कि लड़की जवान हो गई है। घर में जवान लड़की नहीं रहना चाहिए कहीं वर ढूंढकर दी करदो। तब माली ने कहा कि कर देंगे। मालन ने फिर कहा कि तुम तो बड़े परवाह हो जो बात को टाल देते हो। इस पर माली को गुस्सा आ गया और ने कहा कि कल सुबह रोटी बना देना मैं वर की तलाश मे जाऊंगा रोटी लेकर ली चला तब मालन ने अवाज दी कि एक बात सुनते भी जाओ वह आया तब ोहित के लड़के की तरफ इशारा करके कहा कि लड़का ऐसा सुन्दर होना चाहिये । वह वापिस गया तो फिर बुलाकर कहा कि लड़का ऐसा ही होना चाहिए। इस ार चार पाँच दफे उसे बुलाया। अन्त मे बुलाने पर माली ने बहुत ही झुंझलाकर ा क्या जरूरी बात है फिर मालिन ने यही बात दोहरादी। इस पर माली ने क्रोध आकर धोती व कपड़े फेंक दिये और कहा कि हिन्दू जाति में यह विचार एक ि पुख्ता हो जाते हैं कि फलां लड़के से विवाह किया जावेगा तो लड़की उसी से ाही जाती है। तू पाँच छः दफ़े इसी बात को दोहरा चुकी। अब तो मैं शादी इसी ड़के के साथ करूँगा मालन तो यह बात चाहती ही थी यह सुनकर खुश हो गई। ड़की भी इस बात पर रजामन्द थी। मालिन उसके दिल को टटोल चुकी थी। त्पर्य यह है कि उन दोनों लड़के लड़की का विवाह हो गया। दोनों मिलकर रहने ो लेकिन लड़का चिन्तित रहता था। लड़की ने चिंता का कारण पूछा। लड़के ने ा हाल सुना दिया। तब लड़की ने कहा कि आप चिन्ता न करें और पिता जी से चलने की आज्ञा माँगलें। पहले वह मना करेंगे बाद में आग्रह देखकर इजाजत देंगे और कहेंगे कि जो इच्छा हो सो मांगलो तब तुम कहना कि तीन वचन देदो मैं मांगूं। तीन वचन मिलने पर तुम इस बड़ के वृक्ष को जो जादू से भरा हुआ मांग लेना। बड़ का वृक्ष मिलने पर राजा को वह करतब दिखाया जाएगा जो

वृक्ष माली से मांगा तो उसने बहुत कुछ लालच दिया कि इस वृक्ष के सिवाय चाहे जो मांग लो लेकिन लड़का राजी न हुआ। तीन वचन दे देने के कारण से बड़ का वृक्ष माली को देना पड़ा। रात वो दोनों वड़ के पेड़ पर बैठ गये और उसे हुक्म दिया कि राजा अभिमानी के सहन मे जाकर लग जा। दरख्त उड़ा वह राजा के सहन में जा लगा। सुबह को लड़की ने नटनी और लड़के ने नट का वेश बनाकर शहर मे एलान कर दिया कि हम जादू का तमाशा दिखाएंगे। शहर मे शोहरत मच गई कि नट जादू का तमाशा करने आया है। राजा मंत्रियों सहित तमाशा देखने आया। प्रजा भी भरी हुई थी। नट और नटनी ने पहले ईश - प्रार्थना ऐसी मधुर ध्वनि में गाई कि सब चकित रह गये। इसके बाद राजा से कच्चे सूत की कुकड़ी मॉगी। नट ने सूत का सिरा पकड़ कर कुकड़ी को आसमान की तरफ फैंक दिया और उस कच्चे सूत को पकड़ कर चढ़ने लगा। जब नट आँखों से नजर न आया और बहुत ऊंचाई पर पहुंच गया तब नटनी दौड़कर राजा के पास आई और कहा कि आसमान में मेरे पति और दैत्यों में लड़ाई हो गई है आप उनकी मदद के लिये फौज भेज दीजिए। राजा ने यह सोच कर कि तमाशे में ऐसी बात कहा ही करते हैं कुछ उत्तर नहीं दिया नटनी ने कहा कि राजा आप चुप हैं। मेरे पती से युद्ध हो रहा है आप जल्दी मदद भेजिए। इतने मे नट का एक हात कटकर भूमि पर गिर पड़ा। नटनी ने रोना शुरू किया और राजा को जोर से कहा कि जल्दी मदद भेजिए। इतने में दूसरा हात भी कट कर गिर पड़ा। नटनी रोती और कहती रही। राजा ने कहा कि इस कच्चे सूत पर मैं फौज कैसे भेजूं। यह कह ही रहा था कि नट का सब हिस्सा कटकर गिर पड़ा। नटनी ने सब तमाशगिरों के सामने अपने पति की चिता बनाई और शृंगार करके सभा वालों को बतलाया कि यह भारत ही है जहाँ स्त्री पती के साथ सती होती है। दूसरे देशों मे ऐसा उदाहरण नहीं मिलेगा। इसी भारत ने सती सावित्री जैसी पतिव्रता रमणियाँ पैदा की है। मैं भी उन्हीं का अनुकरण करती हूँ। सब सभा के देखते देखते चिता पर बैठ कर पति के साथ सती हो गई राजा व सभासदों को बड़ा दुःख हुआ कि आये तो तमाशा देखने थे यहां दो हत्याएं हो गई। राजा उठने ही को था कि नट दूसरे दरवाजे से ढोल बजाता हुआ निकला और राजा व सभा सदों से पूछा कि मेरी नटनी कहां है नजर नहीं आती। सब ने कह दिया कि वह तुम्हें लेकर तुम्हारे साथ सती हो गई है। नट ने कहा कि मै इस बात पर कैसे विश्वास कर सकता हूँ जब मे खुद जिन्दा हूँ। मेरी नटनी बड़ी सुन्दर है राजा का मन उसे देखकर बिगड़ गया। इसने मेरी नटनी को छिपा दिया। राजा का दरजा प्रजा के लिए पिता का है। राजा भी धर्मात्मा है समझ मे नहीं आता कि नटनी क्यों छिपाई है। तमाशगिरों ने कहा कि उसे नहीं छिपाया गया। हमारे सामने सती हुई है नट ने नटनी को आवाज दी और वह एक मकान में जिसमें कि ताला लगा हुआ था बोली कि मुझे बन्द कर रक्खा है। ताला खोला गया। नटनी बाहर आई सब अचम्भे में पड़ गये कि यह अन्दर कैसे पहुँच गई। अब सब एक स्वर मे कहने लगे कि ऐसा तमाशा हमने आज

तक पहले कभी नहीं देखा था। राजा ने भी बड़ी प्रशंसा की और एक लाख रुपया इनाम की घोषणा की। नट ने असली हाल बतलाया कि वह राजा के पुरोहित का लड़का है। हालाँकि मैंने सत्य बात कही थी कि ईश्वर की सृष्टि विचित्र है किसी बात की सीमा आज तक कोई नहीं पा सका। संसार में आज तक कोई नहीं कह सका। कि सुन्दरता की कोई हद है। इसी तरह बुद्धि की सीमा नहीं है। मैंने राजन आपसे ठीक कहा था कि आप पाँचो हथियार बाँध कर करवों की भिक्कू मे से निकल जाने पर अभिमान न करे कि मुझ से ज्यादह कोई अचम्भे की बात नहीं कर सकता। आप बतलाइए कि करवों की भिक्कू मे से निकलना ज्यादह आश्चर्य की बात है या आपके सामने मेरी स्त्री का मेरे साथ सती होकर जल जाना और फिर आपके सामने जीवित खड़े होना। अभिमान मनुष्य को अपने पथ से गिरा देता है अभिमान न करने से मनुष्य बहुत कुछ उन्नित कर जाते है। यह कहकर एक लाख रुपया लेने से इन्कार कर दिया सिर्फ जितनी अशर्फियों का घाटा उसके पिता को हुआ था वह दिलवाकर एक अशर्फी रोज मिलने की जागीर करवा दी और माता पिता से आशीर्वाद लेकर उस प्रभू के चिन्तन मे तप करने चले गये। भारत ने ही ऐसे सपूत पैदा किये हैं कि सब कुछ शक्ति रखते हुये अभिमान नहीं करते जो मनुष्य अभिमान नहीं करते वही कामयाब होते हैं।

कहानी न० ५५

" मन का गरीबी से सम्बन्ध "

एक साधु को रास्ते मे एक पैसा पड़ा मिल गया। उसने निश्चय किया कि मैं इस पैसे को उस शख्स को दूंगा जो कि संसार में सबसे अधिक गरीब होगा। साधु फिरते ही रहते है। इसी तलाश में रहे कि सबसे अधिक गरीब कौन है। कई वर्ष तक घूमते रहने के बाद भी साधु गरीब के लक्षण न जान सका कि वास्तव में गरीब किसे कहते है। गरीब की तलाश करते २ उसे एक राजा मिला कि जो दूसरे के राज्य पर चढ़ाई करने जा रहा था। फौज साथ थी सारा देश राजा के आधीन था। एक छोटा सा राज्य बचा था उसके ऊपर भी उसने चढ़ाई करदी थी। एक दरख्त पर जिधर होकर राजा निकलने वाला था साधु चढ़ गया। जब राजा का हाथी उस पेड़ के नीचे से निकला। साधु ने वह पैसा राजा के ओहदे में डाल दिया। पैसे को देखकर राजा ने ऊपर को नजर की तो साधु नजर आया। राजा को ख्याल हुआ कि यह पैसा साधु के हात से इत्तफाक से गिर गया है। पैसा उठाकर अपने आदमी को दिया और कहा कि साधु को वापिस दे दो। साधु ने पैसा लेने से इनकार कर दिया और जवाब दिया कि कई साल की तलाश के बाद आज मुझे एक गरीब

आवश्यकता मिला है। मेरी प्रतिज्ञा यह थी कि यह पैसा मैं उस व्यक्ति को दूंगा कि जो संसार में सबसे गरीब हो। राजा ने यह सुनकर कहा कि तुम मुझे गरीब कैसे बतलाते हो। मैं तो बहुत बड़ी सल्तनत का राजा हूं। लाल जवाहरात मेरे खजाने में भरे पड़े हैं। तुम पागलों वाली बात कैसे करते हो कि मुझे गरीब समझ कर पैसा हाथी के ओहदे में डाल दिया। साधु ने उत्तर दिया कि कोई तो चार रोटी मिल जाने पर शान्त हो गये कोई १०-५ रुपये मिलने पर शान्त हो गये। किसी की हवीस लाख दो लाख मिल जाने पर मिट गई लेकिन राजन्! इतना बड़ा राज्य मिल जाने पर भी तेरी हविस नहीं मिटी कि एक छोटे से राज्य पर भी चढ़ाई करदी। लड़ाई में कितने बेगुनाह मनुष्य मारे जाएंगे। इसका कोई पता नहीं। हवीस आज तक किसी की पूरी नहीं हुई। इसलिए तेरी हवीस को देखकर तुझ से ज्यादा और कोई नजर नहीं आया। आज मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो गई कि मैं पैसा सबसे गरीब व्यक्ति मिलने पर दूंगा। इसलिए इस पैसे को ग्रहण कीजिए और मेरे सिर का बोझ उतारिए। राजा इस उत्तर को सुनकर वापिस घर चले गये और बड़े लज्जित हुए कि साधु का कहना ठीक है। किसी की हवीस कभी पूरी नहीं हुई। इतना वैभव मिलने पर भी मुझे दूसरे देश जीतने की इच्छा बनी हुई है। इसलिए सबसे गरीब मैं ही हूँ।

देखो एक गुदड़ी में दो गरीब रात को विश्राम कर सकते हैं किन्तु एक राज्य के अन्दर दो राजा मिलकर नहीं रह सकते। जिसका परिणाम साफ निकल रहा है कि सबसे अधिक गरीब वही है जिसकी आवश्यकताएँ और इच्छायें बढ़ी हुई हों।

कहानी नं० ५६

"संसार में कोई सुखी नहीं"

दो विद्वानों में इस बात पर वाद विवाद हुआ कि संसार में दुःख अधिक है या सुख। एक संसार में दुःख अधिक बतलाता था और अपनी युक्ति के प्रमाण में यह कहता था कि भारत की चालीस करोड़ जनता में से कितनी दुःखी है। जिधर देखो उधर दुखिया ही दुखिया दृष्टिगोचर होते हैं सात लाख गाँवों में जो आदमी बस रहे हैं उनमें से करोड़ों आदमियों को तो एक समय भोजन मिलता है। ऐसे भाग्यशाली मनुष्य तो बहुत कम हैं जिन्हें घी दूध खाने को मिलता हो इसलिए संसार दुःखमय है। दूसरा कहता था कि अगर संसार दुःखमय होता तो बहुत से मनुष्य खुदकशी करके मर गये होते और संसार से इतना मोह नहीं करते। जिन बातों को दुःख माना जाता है वह वास्तव में दुःख नहीं है। संसार में सुख ज्यादा है। देखो गरीब आदमी रात में किस आनन्द से सोते हैं। जिधर देखो उधर सुख ही

दिखायी देता हैं। इसलिए संसार में सुख अधिक हैं दुःख कम है। दुःख अधिक बतलाने वाले ने दूसरे से कहा कि मैं तुम्हारे साथ हुँ कोई ऐसा आदमी तलाश करो कि जो संसार मे वास्तव में सुखी हो। दोनों मनुष्य सुखी आदमी की खोज में निकल पड़े। बारह महीने गुजर गये लेकिन कोई सुखी मनुष्य नजर नहीं आया। जिसको सुखी समझते थे उससे पूछते थे कि भाई तुम तो संसार में सुखी मालूम होते हो। वह यह जवाब देता था कि दूसरे का धन मनुष्यों को ज्यादा ही मालूम होता है। कोई न कोई अपना दुःख खोल कर समझा देते थे। चलते चलते एक बड़े धनाढ्य गृहस्थ के यहां पहुंचे। सात लड़के जो आई० सी० एस० थे बड़े २ ओहदों पर नियुक्त थे। फिर नके बच्चे बच्ची आनन्द से खेल रहे थे। धन धान्य वैभव की कमी न थी। हर प्रकार से वह घर सुखी नजर आ रहा था धनाढ्य ने इन दोनों अतिथियों की सेवा की। भोजन करने जब घर में गये तो स्त्रियां सुन्दर साक्षात देवियां नजर आई। लड़के पिता के भक्त आज्ञाकारी थे। जब धनाढ्य पुरुष ने पूछा कि आप कहां से पधारे तो उन्होंने कहा कि हम दोनों दुनियां मे एक साल से घूम रहे है और इस तलाश मे है कि संसार में कोई अपने आपको सुखी कहने वाला भी मिलता है या नहीं। जिन गृहस्थों को हमने सुखी देखा और उनसे पूछा कि संसार मे आप तो सबसे सुखी है तो उन्होंने कोई न कोई दुःख का कारण बतला ही दिया लेकिन आज वास्तव मे सुखी गृहस्थी मिल गये। संसार का ऐसा कौनसा सुख है जो भगवान ने आपको नहीं दे रक्खा। आप कोई दुःख का बहाना नहीं कर सकते। चलो साल भर मे एक मनुष्य तो सुखी मिला अपना नाम पता डायरी में लिख दीजिए। हम तो संसार मे घूम कर सुखी मनुष्यों की फेहरिस्त बनाना चाहते है कि यह नतीजा निकाले कि सुख ज्यादा हैं या दुःख।

धनी यह बात सुन कर कहने लगा कि आप यह उल्टी बात कैसे कह रहे हैं कि मैं संसार मे सुखी हूँ बल्कि यह कहो कि संसार मे मुझ से ज्यादा दुःखी कोई नहीं होगा। दोनों मनुष्य आश्चर्य मे पड गये और उन्होंने पूछा कि जाहिर में तो आपके दुःख का पता चलता नहीं है आप कृपा करके बतलाइये कि आपको क्या दुःख हैं? तब उसने कहा कि १०-१५ साल हो गये। मेरी धर्म पत्नि सख्त बीमार हुई और उसके बचने की आशा डाक्टरों ने छोड़ दी। स्त्री भी निराश हो गई। उसने अकेले में बुला कर मुझसे कहा कि अब मैं बच नहीं सकती। मेरे इन में से कई बच्चे छोटे है। इनका पालन पोषण माता के बाद होना कठिन है लेकिन इनके कर्मों का फल है तो भी आपसे आखिरी वक्त मैं प्रार्थना करना चाहती हूँ हालाँकि मैं जानती हूँ कि स्त्री के मर जाने पर पुरुष का सब सुख चला जाता है और इसी मजबूरी की वजह से बड़े २ विद्वान भी दूसरी शादी के बुरे परिणामों को जानते हुये भी शादी कर लेते है इसलिए मैं खुशी से कहती हूं कि आप दूसरी शादी कर ले स्त्री के लिए पति से ज्यादा कोई प्यारा नहीं होता। मुझे आपसे भी बच्चों के सिवाय ही प्रेम है इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करती हूं कि आप दूसरी शादी अवश्य कर लेना लेकिन मेरे इन बच्चों को खास तौर पर याद रखना कि ये सब के

करनी यह एक स्वाभाविक बात है। यह बात सुनकर मैंने मेरी धर्मपत्नी को विश्वास दिलाया कि मैं किसी भी हालत में दूसरी शादी न करूंगा। इसका तुम इतमीनान करो। मेरी स्त्री बड़ी बुद्धिमान है। उसने कहा कि आप जो कुछ भी कह रहे हैं वह ठीक ही है। इस वक्त आपके विचार ऐसे ही हैं लेकिन कुछ समय के बाद ये पलट जाएंगे। मैंने ऐसे सैकड़ों व्यक्तियों के उदाहरण देखे हैं कि जिन्होंने करते समय अपनी पत्नियों से यही प्रतिजा की थी कि मैं दूसरी शादी कभी न करूंगा लेकिन बाद मे मजबूरी की हालत में करनी पड़ी। मैं मनुष्यों के स्वभाव से परिचित हूँ। इसलिए मे खुशी से शादी करने की इजाजत दे रही हूं। मैंने बहुत कुछ कसमे खाकर इतमिनान दिलाया लेकिन उसने विश्वास न किया आखीर को मैंने अपनी स्त्री के सामने अपनी जिनेन्द्री काट कर फेंकदी कि अब तो तुमको विश्वास हो जाएगा, मैं दूसरी शादी नहीं करूंगा। ईश्वर की लीला विचित्र है कि वह तिनके मे जान डाल सकता है, मुर्दों को जिन्दा कर सकता है। इन्द्री काटने के बाद मेरी स्त्री की बीमारी कम होनी शुरु हो गई और वह अच्छी हो गई। सब सुखों के होते हुए भी मेरी मूर्खता का दुःख सताता रहता है और संसार के सारे वैभव सुख के बजाए दुख दे रहे हैं। तब भाई यह कहो कि मुझ से ज्यादा दुखी आदमी आपको कोई नहीं मिलेगा। यह सुनकर वह दोनो आदमी निराश हो गये और उन्होंने कहा कि वास्तव में संसार के अन्दर योगियों के सिवाय कोई सुखी नहीं मिल सकता। यह कह कर अपने घर वापिस चले गये।

दुःख सुख तो मन से सम्बन्ध रखता है। मन को योगी ही वश मे कर सकते हैं जब तक मन में इच्छाये हैं तब तक दुःख मौजूद है। क्योंकि इच्छाओं का पारावार नहीं है इसलिये संसार में सुखी नहीं मिलेंगे।

कहानी नं० ५७

"माता का ऋण कभी नहीं उतरता"

एक धन पिछले जन्मों के शुभ कर्मों से बड़ा धर्मात्मा था। दया उसके मन में कूट २ कर भरी हुई थी। जब वह ५-६ वर्ष का था तभी से माता की सेवा तन मन से किया करता था। नित्य सुबह उठते ही सबसे पहले माता के चरणों पर सिर रखता था और जब तक माता सिर पर हाथ फेर कर आशीर्वाद न दे देती तब तक सिर नहीं उठाता था। जब लोगों को मातृभक्ति का पता लगा तो लोग तमाशा देखने के लिए उसके घर आ जाते थे और उसकी माता को कसम दिला देते थे। कि अभी आशीर्वाद न दो कितना ही कोई कहता लड़का पैरों पर से सिर नहीं उठाता था। बाजे रोज आध २ घन्टे तक माता के चरणों पर लेटा रहता लेकिन बिना आशीर्वाद लिए सिर नहीं उठाता था। बच्चे मे विलक्षण गुण देखकर सारे गॉव में मशहूर हो

गया कि रामधन वास्तव मे माता का भक्त है। माता को कभी कोई कष्ट हो जाता तो ईश्वर से उसके दूर करने की प्रार्थना मे दो घन्टे लगा देता था और खाट पर पड़ जाती तो जब तक माता खाट से नहीं उठती तब तक खाट के पाये से लगा बैठा रहता और मक्खी आदि उड़ाया करता। सब लोग उस मातृ भक्ति को देखकर आश्चर्य मे पड़ गये और उसकी इन बातों से रामधन की बहुत तारीफ करने लगे। लड़का भी ८-१० साल का हो गया स्कुल मे लड़के का उपनाम मातृभक्त पड़ गया। रामधन की माता ने सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि मेरे बच्चे मे माता की सेवा का अभिमान पैदा न हो जाए। उसको शिक्षा देने के लिये रात को अपने पास पलंग पर सोने को कहा। जाड़ों का मौसम था। काफी ठंड पड़ रही थी। जब बच्चा भर नींद सो गया माता ने उठाया कि बेटा मुझे प्यास लग रही है। रामधन ने गिलास में पानी लाकर दे दिया आध घन्टे के बाद फिर उठाया कि बेटा प्यास लग रही है। रामधन जाड़े में उठते हुये कुछ हिचकिचाया जरूर लेकिन कुछ न कह कर फिर पानी ला दिया। बच्चों को नींद ज्यादा आया करती है रामधन फौरन आकर सो जाता और उसकी माता इसी तरह से आध आध घन्टे के अन्तर पर पानी का बहाना करके कच्ची नींद में जगा दिया करती। दिक होकर रामधन ने एक दफे कहा कि माता जी आज आपको क्या हो गया जो प्यास ही नहीं बुझती। मुझे तो आपने दिक कर लिया सोने ही नहीं देती। माता ने प्यार से समझा दिया कि बेटा आज प्यास ज्यादा लग रही है। बच्चा पानी पिलाकर फिर सो गया। बारह बजे बाद रामधन को फिर उठाया। जाड़े के मौसम मे बच्चे लिबास को छोड़ना पसन्द नहीं करते। रामधन को उस वक्त उठना बड़ा ही बुरा लगा। बिना बोले गुस्से मे पानी लाकर दे दिया। माता ने गिलास पकड़ते हुये जान बूझ कर थोड़ा सा पानी रामधन के बिस्तरे पर डाल दिया। भला जाड़े में रामधन गीले बिस्तरे पर कैसे सोवे इस खयाल ने उसके दिमाग पर परदा डाल दिया गुस्से में पहले ही था। नाराज होकर बोला कि माता जी आज आपको क्या हो गया दीखता नहीं. क्या आँखे नहीं रही अब मैं कहाँ सोऊंगा बिस्तरे पर तो आपने पानी डाल दिया आधीरात गुजर चुकी ठंड मे आठ दस दफे तो उठा चुकी सोने तक देती नहीं और बिस्तरा गीला और कर दिया लड़के को नाराज देखते हुये फौरन छाती से लगा लिया कि बेटा मैं जान बूझ कर तुमको आज जगा रही हूं और बिस्तरा भी जान बूझ कर गीला किया है। तुम्हारी बड़ी प्रशंसा हो रही है कि तुम माता के बड़े भक्त हो और बड़ी सेवा करते हो प्रशंसा मनुष्य में अभिमान पैदा कर देती है और अभिमान बुराइयों की जड़ है। माता का ऋण कभी नहीं उतरता। देखो जब तुम छोटे थे रात में बिस्तरे में पेशाब कर देते थे। मैं गीले मे पड़ी रहती और तुम्हे सूखे मे सुलाती थी जब कभी बीमार हो जाते और रोते तो रात भर लिए खड़ी रहती थी। बरसों इस तरह से काटे तुम एक रात में ही दिक हो गये कि बुरा भला कहने को तैयार हो। मैं कभी तुम्हारे पेशाब करने पर न चिढ़ी और न रात भर लिये हुये खड़े रहने मे।

और न तुम माना माता का ऋण कभी औलाद नहीं उतार सकती। तुमको कहीं यह अभिमान नहीं हो जाए कि मैं माता की बड़ी सेवा करता हूँ। इस शिक्षा से तुम्हें समझाया है। बेटा, माता का ऋण तमाम उमर भर सेवा करने पर भी नहीं उतरता माता बच्चे को किस प्रेम से पालती है कितने देवी देवता मनाती है यह सब जानते है।

आज कल के पुत्र इससे शिक्षा लें कि जो माता की सेवा तो दरकिनार, हँसकर बात भी नहीं करते। जो माता का आशीर्वाद लेगा वह हमेशा सुखी रहेगा।

कहानी नं० ४८

" ईश्वर विश्वास पर निर्भर है "

रामपुर छोटा सा गाँव था वहां से दो मील के फासिले पर प्रकाशपुर ग्राम मे एक छोटी सी पाठशाला थी। रास्ते मे छोटी सी डुंगरी आती थी ६-७ बच्चे रामपुर से पाठशाला मे पढ़ने जाया करते थे। इन लड़कों मे रामानन्द लड़का उम्र ७-८ साल एक सुकन्या विधवा का जो कि निर्धन थी पुत्र था। वह भी पाठशाला मे पढ़ने जाया करता था दूसरे बच्चों के माता पिता मौजूद थे और उनकी आर्थिक अवस्था भी ठीक थी लेकिन यह सुकन्या विधवा मजदूरी करके अपना जीवन निर्वाह करती थी। गावों मे मजदूरी बहुत कम मिलती है। इसकी मजदूरी की औसत तीन चार पैसो से कभी अधिक नहीं पड़ी इस मजदूरी पर उसका व रामानंद का गुजर होता था कपड़ा भी उसी मे था। जब कभी पाठशाला मे छुट्टी देर से होती तो जिन बच्चों के पिता मौजूद थे। उनके पिता या नौकर डुंगरी पर बच्चों को लेने के लिए चले जाते थे। रामानन्द को लेने कोई नहीं जाता। जब वह अपनी मा से इस बात की शिकायत करता कि सब बच्चों को लेने डुंगरी पर कोई न कोई पहुँच जाते हैं। मै अकेला आता हूँ। रस्ते मे मुझे डर लगता है। तुम लेने आया करो। उसकी माँ प्यार से समझा देती कि बेटा अगर मैं तुम्हें लेने जाया करूँ तो मजदूरी मे घाटा पड़ जावे और फिर रोटी भी खाने को नहीं मिलेगी क्यों कि पीसना पीसकर मैं गुजर करती हूं। गावों में और तो कोई मजदूरी है नहीं इसलिए तुम अकेले ही आ जाया करो वह लड़के भाग्यवान हैं। जिनके माता पिता मोजूद हैं। अपने कर्म खराब है जिससे पिता का सुख तुम्हें नहीं मिला। एक दिन ज्यादा देर छुट्टी में हो गई बच्चे को रास्ते मे बहुत डर लगा। घर आकर रोने लगा और कहा कि अगर मुझे लेने नहीं आओगी तो मैं अकेला नहीं आ सकता और पढ़ने नहीं जाऊंगा। माता को भी बड़ा दुःख हुआ लेकिन बेचारी गरीबी की वजह से मजबूर थी। उसने रामानन्द को समझाया कि बेटा प्रभु हर समय रक्षा के लिए सबके साथ रहते हैं। जब कभी तुम्हें डर लगा करे कन्हैया भैया के नाम से पुकार लिया करना वह तुम्हारी रक्षा करेंगे मैं तो शाम को

लेने नहीं आ सकती और विद्या नहीं पढ़ोगे तो सुख नहीं मिलेगा। रामानन्द ने अपनी माता से पूछा कि कन्हैया भैया कहां रहते है तुम कहती हो कि साथ रहते हैं लेकिन मुझे तो आज तक कभी नहीं दीखे। माता ने समझा दिया कि बेटा जो शुद्ध हृदय से कन्हैया भैया को याद करते हैं उनको वह दर्शन दे देते हैं। यह सुनकर रामानंद बड़ा खुश हुआ कि जब संसार के रक्षा करने वाले मेरे साथ रहते हैं तो मुझे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं जो आदमी उनके बच्चों को लेने के लिए आते हैं वे मूर्ख हैं। माता ने समझाया कि जिसकी आज्ञा से यह सूर्य और चन्द्रमा प्रकाशित होते हैं जिसकी आज्ञा से यह सृष्टि रची गई है। जो सारे संसार का पालन पोषण करने हारा है उसको याद करने से तेरा सब डर जाता रहेगा।

दो चार दिन बाद पाठशाला मे छुट्टी को देर हो गई और सब बच्चों के पिता या नौकर सवारी लेकर पहुंच गये। रामानन्द अकेला रह गया उसको डूंगरी मे डर लगा उसने कन्हैया भैय्या नामको पुकारना शुरू किया। थोड़ी देर तक जब कोई नहीं आया तो रामानन्द रोने लगा कि मेरी माता मुझसे झूठ बात नहीं कह सकती है? कन्हैया भैय्या आप क्यों नहीं आते क्या मुझसे नाराज हो। उस बच्चे के आर्तनाद को सुनकर भगवान छोटे बच्चे के रूप में प्रकट हुए और रामानन्द को समझाया कि तुम डरो मत मैं तुम्हें रोज तुम्हारे घर पहुचा आया करूंगा। रामानन्द उस लडके के साथ हो लिया और वह घर तक पहुंचा कर चला गया। उसकी माता ने पूछा आज रात ज्यादा हो गई क्या बात है तो उसने कहा कि कन्हैया भैय्या ने आने में बडी देर लगाई पहले मैं बहुत चिल्लाया और आवाज दी जब नहीं आया तो रोने लगा और कन्हैया भैय्या को आवाज देने लगा। इतने मे एक लड़का आया और मुझे यहां पहुँचा गया। माँ समझी कि किसी राहगीर ने इसे यहां तक पहुंचा दिया है। अब जब कभी रामानंद को डर लगता और कन्हैया भैय्या को आवाज देता तो एक लड़का आता और घर तक पहुंचा देता था।

१५ -- २० दिन बाद गुरुजी ने यज्ञ करने का निश्चय किया और सब लड़कों से कहा कि भाई कल यज्ञ किया जाएगा यज्ञ के साथ ब्राह्मण भोजन भी होगा। इसलिए सब लड़के घी और दूध लावें अगले दिन रामानन्द ने अपनी माँ से घी दूध मांगा। उसकी माँ ने कहा कि कल तो बेटा पिसाई में भी दो पैसे मिले है जिसमे खाने को भी कमी रह गई। मैं तुम्हे घी दूध कहां से दूं। गुरूजी से हाथ जोडकर अपनी निर्धनता का हाल कह देना फिर वह तुमसे कुछ न कहेंगे। लड़के ने कहा कि सब लडके अपनी हैसियत के अनुसार घी दूध ले जाएंगे। मैं ही ऐसा लडका हूं जो गुरूजी के लिए कुछ न ले जा सकूंगा। ऐसा कहकर रोने लगा और जिद पकड गया कि पाव भर दूध तो ले ही जाऊंगा। जब बच्चा मचल गया तो माता ने बच्चे को एक छोटी सी घन्टी दी और कहा कि कन्हैया भैय्या से इसमें माँग कर दूध ले जाना मेरे पास तो इस

वक्त देने को एक पैसा भी नहीं है। रामानन्द डूंगरी पर पहुँचकर कन्हैया भैय्या को आवाज देने लगे जब कोई न आया तो रोने लगा कि आज भैय्या कहाँ चले गये। मैं गुरूजी को क्या मुंह दिखलाऊंगा। इतने में कन्हैया भैय्या दौड़ते हुये आये और पूछा कि आज कैसे दिन में बुलाया है तुम तो रात में डरते थे। रामानन्द ने गुरूजी के पास का ज़िक्र और अपनी माता के द्वारा पाव भर दूध भी न दिये जाने का जिक्र किया। माता ने कहा है कि तुम्हारे कन्हैया भैय्या ही पाव भर दूध ला देंगे इसलिए मैं तुमको बुला रहा था। कन्हैया भैय्या ने घण्टी ली और उसमें पाव भर दूध ला दिया। रामानन्द दूध लेकर बहुत खुश हुआ और खुशी २ गुरुजी के घर जा पहुँचा देखता क्या है कि कोई लड़का घरे में दूध लिए बैठा है कोई ५४ सेर घी लिए बैठा है। गुरुजी ने सामान लेने के लिए भण्डारी नियत कर दिया था। भंडारी पहले उन्हीं लोगों की चीजें ले रहा था जो ज्यादा लाये थे। रामानंद गरीब का पाव भर दूध लेने का मौका ही न आया वह बार बार भन्डारी के सामने घन्टी को करता कि मेरे दूध को भी ले लिया जाय लेकिन ज्यादा सामान के सामने उसके पाव भर दूध की पूछ न हुई रामानन्द ने फिर जब दूध की घन्टी सामने की तो भंडारी ने झिड़क दिया कि जरा सा दूध तो लेकर चला है बार २ सामने कर देता है। पहले उन आदमियों का सामान लिया जावेगा तो ज्यादा तादाद में लाये हैं। रामानन्द मन मारकर बैठ गया और थोड़ी देर बाद गुरूजी के सम्मुख घंटी रखकर और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और कहा कि मैं निर्धन ब्राह्मणी का पुत्र हूँ। मेरी माँ के पास एक पैसा भी न निकला। उसने कहा कि कन्हैया भैय्या ने पाव भर दूध मुझे दे दिया। बहुत देर तक भंडारी के सामने दूध लिए खड़ा रहा जो लोग ज्यादा सामान लाये हैं भण्डारी जी उन्हीं का सामान ले रहे हैं मुझ गरीब का नहीं लेते इस पर गुरुजी ने एक लड़का साथ कर दिया। लड़के ने जाकर भण्डारी से कहा कि इसका दूध ले लो। भण्डारी ने वह दूध कढ़ाई में डाला कढ़ाई भर गया लेकिन घण्टी का दूध खाली न हुआ। जब कढ़ाई पर कढ़ाई भरने लगे और घण्टी का थाह नहीं आया तो भण्डारी को आश्चर्य हुआ कि घण्टी में क्या जादू भर गया है कि इसका दूध ही खाली नहीं होता। भण्डारी रामानन्द को साथ लेकर गुरूजी के पास गया और यह जाकर सब हाल सुनाया कि महाराज इस घन्टी में न मालूम क्या जादू भरा हुआ है कि कढ़ाई पर कढ़ाई भरते जाते हैं लेकिन घन्टी में पाव भर दूध भरा रहता है। गुरूजी को यकीन नहीं आया। अपने सामने एक कढ़ाई में दूध भराया तो कढ़ाई भर गया लेकिन घन्टी का दूध खाली न हुआ। जब कई कढ़ाई भर गये और घण्टी खाली न हुई तो गुरूजी भी आश्चर्य में भर गये। गुरूजी ने रामानंद से पूछा कि बेटा यह दूध कहाँ से लाए तो उसने सारा किस्सा बयान कर दिया गुरूजी ने कहा कि बेटा क्या कन्हैया भैया को भी तुम हमें भी दिखा सकते हो। उसने कहा चलिए अभी कन्हैया भैया को बुला दूंगा। गुरू जी और सब लोग साथ हो लिए रामानन्द ने डूंगरी पर दबाकर कन्हैया भैया को आवाज देना शुरु की। आवाज सुनकर कन्हैया भैया भागते हुये आ गये और रामानन्द से पूछा कि अब कैसे लौट आये। रामानन्द ने कहा कि गुरू जी

देख लीजिए कन्हैया भैया आ गये। गुरूजी ने कहा कि हमें तो नहीं दिखाई देते। रामानन्द ने कहा कि मेरे सामने खड़े हुये है और बातें कर रहे हैं आप कहते है कि नहीं दीखते। गुरू जी ने कहा कि बेटा हमारी भी सिफारिश करदो कि कन्हैया भैया हमको भी दर्शन दें। रामानन्द ने कहा कि कन्हैया भैया हमारे गुरूजी को भी दर्शन दीजिएगा कन्हैया भैया ने कहा कि मेरे दर्शन उन्ही जीवों को होते है जिनके हृदय पवित्र होते है और सारे संसार के पदार्थों से मन हटाकर मेरे मे लगाते है। रामानन्द रोने लगा और कहने लगा कि भैय्या मेरे गुरू को तो अवश्य दर्शन दे दो। बच्चे की हट पर भगवान ने चतुर्भुज रूप में सबको दर्शन दिया। भगवान के तेज के आगे सबकी आँखें बन्द हो गई फिर रामानन्द की प्रार्थना पर भगवान ने सबको दिव्य दृष्टि दी और सब को भगवान के दर्शन हुए। भगवान ने प्रसन्न होकर रामानन्द व उसकी माता के साथ सबको ब्रह्म लोक पहुंचा दिया।

वास्तव मे जो सच्चे हृदय से भगवान पर विश्वास करके जो उससे माँगते है भगवान् उसको अवश्य पूरा करते हैं।

—०—

कहानी नं० ५९

"नेक कमाई ही फलती है"

जमुनाप्रसाद जो फारसी के विद्वान थे, उनके चार पांच बच्चे थे। नौकरी छूट चुकी थी। आर्थिक अवस्था खराब हो गई। स्त्री रोज ताकीद करती कि रोजगार की तलाश की जाए। एक रोज़ तंग होकर घर से चल दिए और अपनी स्त्री को समझा गये कि नौकरी लगते ही खर्च भेजूंगा दो, तीन महीने जैसे हो उधार लेकर काम चलाना। देहली पहुंच कर बादशाह के दरबार मे दरख़्वास्त दी। उस जमाने में फ़ारसी की कदर थी। बादशाह ने यह सोच कर कि यह फारसी का विद्वान है। शाहजादे को पढ़ाने के लिए रखलिया और कहदिया कि काम देख कर नौकरी दी जावेगी। जमुना प्रशाद को रोटी कपड़ा बादशाह के यहाँ से मिल जाता था। उसने पढ़ाना शुरू कर दिया।

तीन चार महीने पश्चात जमुना प्रशाद को कुछ सौदागर बाजार में मिले। उसने उनका पता पूछा तो उन्होंने बृजनगर जहाँ का जमुना प्रशाद था बतलाया और कहा कि हम परसों यहां से रवाना हो जाएंगे अगर तुमको घर कुछ भेजना हो तो मेरे साथ भेज देना। जमुना प्रशाद ने कहा कि घर खर्च भेजूंगा उसे लेते जाना। अगले दिन बादशाह से खर्च मांगा कि अब तक की तनख्वाह मिल जानी चाहिए मेरे घर जाने

वाले सौदागर इत्तफाक से मिल गये हैं उनके साथ भेज दूं। बादशाह ने चार माह के पाँच रुपये लाकर दे दिए। जमुना प्रशाद बादशाह से कुछ न कह सके लेकिन दिल मे बड़े दुखी हुये कि किस मुंह से ५) चार माह के बाद भेजूं। स्त्री क्या कहेगी। फिर तकदीर पर भरोसा करके ५) सौदागर को दे दिये और कहा कि मेरी स्त्री को समझा देना कि बादशाह से तनख्वाह बढ़ाने को कहूंगा। अभी तो चार माह के ५) तनख्वाह दी है अगर तनुख्वाह न बढ़ाई तो दूसरी जगह नौकरी की तलाश करूंगा। मुझे खुद ५) रु० भेजते हुए शर्म आ रही है लेकिन क्या करूं सब तकदीर के खेल हैं। बादशाह से ज्यादा कह भी नही सकता कि तनख्वाह कम है सौदागर ने भी दो चार सुना दी कि भले मनुष्य नौकरी करते समय तनुख्वाह तो तय कर लेता १।) महीने में अपने बच्चों का पेट कैसे भरेगा। बेचारा शर्मिन्दा होकर चुप रहा कोई जवाब नहीं दिया।

सौदागर को भी इस बात का खयाल रहा कि बेचारे की इतनी गृहस्थी है। राजा भी किसी के दुख को नहीं पहचानते। रास्ते मे एक शहर मे होकर निकला वहाँ लौंग बहुत सस्ती थी। ५) रुपये की लौंग खरीद ली और मन मे विचार कर लिया कि जो फायदा होगा वह जमुना प्रसाद के घर दे दूंगा। १०-१५ दिन के बाद चलते चलते वह एक ऐसी आबादी मे पहुँचा कि जहाँ पर हैजा ज़ोर का फैला हुआ था। १) में एक लौंग मिलती थी। सौदागर ने सब लौंगे बेच दी जिसके चार हजार रुपये के करीब मिल गये जो उसने जमुना प्रशाद के घर पहुँचा दिये। इतनी बड़ी रकम देखकर स्त्री दंग रह गई और ईश्वर की लीला बखानने लगी। बच्चे भी सारे खुश हो गये। जमुना प्रशाद का पता सौदागर ने स्त्री को दे दिया। स्त्री ने इतनी बड़ी रकम भेजने का धन्यवाद दिया और लिखा कि ईश्वर कृपा से काफी रुपया आ गया है। अब आपको इतनी दूर नौकरी करने की कोई आवश्यका नहीं। जब जमुना प्रशाद ने खत पढ़ा तो उसमे लिखा था आ जाइये यहीं तिजारत कर लेंगे और यह जानकर कि सौदागर ने मेरी गरीबी पर रहम फरमाकर किसी काम मे अच्छा मुनाफा हो जाने पर चार हजार रुपया खैरात की तौर पर घर दे दिया है। सौदागर को एक चिट्ठी लिखी कि मैं दान का रुपया अपने बच्चों को नहीं खिला सकता। ५) रु० से जो रुपया आपने ज्यादा दिया है वह सब वापिस लीजिए। स्त्री को लिख दिया कि मैंने सिर्फ ५) रु० भेजे थे बाकी रुपया सौदागर ने अपने खैरात से दिया है उसे वापिस करदो। मैं खैरात का धन अपने बच्चों को नहीं खाने दूंगा। सौदागर ने जवाब दिया कि तुम्हारे पाँच रुपये से ही इतना रुपया लौंग मे फायदा हो गया वही आपके घर दिया है अपने पास से नहीं दिया। इसलिए मैं रुपया वापिस नहीं ले सकता और स्त्री ने भी जवाब दे दिया कि सौदागर रुपया लेने से इन्कारी है इस पर जमुना प्रशाद ने बादशाह से दरयाफ्त किया कि आपके पाँच रुपये मे क्या करामात थी जो ५) के चार हज़ार हो गये बादशाह ने जमुना प्रशाद से कहा कि भाई मैं राज्य के खजाने से कोई सम्बन्ध नहीं

रखता। मैं सरकारी खजाने से एक पाई भी नहीं लेता न किसी राजा को लेना चाहिए। यह धन तो प्रजा का है जो प्रजा के आराम में ही खर्च होना चाहिए। मैं बेगम साहिबा व बच्चा मिलकर चटाई बुनते हैं या सिलाई का काम करते हैं। उसकी मज़दूरी से अपना खर्च चलाते हैं। उस नेक कमाई में से मैंने तुमको ४) रुपये दिये थे नेक कमाई कभी पाप के कामों में खर्च नहीं होती। न कोई इस कमाई को पाप में खर्च कर सकता है और नेक कमाई खूब फलती है। इसलिए तुम्हारे भाग का यह रुपया था और तुम्हारे भाग्य ने जोर मारा जिससे इतना रुपया हो गया जमुना प्रशाद ने बादशाह का शुक्रिया अदा किया और इजाजत लेकर घर चला आया और अपने बच्चों के शामिल रहने लगा। दिन पर दिन जमुना प्रशाद मालदार होता चला गया।

कहानी नं० ६०

"मृत्यु की याद पापों से बचाती है"

एक राजा बड़े धर्मात्मा थे उनके राज्य में कोई मनुष्य ऐसा न था जो सन्ध्या, हवन स्वाध्याय न करता हो। सब पुरुष नेक आचरण के थे। पराई स्त्री को माता के समान समझते थे जिस देश का पुरुष समाज व्यभिचारी न हो उस देश की स्त्रियाँ व्यभिचारिणी हो ही नहीं सकती। राजा के गुरु स्वामी आत्मानन्द बड़े तपस्वी व योगीराज थे। रोज़ाना राजा उपदेश लेने माहात्मा के पास जाया करते थे। रोज़ धर्म चर्चा होती थी। एक दिन महात्मा ने कहा कि मृत्यु का भय सब पापों से बचा सकता है। राजा को इस पर यकीन न आया और शंका कर बैठे कि वास्तव में मौत को याद करने वाले मनुष्य क्या पाप नहीं कर सकते। साधू समझ गये कि राजा को इस बात पर विश्वास नहीं आया और बात को टाल दिया।

पाँच छै महीने बाद राजा ने कामवर्धक औषधी तैयार कराई। इसकी खुराक एक रत्ती से भी कम थी। पहिले समय में गुरु का बड़ा आदर किया जाता था। जब दवा बनकर आई तो राजा ने नौकर के हाथ गुरुजी के पास भेज दी। गुरुजी ने उठाकर तीन चार तोले खाली और बाकी दवा वापिस कर दी राजा ने रात में एक रत्ती से भी कम खुराक ली। उसने काम को बड़ी उत्तेजना दी और रात बड़ी बेचैनी से कटी और जब राजा को यह पता चला कि गुरुजी कई तोले दवा खा गये हैं। राजा को बड़ी चिन्ता हुई कि अब गुरुजी का बचना कठिन है और जब गुरुजी की कुटिया पर पहुँचे तो वे समाधि लगाये हुए ईश्वर भजन में मग्न थे। समाधि खुलने पर राजा ने पूछा कि महाराज मैंने एक रत्ती से कम काम वर्धक औषधि का सेवन किया तो मुझे रात भर चैन नहीं पड़ा। आपने कई तोला दवा खा ली लेकिन आप पर कोई भी असर नहीं हुआ। मेरा तो ख्याल था कि गुरुजी का बचना कठिन है। इसका क्या कारण है कि दवा का आप पर कोई असर नहीं

हुआ। गुरुजी हंस पड़े और कहा कि ६ महीने बाद इसका जवाब दूँगा। २०-२० वर्ष के दो नौजवान लड़के जो दुबले पतले हों, राजमहल में रक्खे जावें। स्त्री को छोड़ कर बाकी सारे संसार के सुख उनको दिए जावें। भोजन आदि में किसी बात की कमी नहीं आवे। ६ महीने बाद उनसे दरयाफ्त कर इत्तला दो कि उनकी क्या इच्छा है। राजा ने वैसा ही किया। वह दोनों लड़के खा पीकर तैय्यार हो गये। ६ महीने बाद उनसे पूछा गया कि तुम्हारी क्या इच्छा है तो उन्होंने स्त्री की इच्छा जाहिर की। राजा ने साधू से यह बात जाकर कहदी कि अब दोनों लड़के स्त्री चाँहते है। दोनों खा पी के खूब मोटे ताज़े हो गये हैं आज रात को उन दोनों नोजवानों को आप अपने सामने एक २ तोला काम वर्धक दवा खिला देना और दो गन्धर्वों की सुन्दर १६,१६ वर्ष की युवतियाँ उन लड़कों के पास भेज देना। लेकिन ऐसी मुश्तहरी करा देना कि इन दोनों नौजवानों की जो राज महल में रक्खे गये हैं सुबह आठ बजे देवी के मन्दिर मे भेंट चढ़ाई जावेगी और मुश्तहरी ऐसे तरीके से कराई जावे कि यह बात दोनों लड़को के कानों में भी पड़ जावे। राजमहल के नीचे जब ढोल पीटा गया तो इन दोनों लड़कों ने भी कान लगा कर सुना कि यह ढोल किस बात का पीटा गया है- तब इनके कानों मे यह शब्द पड़े कि जो जो लड़के देवी भेंट के लिए राजमहल में रक्खे गये थे खा पीकर अब हृष्ट पुष्ट हो गये हैं कल सुबह आठ बजे देवी की भेंट के लिए चढ़ाये जायेंगे। यह सुनते ही लड़कों के होश हवास जाते रहे और आपस मे कहने लगे कि हम भी बड़े आश्चर्य में थे कि राजा हमे मुफ्त मे खिला पिला कर मोटा ताजा क्यों बना रहा है। अब पता लगा कि हम तो देवी की भेंट चढ़ाये जाएंगे। जब किसी जानवर की बली चढ़ाई जाती है तो उसे भी खिला पिलाकर मोटा किया जाता है। लड़कों को यकीन होगया कि हम कल अवश्य देवी की भेंट चढ जावेंगे।

शाम हुई एक एक तोला काम वर्धक दवा खिलाई गई दो सुन्दर युवतियाँ राज-महल में रख दी गई। लेकिन उन दोनों लड़कों ने न तो कुछ खाया न उन लड़कियों से बातचीत की और न रुख मिलाया।

सुबह युवतियों ने राजा से कहा कि महाराज यह दोनों युवक नपुन्सक है। इन्होंने तो हमसे आंख से आँख भी न मिलाई बात करना तो दूर किनार है। राजा ने बड़ा आश्चर्य किया और यह सब कहानी गुरूजी को जाकर सुनादी और अपने प्रश्न का उत्तर पूछा कि छै महींने हो गये। अब तो बताइये कि आप पर दवा का असर क्यों नहीं हुआ। मुझे एक रत्ती दवा ने बेचैन कर दिया। साधू ने कहा कि राजन् आपको उत्तर तो मिल गया मुझसे क्यों पूछते हो। राजा ने कहा कि क्या उत्तर मिला। साधू ने कहा कि राजन् तुम मौत से बेखबर हो जभी तुम्हारे ऊपर इस दवा ने असर किया। तुम्हारे सामने इन दोनों नोजवानों को एक एक तोले दवा भी खिला दी रात को सुन्दर युवतियाँ भी भेज दीं। लेकिन उन युवकों ने मौत के भय से उन लड़कियों की तरफ़ देखा तक नहीं हालाँ कि १२ घन्टे जिन्दा रहने का विश्वास था। भला मुझे तो जिन्दगी का भरोसा ही नहीं है पता नहीं कब मौत आ जाए तुम्हारी दवा क्या असर कर सकती है?

देखो पानी के बुलबुलले का अनुमान लगाया जा सकता है कि कितनी देर में नष्ट हो जायगा। दरिया कितनी देर में उतर जायेंगे। संसार के सब पदार्थों का अन्दाजा हो सकता है लेकिन जीवन के बाबत कोई नहीं कह सकता कि कब तक कायम रहेगा। उमर १५० वर्ष तक की हो सकती है लेकिन देखते देखते नौजवान हट्टे कट्टे मिनटों में इस संसार से चले जाते हैं। इस असार संसार में वही लोग भोग, भोग सकते हैं जो मौत को भूले हुये होते हैं। और जिनको मृत्यु की याद रहती है वह साँसारिक भोग नहीं भोग सकते। मेरे सामने हर वक्त मृत्यु खड़ी रहती है। जिस मृत्यु के डर ने उन नौजवानों को कि जिनको १२ घंटे जिन्दा रहने की आशा थी नपुंसक बना दिया फिर जिसके सामने हर वक्त मौत नाचती हो उस पर आपकी दवा का क्या असर हो सकता है। राजन् अगर पापों से बचना चाहते हो तो मृत्यु को हर वक्त याद रक्खें और उन दोनों नौजवानों को छोड़ दो। राजा ने ईश्वर से ध्यान लगा लिया और उन दोनों लड़कों को छोड़ दिया।

कहानी नं० ६१

"पूर्व जन्म का स्मरण"

बागवाला गाँव निज़ामत मनोहरथाना कोटा स्टेट में वाके है। वहां का गंगा-नामी भंगी देन लेन करता था दो भाई थे दो स्त्री थी। गंगा की मृत्यु हो गई पहले जन्म में उसको ढप बजाने का बड़ा शौक था। देवरी ठिकाना सारथल निज़ामत छीपाबड़ोद में चौकीदार के यहां इसने जन्म लिया इस जन्म का नाम बिरमा था दो तीन वर्ष की जब आयु थी तो इसने पहले जन्म की बात कहना शुरु कर दी कि मैं गंगा नामी भंगी बागवाला का हूं सैंकड़ों रुपये का लेन देन करता था कुआ ज़मीन मेरे मौजूद हैं गांव से बाहर पूरब रुवखा मकान मौजूद है बिरमा की माँ छोटे को छोड़ कर मर गई उसके बाप ने बिरमा को पिछले जन्म की बात भूलने के लिये घानी तेली पर बैठा कर उलटी चलाई और जो टोटके गांव वाले करते हैं सब किये लेकिन बिरमा पिछले जन्म की बात न भूला जब बाग वाले गांव के भंगी ने यह खबर सुनी तो वह अपने भाई को देखने देवपुरी पहुंचा। बिरमा का बाप पुलिस का चौकीदार था इस जन्म में उसने बाग वाले भंगी को गाॅव में न घुसने दिया और मारने को खड़ा हो गया इस तरह बिरमा से न मिलने दिया देवरी की पैमाइश हो रही थी यह खबर मुझे मिली मैंने बिरमा को बुला भेजा उसका बयान अपनी डायरी में लिखा जिसमें उसके रिश्तेदारों गांव व मकान के पते व स्त्रियों के रंग रुप, मकान के व जमीन के सब पते लिखे और फिर उसकी जांच करने के लिए मुन्शी जीतसिंह जी इन्सपेक्टर जंगल, डाक्टर श्यामलाल जी जो उस वक्त मनोहर थाने के शफाखाने मे काम कर रहे थे मेरे साथ थे, रात को हम तीनों बाग वाले गांव में ठहरे और पता लगाया कि बिरमा नामक लड़का कभी इस गांव मे आया तो नहीं। सब गांव वालों से जाँच की। इस लड़के को हमने गांव के किसी आदमी से

नहीं मिलने दिया। सुबह को सब गाँव वालों को इकट्ठा किया और गांव के भंगी को जो अच्छे कपड़े व चांदी के कड़े पहने हुये था थोड़े २ फासिले पर बिठा दिया ताकि भंगी से नहीं भिड़े और बीच में भंगी को बिठाया। इसके बाद बिरमा को जो एक मकान में बन्द कर रक्खा था इन्सपेक्टर सा० लेने गये। तब उसने साफ इनकार कर दिया कि न मैं पहचानने लिए आऊं और न मैं पहचान सकता हूं तब मैं गया और समझाया कि अगर नहीं पहचानना था तो छीपाबड़ोद ही इनकार कर देता ताकि हम बीस कोस खुश्की का सफर नहीं करते न तकलीफ पाते। वहाँ तो तेने पहचानने को कह दिया था अब क्यों इनकार करता है तब लड़के ने कहा कि मैं पहचान तो लूं लेकिन यह भगी मुझे पकड़ लेगा और अपने घर ले जाएगा फिर समझाया बड़े समझाने से वह आया। गाँव की कतार लगा कर बैठाई गई थी। मैंने उसे कतारों के बीच में फिराया और कहाँ कि तुम्हारा भाई कौन है। दो तीन चक्कर उस लड़के ने लगाये मैं उसकी सूरत को बड़े ध्यान से देख रहा था। लड़के की बार २ निगाह उस भंगी पर पड़ती और ठहरती लेकिन डर के मारे वह बतलाता नहीं था दूर ले जाकर मैंने पूछा कि तुमने अपना भाई पहचाना तो उसने कहाँ कि पहचान तो लिया यह मुझे पकड़ तो नहीं लेगा। मैंने उसे दिलासा दिलवाया तो उसने कान में कह दिया कि मेरा भाई वह है जो बीच में अच्छे कपड़े व चांदी के कड़े पहने हुवे हैं। सारे गाँव वालों ने मान लिया कि वाकई इसने पहचान लिया। लड़के की उम्र १०-११ साल की हो गई थी। उसके मर जाने पर वर्षा से उसके मकान गिर गये थे मकानों के साव बदल दिये थे लड़के से हमने कहा कि घर बतलावो। सारा गाँव हमारे साथ था। लड़के ने पहले बयान में लिखा दिया था कि मेरे मकान के सामने बड़ व कुए पर पश्चिम की तरफ आम खड़ा है। बड़ के नीचे खड़े होकर इशारा किया कि मेरा घर यह है। मैंने कहा कि तुमने तो पूर्व की तरफ दरवाजे बतलाये थे इसमें उत्तर की तरफ दरवाजे हैं। लड़के ने जवाब दिया कि मेरे मर जाने पर यह दरवाजे फेरे गये हैं। लड़का अपने भाई के सामने बात नहीं करता था। सब गाँव वालों ने उसकी तस्दीक करदी कि गंगा के मर जाने पर घर गिर गया था दुबारा उत्तर रुख में मकान बनाये हैं। इसके बाद हम सब उसको आगे कर के चले उसने दूर से ही कह दिया मेरा कुआँ वह रहा। उसके भाई को दूर बैठा रक्खा था। कुऐ पर पहुंच कर देखा तो पट्टी लगी हुई नहीं थी यहाँ के नीचे चरा रुपये का गडा होना बयान किया था जब उसकी औरत को शनाख्त कराया तो उसने यह हाल कहा कि गंगा के मरने पर पट्टी के नीचे से चरा निकाल कर रुपये निकाल लिये थे। यह बात सच है कि चरे में रुपये भरे हुये थे। कुआं उस वक्त गैर आबाद पड़ा हुआ था। मैंने लडके से पूछा कि पछांह की तरफ ढ़ाना बतलाया है अगर ढाना यहाँ की तरफ होता तो आम का पेड़ रुकावट डालता। लड़के ने कहा कि आम से दक्षिण की तरफ होकर पहले बैल निकलते थे। मेरे घास की ढुकड़ी भी मौके पर मिल गई। मालूम हुआ कि उसकी एक औरत मर चुकी है। दूसरी औरत कुन्डी निज़ामत कुन्जेड़ में नाते चली गई। डाक्टर सा० मनोहर थाना, मैं और जीतसिंह जी छीपाबड़ौद चले आये। फिर मैं डाक्टर ज्ञानेश्वर नाथ जी दोनों कुन्डी और ६-७ औरतों में उसकी औरत

को बैठा दिया। बाद मे उस लड़के को लाये जो दूर बैठा रक्खा था और पूछा कि तुम्हारी औरत कौन है। लड़के ने बहुत कोशिश की लेकिन औरत पहचान ने मे न आई। बहुत देर बाद मैंने कहा कि अगर पहचान ने में नहीं आती तो जाने दो। तब लड़के ने मेरे पास आकर कान मे कहा कि ला० मुझे तो मेरी औरत जो सब से आखीर में बैठी है इशारा कर के कहा कि यह मालूम होती है सिर्फ़ फ़र्क यह है कि उस वक्त इस औरत के चेचक के दाग नहीं थे बाद मे चेचक निकली मालूम होती है। और औरत से पूछा गया तो उसने तसदीक की कि वाकई गंगा के मरने के बाद ही चेचक निकली है। कुए की पट्टी के नीचे चरा रुपये का भरा हुआ गड़ा था जो इसके मरने के बाद हमने निकाल लिया है। मेरे देवर ने शायद इस लिए इन्कार कर दिया कि राज में न फस जावे क्यों कि गड़ा हुआ धन राज का समझा जाता है। भगवान कृष्ण ने जभी गीता में हंसते हुये यह कहा था कि असंख्य जन्म लेते रहने पर भी जीव आत्मा तो अमर है अर्जुन तुम किस माया मोह में फंस गये। बाते तो तुम बड़े विद्वानों की कर रहे हो और अविद्या से यह कह रहे हो कि मेरे पितामह आदि को कैसे मारूं। सब अपने २ कर्म का फल पाने आये हैं। भगवान की कितनी दयालुता है कि वह पिछले जन्म की बात भुला देता है। बच्चा पैदा होते ही स्वप्न मे खिल खिला कर हंसता है हंसता आदमी तभी है जब उसके सामने कोई खुशी की बात याद आती है स्वप्न उन्हीं चीजों का मनुष्य देखता है कि जिन्हें उसने देखा या सुना हो। अब बतलाओ तुरन्त के बच्चे में न तो कोई बात देखी न सुनी न उसके उपर उस वक्त कोई असर पड़ता है। इसका कारण सिवाय इसके कोई नहीं है कि बच्चा पहले जन्म की बात याद करके बच्चा हंसता है मृत्यु के बाद यदि जन्म न होता तो मनुष्य कभी शुभ कर्म नहीं करते। सिर्फ दूसरे जन्म में फल मिलने की आशा से शुभ कर्म किये जाते हैं।

राजाओं ने जेलखाने बनाकर पाप कर्मों का दण्ड इस भाव से दिया कि आगे को जीव पाप नहीं करे और बुरे स्वभाव को भूल जावे। राजा मनुष्य के शरीर को बांध सका है लेकिन मन को नहीं बाँध सकता। तभी तो जेल में कैदियों के जीवन नहीं सुधरते उस भगवान की कृपा समझो कि दूसरे जन्म मे पहले माता पिता भाई स्त्री आदि को भूल जाता है जिसका उदाहरण प्रत्यक्ष मौजूद है, जो मैंने ऊपर दर्ज किया है। बाग वाला सब गांव वालों के सामने इस लड़के को भाई समझकर रोया लेकिन यह विरमा डरता रहा कि वह मुझे पकड़ कर नहीं ले जावे इसका प्रेम कहाँ चला गया। भगवान ने भुला दिया स्त्री दूसरे के नाते जा चुकी थी तो भी पहले पति का बड़े आदर भाव से जिक्र करती थी और उसके चेहरे आदि से पता चलता था कि उसको अपना पति याद कर बड़ा दुख हुआ लेकिन उस लड़के के दिल पर जरा भी असर नहीं हुआ, हो भी कैसे। भगवान ने सारा शरीर ही बदल दिया था। १० वर्ष का बच्चा ५० वर्ष वाली स्त्री को अपनी स्त्री के रुप में कैसे देख सकता था प्रभु तुम्हारी लीला अपार है भगवान न सच कहा है कि मृत्यु तो पुराने कपड़े उतार कर नये कपड़े पहनने के समान है इसका दुःख तो मनुष्य

अविद्या की वजह से भोग रहे हैं। कितने मनुष्य हैं कि जिनके सम्बन्धी न मरे जो संसार में वाकी रहते हैं वे मरने वाले को रोते है और मरने वाला सव को भूल जाता है उसे कोई दुःख नहीं होता।

इस सच्ची कहानी से यह शिक्षा लेनी चाहिये कि हम में से मृत्यु का भय विलकुल निकल जाए ताकि अपना कर्त्तव्य पूरा कर सके।